जुलाई - सितंबर 2023 भाग XXXIV संख्या: 2 ISSN 0971-1856

भारतीय नारियल पत्रिका

सुश्री शोभा करंदलाजे ने नारियल क्षेत्र में कृषि व्यापार एवं निर्यात को बढ़ावा देने हेतु आह्वान किया

विश्व नारियल दिवस 2023

भारतीय नारियल पत्रिका

भाग XXXIV, संख्या : 2
जुलाई - सितंबर 2023
कोची- 11

परामर्श मंडल
मुख्य कार्यपालक अधिकारी
डा. प्रभात कुमार
सदस्य
डा.बी.एन.एस. मूर्ति
संजीव कुमार सिंह
डा. वेंकटेश एन.हुब्बल्ली

संपादक मंडल
सदस्य
आर. मधु
डा.अल्का गुप्ता

मुख्य संपादक
डा. बी.हनुमंते गौडा

संपादक
एस. बीना

उप संपादक
संगीता टी.एस.

संपादन सहयोगी
विन्दु बिजोय प्रभाकरन
डा. सूर्या प्रत्यूष

प्रकाशकः
नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय,
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग,
भारत सरकार)
केरा भवन, कोची - 682 011, भारत
दू. भा. : 0484-2376265, 2377266, 2377267, 2376553.
फैक्स : 91-484-2377902
ग्राम्स : KERABOARD
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

नारियल कृषि एवं उद्योग के विभिन्न पहलुओं पर आधारित लेख, शोध निबन्ध और पत्र इस पत्रिका में प्रकाशन हेतु आमंत्रित किये जाते हैं। सभी स्वीकृत सामग्रियों को मानदेय दिया जाएगा। इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में प्रकट किए गए विचार लेखकों के अपने हैं और बोर्ड उनके लिए उत्तरदायी नहीं है। शुल्क और पत्र अध्यक्ष, नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन, कोची - 682 011 के नाम पर भेज दें।

नारियल विकास बोर्ड

भारत सरकार ने देश में नारियल खेती एवं उद्योग के समन्वित विकास के लिए स्वायत्त निकाय के रूप में नारियल विकास बोर्ड की स्थापना की। बोर्ड, जो 1981 जनवरी 12 को अस्तित्व में आया, भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। इसका मुख्यालय केरल के कोची में है और क्षेत्रीय कार्यालय कर्नाटक के बैंगलूर, तमिलनाडु के चेन्नई, असम के गुवाहटी और बिहार के पटना में हैं। बोर्ड के छह राज्य केन्द्र भी हैं और ये ओड़िशा के भुबनेश्वर, पश्चिम बंगाल के कोलकात्ता, आँध्र प्रदेश के विजयवाड़ा, गुजरात के जूनागढ़, महाराष्ट्र के ठाणे एवं संघशासित क्षेत्र अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के पोर्ट ब्लेयर में स्थित हैं। बोर्ड के प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म नेर्यमंगलम (केरल), वेगिवाड़ा (आँध्र प्रदेश), कोंडागाँव (छत्तीसगढ़), मधेपुरा (बिहार), अभयपुरी (असम), पित्तापल्ली (ओड़िशा), मंड्या (कर्नाटक), पालघर (महाराष्ट्र), धली (तमिलनाडु), साउथ हिच्चाचेरा (त्रिपुरा) तथा फुलिया (पश्चिम बंगाल) में हैं। इसके अलावा बोर्ड का बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र दिल्ली में है। केरल के आलुवा के पास वाष़क्कुलम में बोर्ड ने प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र की स्थापना की है।

बोर्ड के मुख्य प्रकार्य

• नारियल उद्योग के विकास हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों का विपणन सुधारने हेतु उपायों की सिफारिश करना। • नारियल खेती एवं उद्योग में लगे लोगों को तकनीकी सलाह देना। • नारियल खेती के अधीन क्षेत्र विस्तार के लिए वित्तीय एवं अन्य सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के संसाधन के लिए आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अपनाने को प्रोत्साहित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों को प्रोत्साहन मूलक भाव मिलने हेतु उपाय अपनाना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के आयात और निर्यात नियंत्रित करने हेतु उपायों की सिफारिश करना। •नारियल एवं उसके उत्पादों के लिए श्रेणी, विनिर्देश एवं मानक निर्धारित करना। •नारियल का उत्पादन बढ़ाने के लिए उपयुक्त योजनाओं को आर्थिक सहायता देना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के कृषि, प्रौद्योगिकीय, औद्योगिक या आर्थिक अनुसंधानों को सहायता देना, प्रोत्साहन देना, बढ़ावा देना एवं आर्थिक सहायता देना। • केन्द्रीय सरकार तथा बड़े पैमाने में नारियल की खेती वाले राज्यों की सरकारों से विचार विमर्श करके नारियल का उत्पादन बढ़ाने, प्रजातीय गुणवत्ता और उपज सुधारने के लिए उपयुक्त योजनाओं को वित्तीय सहायता देना तथा इसी उद्देश्य के लिए नारियल कृषकों और नारियल उत्पादों के विनिर्माताओं को पुरस्कार और प्रोत्साहन राशि प्रदान करने के लिए योजनाएं बनाना और नारियल एवं नारियल उत्पादों के विपणन के लिए सुविधाएं उपलब्ध कराना। • नारियल एवं उसके उत्पादों के उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन संबंधी आँकड़े एकत्रित करना एवं उन्हें प्रकाशित करना। • नारियल एवं उसके उत्पादों से संबंधित प्रचार कार्य करना एवं पुस्तकें व पत्रिकाएं प्रकाशित करना।

बोर्ड द्वारा 'भारत में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास' परियोजना के अधीन कार्यान्वित विकास कार्यक्रम हैंः रोपण सामग्रियों का उत्पादन व विपणन, नारियल के अधीन क्षेत्र विस्तार, उत्पादकता सुधारने के लिए एकीकृत खेती, प्रौद्योगिकी निदर्शन, बाज़ार संवर्धन और सूचना व सूचना प्रौद्योगिकी।

नारियल प्रौद्योगिकी मिशन के अधीन बोर्ड द्वारा कार्यान्वित कार्यक्रम हैं प्राणी कीटों व रोगों से ग्रस्त नारियल बागानों के प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास, निदर्शन तथा अंगीकरण, प्रसंस्करण, उत्पाद विविधीकरण, बाज़ार अनुसंधान व संवर्धन के लिए प्रौद्योगिकियों का विकास और अंगीकरण।

शुल्क

वार्षिक	40 रु.
एक प्रति	10 रु.
आजीवन (30 वर्ष)	1000 रु.

नारियल विकास बोर्ड द्वारा प्रकाशित तथा सर्वश्री केबीपीएस, काक्कनाट में मुद्रित

इस अंक में

4 संदेश

6 अल्पीनिया 'जंगल किंग' रमणीयता एवं आय के लिए नारियल बागान में एक सजावटी अंतरफसल
के.निहाद, ए.अब्दुल हारिस और रवि भट्ट

9 गुणवत्तायुक्त गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त नारियल की उन्नत किस्में
रंजिनी टी.एन., निरल वी. और षंसुद्दीन के.

14 बस्तर में नारियल के साथ बहु-मंजिल फसल प्रणाली- एक विजय गाथा
बीना सिंह, राजेश पटेल और सुमिता एस.

16 नाविबो का प्रबीउ फार्म, हिच्चाचरा -नारियल की अच्छी गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की माँग की आपूर्ति करते हुए
बी. चिन्नराज

18 भारत में नारियल के लिए अच्छी कृषि पद्धतियाँ : प्रौद्योगिकीय विकल्प, प्रक्षेत्र परिदृश्य एवं रणनितियाँ
सुब्रह्मणियन पी., तंपान सी., जोसफ राजकुमार और रवि भट्ट

30 नारियल बागों में मासिक कार्य

44 समाचार

54 बाज़ार समीक्षा

57 बाज़ार रिपोर्ट

संदेश

प्रिय मित्रों,

विश्वभर के नारियल उत्पादक देशों में 2 सितंबर को विश्व नारियल दिवस मनाया गया। इस वर्ष का विषय था "वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए सुस्थिर नारियल क्षेत्र"। वर्तमान परिस्थिति में यह विषय अत्यंत समीचीन लगता है। किसी भी क्षेत्र को सुस्थिर बनाना हो तो उत्पादकों को उससे लाभान्वित होना चाहिए, प्रस्तुत क्षेत्र हितधारकों को संभावी रोज़गार के साथ साथ उनके आर्थिक विकास के लिए योगदान देने में समर्थ होना चाहिए। जहाँ तक नारियल का सवाल है मार्च 2022 में नारियल के भाव में गिरावट शुरू हुई थी जो तेज़ी से गिरकर इस वर्ष के सबसे कम भाव पर पहुँच गया। प्रमुख नारियल उत्पादक राज्यों में भारत सरकार की मूल्य समर्थन योजना चालू है और नारियल उत्पादक क्षेत्रों में न्यूनतम समर्थन भाव पर प्रापण कार्य चल रहा है जिससे लघु जोत वाले किसानों को थोड़ी राहत मिली। लेकिन उसी समय यह भी चिंता का विषय बनना चाहिए कि न्यूनतम समर्थन भाव पर प्रापण करने से किसानों को मात्र अंतरिम राहत ही प्राप्त हो रही है। भाव में गिरावट के इस परिदृश्य के पीछे का कारण दिखाई नहीं पड़ता है जो इस क्षेत्र के लिए काफी नुकसानदेह है और इसका जल्द से जल्द समाधान निकालना होगा।

नारियल क्षेत्र में भाव में तेज़ उतार-चढ़ाव होता रहता है। अधिकतर किसान लघु और सीमांत श्रेणी के हैं इसलिए नारियल के लिए जो भाव प्राप्त होता है इसका गंभीर प्रभाव किसानों द्वारा फसल के प्रबंधन पर भी पड़ता है। किसान बेहतर भाव मिलने पर पर्याप्त मात्रा में उर्वरक प्रदान करके और कीटों एवं रोगों का प्रबंधन करके फार्म का बेहतर तरीके से देखभाल करने में उत्सुक हो जाते हैं। जब भाव में गिरावट होती है, वे नारियल बागों की ओर उपेक्षा दिखाते हैं जो अंततोगत्वा उत्पादकता कम होने और तद्वारा उपज में कमी का कारण बन जाता है। जब वर्तमान पीढ़ी के लिए इस क्षेत्र को सुस्थिर बनाने की बात आती है, बहुविध चुनौतियों का सामना करना पड़ जाता है और भविष्य की पीढ़ी के लिए सुस्थिरता सुनिश्चित करने हेतु योजना बनाते वक्त एकाग्र चिंतन प्रक्रिया की आवश्यकता होती है।

प्रभावी फसलोत्तर प्रबंधन, प्रसंस्करण और उत्पादों के विपणन हेतु प्रभावी आपूर्ति श्रृंखला के सृजन को अक्सर किसी भी बागवानी उत्पाद के लिए वन साइज़ फिट्स ऑल (सब के लिए एक समान) समाधान के रूप में निर्धारित किया जाता है। भारत में नारियल के प्रसंस्करण और मूल्यवर्धन तेज़ गति से बढ़ रहे हैं। किंतु खोपरा, नारियल तेल और डेसिकेटड नारियल के अतिरिक्त दूसरे नूतन उत्पादों का प्रसंस्करण इक्कीसवीं सदी के प्रारंभ के बाद ही शुरू हुआ। प्रसंस्करण क्षेत्र में स्थिरता लाने और उद्यमियों को अधुनातन प्रौद्योगिकियों, गुणवत्ता एवं पैकेजिंग से सुसज्जित बनाने में ज्यादा समय लगेगा। इसी बीच किफायती भाव मिलने और इस क्षेत्र की सुस्थिरता के लिए नारियल फसल से प्राप्त संभावी अवसरों का भरपूर लाभ उठाया जा सकता है।

लागत में कटौती और उत्पादकता में वृद्धि के ज़रिए नारियल की वैज्ञानिक खेती का प्रबंधन आय में बढ़ोत्तरी करने का एक उपाय है। किसानों को किसान समूहों में संगठित करने से उनका सामूहिक एकीकरण संभव होगा जिसके परिणामस्वरूप अंततः उनकी सौदा-शक्ति बढ़ जाएगी और लागत भी कम हो जाएगी। डाब और परिपक्व नारियल की तुड़ाई एकीकृत करते हुए किसान समूहों द्वारा नारियल की तुड़ाई नियोजित करने से बाज़ार में परिपक्व नारियल या खोपरे की बहुलता से बच सकता है। यही नहीं इससे वर्धित आय भी प्राप्त होगी क्योंकि डाब के लिए अक्सर उच्च भाव प्राप्त होता है। 6-7 महीने की आयु के डाब की तुड़ाई करने से पुष्पक्रम वर्धित संख्या में बनने लगते हैं और इसके फलस्वरूप साल में 12 से भी अधिक गुच्छे निकलेंगे जिससे नारियल की उत्पादकता भी बढ़ जाएगी। उत्पादन के एक हिस्से का उपयोग नीरा उतारने के लिए भी किए जाने से परिपक्व नारियलों का आवक कम हो जाएगा। किसान ग्रूपों और किसान समूहों द्वारा प्रसंस्करण गतिविधियाँ चलाना, कच्ची सामग्रियों की अपूर्ति में किसानों और उद्योग का सहयोग, फार्मों के प्रमाणन के ज़रिए उद्योग से पश्चगामी समर्थन और पता लगाने का क्षमता तंत्र आदि के ज़रिए यह क्षेत्र प्रगतिशील पथ पर अग्रसर होगा।

जैसा कि कहावत है समय और ज्वार किसी का इंतज़ार नहीं करते, इसलिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण होता है कि खेती और मूल्यवर्धन सुस्थिर मार्ग पर आगे बढ़ें जिससे सभी के लिए पौष्टिक आहार सुनिश्चित हो जाए, प्राकृतिक संसाधनों का प्रबंधन हो जाए और पारितंत्र का अनुरक्षण हो जाए ताकि इनसान की वर्तमान और भावी ज़रूरतों को पूरा किया जा सके। यह निस्संदेह हमें आजीविका सुरक्षा और संसाधनों पर निष्पक्ष पहुँच की ओर ले जाएगा।

अध्यक्ष,

संपादक मंडल

डा. प्रभात कुमार ने नारियल विकास बोर्ड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी का कार्यभार ग्रहण किया

डा. प्रभात कुमार ने नारियल विकास बोर्ड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी का अतिरिक्त कार्यभार ग्रहण किया। वर्तमान में वे बागवानी आयुक्त, एकीकृत बागवानी विकास मिशन, कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के पद पर कार्यरत हैं।

श्री रेणुकुमार बी. एच. नाविबो के उपाध्यक्ष चुने गए

बोर्ड की 6 जून 2023 को संपन्न 144 वीं बैठक में बोर्ड सदस्य श्री रेणुकुमार बी.एच. को नारियल विकास बोर्ड के उपाध्यक्ष के रूप में चुना गया। उपाध्यक्ष के रूप में उनकी नियुक्ति की अवधि एक वर्ष है। श्री रेणुकुमार बी.एच. बोर्ड में कर्नाटक के नारियल किसानों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

अल्पीनिया 'जंगल किंग'

रमणीयता एवं आय के लिए नारियल बागान में एक सजावटी अंतरफसल

के.निहाद*, ए.अब्दुल हारिस* और रवि भट्ट**

*आईसीएआर-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम

**आईसीएआर-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़

नारियल (*कोकोस न्यूसिफेरा एल.*) तटीय आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्र की प्रमुख रोपण फसल है जो इस फसल प्रणाली में अन्य अनुकूल उद्योगों को शामिल करने हेतु पर्याप्त गुंजाइश प्रदान करता है। पारंपरिक और कम उपयोगित बहुवर्षीय फूल फसलों के साथ नारियल बागान की सुंदरता बढ़ाना (लैंडस्केपिंग) पर्यावरण-पर्यटन (इको टूरिज़म) को बढ़ावा देने और बागवानी (हॉर्टिकल्चर) थेरपी की दिशा में नई प्रवृत्ति है। ऐसी छाया में उगने वाली फूल फसलों को बाग में शामिल करना मध्यम और बड़े किसानों के लिए बाग की सुंदरता बढ़ाने तथा आय सृजित करने का एक व्यवहार्य विकल्प है क्योंकि इनके लिए कम अनुरक्षण की ज़रूरत पड़ती है और खेती की लागत बहुत कम होती है।

नारियल पारिस्थितिकी तंत्र से संभावित आय सृजित करने में जिंजिबरेल्स वर्ग (अदरक परिवार) के पौधों की पहचान पहले से ही की गई है जिसमें मसाले (अदरक, हल्दी), फल (केला) और सजावटी पौधे (*हेलिकोनिया*) शामिल हैं। अल्पीनिया सजावटी (*अ.पुरपुरेटा*) और औषधीय (*अ.गलांगा*) गुणधर्म वाले अदरक परिवार के पौधों का दूसरा वर्ग है जिसे नारियल बागानों में पेड़ों के नीचे उगाया जा सकता है।

अल्पीनिया परपुरेटा आमतौर पर रेड जिंजर नाम से जाना जाता है जो लाल रंग के विभिन्न वर्णों में पुष्पक्रम उत्पन्न करता है। यह सदाबहार उष्णकटिबंधीय सजावटी पौधा है जिसमें चमकीले रंग के फूल और सफेद अगोचर फूल निकलते हैं। यह 90 सें.मी. से 4.5 मी. की ऊँचाई तक बढ़ता है। रोपण के पाँचवे महीने से इस पर फूल लगते हैं।

किस्में

अल्पीनिया की लोकप्रिय किस्में हैं - जंगल किंग (गहरे लाल गोल आकार का पुष्पक्रम), जंगल क्वीन (हल्का

अल्पीनिया रेड जिंजर किस्म

गुलाबी रंग), किमी (लैवेंडर गुलाबी पुष्पक्रम वाले बौने प्रकार के पौधे), रेड जिंजर (गहरे लाल लंबा पुष्पक्रम), मडिकेरी (अतिव्यापित पत्राभ वाला सफेद पुष्पक्रम)। इनमें से जंगल किंग किस्म को एक व्यावसायिक किस्म के रूप में पहचाना गया है जो नारियल बागानों की प्राकृतिक आवास व्यवस्था में अंतरफसल के रूप में उगाने के लिए उपयुक्त है। यह इसके उत्पादकों और फूल बेचने वालों के बीच लोकप्रिय होता जा रहा है क्योंकि यह फूलदान में अधिक दिनों तक ताज़ा रहता है और इसके फूल की विशेषताएं भी काफी अनूठी होती हैं।

खेतीगत परिस्थितियाँ

रेड जिंजर उष्णकटिबंधीय से उपोष्णकटिबंधीय तक विभिन्न जलवायु परिस्थितियों में उगाया जा सकता है। यह जलनिकासी सुविधायुक्त नम मृदा अधिक पसंद करता है जो जैविकतत्वों से समृद्ध हो। यह पूरी तरह सूर्य प्रकाश मिलने वाले क्षेत्रों में या आंशिक छाया में उगाया जा सकता है। प्रकाश की तीव्रता के अनुसार पौधों का कार्यनिष्पादन हरेक किस्म में अलग अलग होता है। भारतीय कृषि

अल्पीनिया जंगल किंग किस्म की कली

अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में किए गए पायलट अध्ययन से पता चलता है कि अल्पीनिया 'जंगल किंग' एक संभावित किस्म है जिसे नारियल बागान में व्यावसायिक अंतरफसल के रूप में उगाया जा सकता है। तटीय आर्द्र परिस्थितियों में इसमें फूलों की ऋतु दो बार आती है और यह जनवरी से मार्च और अगस्त से दिसंबर तक रिकार्ड किया गया है। उत्पादित पुष्पक्रम में बाज़ार में अधिक पसंद की जाने वाली कई विशेषताएं निहित थीं जैसे कि इसका पुष्पक्रम काफी लंबा होता है (एक मीटर से अधिक लंबाई) और पुष्प शीर्ष गोल और सघन होता है साथ साथ वांछित लंबाई की शूकिका (9 सें.मी. से अधिक) एवं परिधि (16 से.मी. से अधिक) होती है। जब भरपूर सूर्य प्रकाश में उगाया गया तो पत्तियों में क्लोरोफिल विरंजन और परिगलन दर्शित हुआ और उत्पादित पुष्पक्रमों की संख्या भी कम रही। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान में किए गए अध्ययन से पता चला है कि आमतौर पर उगाई जानेवाली रेड जिंजर किस्म पूर्ण सूर्यप्रकाश को पसंद करती है जिसे नारियल बागानों में सजावटी हेज पौधे या सीमावर्ती पौधे (बोर्डर पौध) के रूप में उगाया जा सकता है।

रोपण सामग्री

रोपण के लिए प्रकंदों से विकसित अंकुरों या छोटे पौधों या परिपक्व छद्म तना युक्त प्रकंदों का उपयोग किया जा सकता है। अंकुरों से विकसित पौधों पर फूल निकलने में एक वर्ष से अधिक समय लगता है, जबकि दूसरे में चार से छह महीने के अंदर फूल निकलने लगते हैं।

रोपण

अल्पीनिया प्रकंदों का रोपण 30 से.मी. x 30 से.मी. x 30 से.मी. आकार के गड्ढों में किया जाता है। भारी मानसून के मौसम को छोड़कर बाकी समय रोपण किया जा सकता है। तथापि रोपण का आदर्श समय अगस्त से नवंबर तक है। नारियल पेड़ के थाले के चारों ओर 2 मीटर क्षेत्र छोड़कर और प्रकंदों के बीच 1.25 मी. की दूरी छोड़कर रोपण किया जाता है। गड्ढ़ों में ऊपरी मिट्टी में 250 ग्राम अस्थि चूर्ण और 1 कि. ग्रा. सूखा गोबर मिश्रित करके भर दिया जाता है।

सिंचाई

अल्पीनिया को हमेशा नम मिट्टी की आवश्यकता होती है। गर्मी के दौरान दो दिन में एक बार सिंचाई की आवश्यकता होती है। फरवरी-मार्च के दौरान कयर गूदा कम्पोस्ट (2 कि.ग्रा./गड्ढा) से पलवार लगाकर सिंचाई चार दिनों में एक बार के हिसाब से कम की जा सकती है।

खाद

रोपण के तीसरे महीने से खाद और उर्वरकों का प्रयोग तीन महीनों में एक बार करके किया जाता है। नीम की खली के साथ वर्मीकम्पोस्ट (*यूड्रिलस* प्रजाति के केंचुए का उपयोग करके सूखे नारियल पत्तों को वर्मीकम्पोस्ट में बदला जा सकता है) का प्रयोग (प्रति गुच्छ क्रमशः 100 ग्राम और 200 ग्राम) और छह महीनों में एक बार 1:10 अनुपात में पानी से पतला बनाए गए गाय के गोबर के घोल से पौधों के गड्ढों को शराबोर करने से बढ़िया पुष्पक्रमों का उत्पादन बढ़ जाता है।

कटाई

रोपण के छह से आठ महीने के बाद अल्पीनिया में फूल आना शुरू हो जाता है। आमतौर पर सबेरे 9 बजे से पहले या शाम को 4 बजे के बाद पुष्पक्रम और पत्तियों के साथ जमीनी स्तर से प्रकंद को काटकर फसल की कटाई की जाती है। कटाई के बाद बाहरी पत्तियों को हटा दिया जाता है और सबसे ऊपरी पर्ण फलक (लीफ ब्लेड) से पुष्पक्रम को लपेटा जाता है। फिर लपेटे गए पुष्पक्रमों को विपणन के लिए पैक किया जाता है। 120 से.मी. x 45 से.मी. x 45 से.मी.

श्री विनू अपने नारियल बाग में मुख्य अंतर फसल अल्पीनिया जंगल किंग के बीच

आकार के बक्से के अंदर प्रति बक्सा 42 पुष्पक्रम सात परतों में रखते हुए पुष्पक्रम पैक किए जा सकते हैं।

विपणन

लगभग एक मीटर लंबाई के और सघन शूकिका युक्त पुष्पक्रमों को बिक्री के लिए चुने जाते हैं। छोटे पुष्पक्रमों का उपयोग गुलदस्ते बनाने और टेबल टॉप सजावट जैसे मूल्य वर्धित कार्यों के लिए किया जा सकता है। रोपण के प्रथम वर्ष में ही पौधे में कम से कम 4 से 5 विपणन योग्य पुष्पक्रम उत्पन्न हो जाते हैं। बाद के वर्षों में उसमें प्रति वर्ष प्रति गुच्छ 12 से 15 पुष्पक्रम उत्पन्न होते हैं और 3-4 वर्षों के बाद पुनर्रोपण की आवश्यकता पड़ती है। 'जंगल किंग' पुष्पक्रम फूलदान में 5 से 7 दिनों तक ताज़ा रहता है जबकि 'रेड जिन्जर' 3 से 4 दिनों तक ही फूलदान में ताज़ा रहता है।

तटीय रेतीली मिट्टी वाले नारियल पारिस्थितिकी तंत्र से आय सृजन के लिए अल्पीनिया 'जंगल किंग' - किसान का अनुभव

सीसाइड एग्रि एक्स्पोर्ट केरल के तिरुवनंतपुरम जिले के उपनगरीय इलाके में स्थित एक प्रमुख पुष्प कृषि निर्यात एजेंसी है। कंपनी तीन दशकों से भी अधिक समय से उष्णकटिबंधीय सजावटी फूलों का विपणन कर रही है जो अपने ही नारियल बागानों में खिले फूल होते हैं। फार्म का मालिक श्री विनू एक उत्साही फोटोग्राफर और फूल विक्रेता है जो अपने जुनून से प्रेरित होकर इस पुष्प कृषि व्यवसाय के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए बहुत अधिक यात्रा करते हैं। वे अक्सर अपने उत्पादों में नवीनता और विशिष्टता लाने के लिए प्रयासरत हैं जो मुख्य रूप से मुम्बई, दिल्ली और बेंगलूरु के बाज़ारों में फैले अपने ग्राहकों में हमेशा उत्सुकता पैदा करता है। उनके अनुसार अल्पीनिया नए उभरते उष्णकटिबंधीय फूल है और इसकी बाज़ार माँग पिछले दशक से बढ़ने लगी है। उन्होंने 2006 के दौरान अपने नारियल बागान में अल्पीनिया की खेती शुरू की थी और 2008 से फूलों का विपणन शुरू किया। इसकी विभिन्न किस्मों में अल्पीनिया 'जंगल किंग' अपने अनूठे रंग, सघनता और लंबे फूलदान जीवन के कारण फूल विक्रेताओं के बीच सबसे पसंदीदा किस्म है। कम प्रबंधन की परिस्थिति में भी यह किस्म नारियल बागानों में अंतरफसल के रूप में तटीय रेतीली दोमट मिट्टी में अच्छी तरह पनपती है। यह प्रति वर्ष प्रति गड्ढ़े से कम से कम 10 से 12 गुणवत्तापूर्ण पुष्पक्रम उत्पादित करता है। भारत के प्रमुख बाज़ारों में इसके पुष्पक्रम का भाव लगभग नब्बे रुपए है। व्यावसायिक खेती के लिए कम से कम 250 से 300 पौधों की आवश्यकता होती है जिसके लिए कम से कम 25 सेंट नारियल बागान की ज़रूरत पड़ती है। किसान का समर्पण और सहभागिता के साथ साथ उभरते बाज़ार रुख के बारे में अद्यतन जानकारी फूलों की खेती के व्यवसाय की सफलता की कुंजी है।

निष्कर्ष

हालाँकि अल्पीनिया की जंगली किस्में हमारे देश में सार्वजनिक हैं, लेकिन फूल विक्रेताओं के बीच अनूठी विशेषताओं वाले वाणिज्यिक कर्तित पुष्प की काफी बड़ी मांग है। अल्पीनिया की किस्मों में एक संभावित किस्म के रूप में 'जंगल किंग' की पहचान की गई है जिसे नारियल पारिस्थितिकी तंत्र के प्राकृतिक क्षेत्र में उगाया जा सकता है। यह ठंडे मौसम (अगस्त से फरवरी तक) के दौरान गुणवत्तापूर्ण पुष्पक्रम उत्पादित करता है। आजकल अल्पीनिया का विपणन महानगरों के घरेलू बाज़ारों में केंद्रित है जिससे उचित लाभ प्राप्त हो रहा है। लगभग एक मीटर लंबाई के और उत्कृष्ट स्पाइक विशेषताओं वाले अल्पीनिया 'जंगल किंग' के एक पुष्पक्रम के लिए करीब साठ रुपए मिलता है और यह मध्यम तथा बड़े किसानों के लिए नारियल बाग की सुंदरता बढ़ाने और आय सृजित करने का व्यवहार्य विकल्प है। ■

गुणवत्तायुक्त गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त नारियल की उन्नत किस्में

रंजिनी टी.एन.[1], निरल वी.[2] और षंसुद्दीन के.[2]

[1]वैज्ञानिक, फसल सुधार प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़, केरल

[2]प्रधान वैज्ञानिक, फसल सुधार प्रभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़, केरल

नारियल ताड़ (*कोकोस न्यूसिफेरा एल*) दुनिया का सर्वाधिक उपयोगी पेड़ है जो मानव जीवन के लिए आवश्यक सभी चीज़ें प्रदान करता है। अतः भारत में नारियल पेड़ को बेहद प्यार से 'कल्पवृक्ष' कहा जाता है जिसका अर्थ है स्वर्ग का पेड़। अधिकांश उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में वाणिज्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पेड़ के रूप में इसकी खेती की जाती है और इससे दुनिया के लिए आर्थिक रूप से मूल्यवान कई उत्पादों का उत्पादन किया जाता है जिनमें खाद्य तेल, खोपरा, ताज़ा पेय, रेशा, कोयला और घरेलू एवं औद्योगिक रूप से उपयोगी तरह तरह के उत्पादें शामिल हैं। ग्रामीण रोज़गार सृजन में इसके योगदान के मद्देनज़र राष्ट्रीय अर्थ व्यवस्था में यह फसल महत्वपूर्ण योगदान देती है।

भारत में नारियल 18 राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों में 2.08 मिलियन हेक्टर क्षेत्र में उगाया जाता है। भारत में नारियल खेती का पारंपरिक क्षेत्र केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, गोवा, आँध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, पुदुच्चेरी, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल, लक्षद्वीप एवं अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह में हैं। भारत 20,736 मिलियन फलों (सीडीबी, 2020-21) के वार्षिक उत्पादन के साथ दुनिया के तीन अग्रणी नारियल उत्पादक देशों में एक है। देश में नारियल के कुल उत्पादन के लगभग 91 प्रतिशत का उपयोग परिपक्व नारियल के रूप में किया जाता है, जिनमें से 30 प्रतिशत का उपयोग घरेलू खपत के लिए और 69 प्रतिशत का उपयोग औद्योगिक प्रयोजनों के लिए होता है। औद्योगिक प्रयोजनों के लिए उपयोगित नारियल का लगभग 80 प्रतिशत खोपरे के रूप में परिवर्तित किया जाता है जिनमें से 31 प्रतिशत को गोल खोपरे के रूप में और 69 प्रतिशत को खाद्य, प्रसाधन एवं अन्य प्रयोजनों के लिए नारियल तेल का उत्पादन करने हेतु पेषण खोपरे के रूप में परिवर्तित किया जाता है। शेष 20 प्रतिशत अन्य औद्योगिक उपयोगों जैसे कि डेसिकेटड नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, नारियल दूध/क्रीम, टुकड़ा/कद्दूकस/सूखा नारियल आदि जैसे मूल्य वर्धित उत्पादों के उत्पादन के लिए (सीएससीपी 2022) किया जाता है।

तिप्तुर लंबी नारियल किस्म का गोल खोपरा

खोपरा, नारियल की सूखी गरी है जो ताज़ा फल से खोपड़ी निकालकर और सुखाकर तैयार किया जाता है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण वाणिज्यिक उत्पाद है जो उत्पादन तथा उपयोग की दृष्टि से नारियल तेल के बाद आता है। भारत में दो प्रकार के खोपरे का उत्पादन किया जाता है एक पेषण खोपरा और दूसरा खाद्य खोपरा। पेषण खोपरा के अंतर्गत कप (आधा कटा) और चिप्स (टुकड़े) खोपरा शामिल होते हैं जिनका उपयोग तेल निकालने के लिए किया जाता है जबकि खाद्य खोपरा/गोल खोपरा आमतौर पर उत्तम किस्म का, अच्छी तरह से सूखी हुई साबुत नारियल गरी है और कई प्रकार के व्यंजनों की तैयारी में इसका उपयोग किया जाता है तथा यह मेवा के रूप में भी खाया

जाता है। इसका उपयोग ज्यादात्तर धार्मिक प्रयोजनों के लिए और पारंपरिक चिकित्सा विधियों में किया जाता है।

हमारे देश में पेषण खोपरे के कुल घरेलू उत्पादन का लगभग 92 प्रतिशत उत्पादन केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में होता है। इनमें से केरल का हिस्सा सबसे अधिक है। वर्ष 2021-22 के दौरान कुल पेषण खोपरा उत्पादन में केरल का हिस्सा 47 प्रतिशत था जबकि तमिलनाडु का हिस्सा 44.6 प्रतिशत और कर्नाटक का हिस्सा 4.5 प्रतिशत था। खाद्य/गोल खोपरे के मामले में कर्नाटक का हिस्सा कुल उत्पादन का 65.5 प्रतिशत था जबकि केरल का हिस्सा 13.5 प्रतिशत तथा आँध्र प्रदेश का हिस्सा 10.3 प्रतिशत था। कर्नाटक में उत्पादित नारियल के लगभग 60 प्रतिशत की खपत कच्चे रूप में की जाती है और 25 प्रतिशत को खाद्य गोल खोपरा एवं डेसिकेटड नारियल पाउडर के रूप में परिवर्तित किया जाता है। देश में कुल पेषण खोपरा उत्पादन में 96 प्रतिशत से अधिक और खाद्य खोपरा उत्पादन में 89.3 प्रतिशत इन तीन प्रमुख उत्पादक राज्यों का योगदान है (सीएसीपी 2022)।

भारत में खाद्य गोल खोपरे के लिए कर्नाटक के तिप्तूर तथा अरसिकेरे तथा केरल का वटकरा सबसे प्रमुख थोक बाज़ार हैं। वटकरा में तैयार किए जाने वाले गोल खोपरे को व्यापार में 'कालिकट गोला' कहा जाता है और इन्हें आकार के अनुसार पांच प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है। कर्नाटक में उत्पादित गोल खोपरे को आकार के आधार पर चार वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है जैसे कि 'मैसूर', 'मद्रास', 'रस' तथा 'बारीक' और अस्वीकृत खाद्य खोपरे को कवथु कहा जाता है। इन ग्रेडों को किसी मापक के आधार पर परिभाषित नहीं किया गया है बल्कि इनका वर्गीकरण केवल आँखों देखी मूल्यांकन पर आधारित है। गोदावरी जिले के गोल खोपरे को मद्रास खोपरा कहा जाता है जो कर्नाटक या वटकरा किस्मों के उतना अच्छा नहीं है। वटकरा और कोषिक्कोट क्षेत्र का गोल खोपरा कर्नाटक के तिप्तूर गोल खोपरे से थोड़ा निम्न स्तर का माना जाता है (अयूब, 2004)।

परंपरागत रूप से खाद्य गोल खोपरा 12 महीने से अधिक आयु के साबुत फल से तैयार किया जाता है। तुड़ाई के तुरंत बाद उन्हें 5-6 सप्ताह के लिए बाग में भंडारित किया जाता है। बाद में फल का आंशिक रूप से छिलका निकाला जाता है और शेड में बांस के ऊँचे मचान पर लगभग 8-12 महीने की अवधि के लिए भंडारित किया जाता है। फल को गर्म हवा प्रवाहित करके भी सुखाया जाता है विशेष रूप से उन फलों को जिनकी तुड़ाई मानसून मौसम के दौरान की जाती है। गर्मी के मौसम में तुड़ाई किए गए फलों को धूप में सुखाकर गोल खोपरा बनाया जाता है। इस अवधि के दौरान नारियल पानी गरी में अवशोषित हो जाता है और गरी धीरे धीरे सूख जाती है तथा खोपड़ी से अपने आप अलग हो जाती है। बाद में छिलका और खोपड़ी निकालकर सूखी गरी को गोलाकार में निकाला जाता है जो अपेक्षाकृत नरम, मीठी और तैलीय होती है तथा इसमें नमी की मात्रा 7 प्रतिशत से कम होती है।

पहले गोल खोपरे की मांग साल में नवंबर से शुरू होकर जनवरी तक सर्दियों के मौसम के दौरान ही होती थी। लेकिन जब से इसका उपयोग मिठाइयों, बेकरी उत्पादों और मिष्ठान्नों की तैयारियों में होने लगा है। हाल के वर्षों में खाद्य गोल खोपरे की मांग दिल्ली, अहमदाबाद, कोलकात्ता, पुणे, राजस्थान, मुंबई, जयपुर, पटना, नागपुर, कट्टक, इंदोर, पुरी, गुवाहटी आदि जैसे उत्तर भारतीय शहरों में भी बढ़ गई है। अतः पारंपरिक और गैर पारंपरिक दोनों क्षेत्रों में गोल खोपरे की लोकप्रियता बढ़ रही है। इस प्रकार हमारे देश में बढ़ते गोल खोपरा बाज़ार पर अपनी जगह बनाने के लिए नारियल उद्यमियों के सामने मार्ग प्रशस्त हो रहा है।

गोल खोपरे की बढ़ती बाज़ार मांग को पूरा करने के लिए देश में गोल खोपरे के उत्पादन हेतु उपयुक्त गुणवत्तापूर्ण नारियल का उत्पादन बढ़ाना आवश्यक है। इस संबंध में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ जो कि भारत की राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणालियों की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण संस्थान है, उपलब्ध जननद्रव्यों, प्राप्तियों तथा संकरों का लगातार मूल्यांकन कर रहा है और ऐसी बेहतर पद्धतियों एवं संकर संयोजनों की पहचान की गई है जो उच्च पैदावार देने वाले तथा गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त है और देश के विभिन्न कृषि पारिस्थितिक क्षेत्रों में खेती के लिए इनका विमोचन किया गया है। उसी प्रकार अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, अरसिकेरे केंद्र ने भी

गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त संकर विकसित किया है। गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त किस्मों के बारे में विस्तृत सूचना नीचे दिया गया है (चौडप्पा एवं अन्य, 2017)।

गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त किस्में

केरा केरलमः यह केरल के पश्चिम तटीय लंबे (डब्ल्यूसीटी) ताड़ों से चुनी गई एक लंबी किस्म है। ताड़ गोलाकार सघन शिखर के साथ मज़बूत होता है और लगभग 75 वर्ष या उससे अधिक अवधि तक आर्थिक रूप से उपज देता है। यह एक उच्च उपज देने वाली, नियमित फलदायी, पर्ण चित्ती रोग के प्रति मध्यम रूप से प्रतिरोधी, नमी के तनाव के प्रति सहनशील और खोपरा एवं तेल उत्पादन के लिए उपयुक्त किस्म है। इस किस्म के फल गोल खोपरा तैयार करने के लिए अत्यधिक उपयुक्त होते हैं, क्योंकि गोल खोपरा उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान इस किस्म में मात्र 9.09 प्रतिशत खराबी ही देखी गई है। फल हरे पीले, मध्यम आकार के तथा अंडाकार के होते हैं जिनमें खोपरा संघटक प्रति फल 176 ग्राम और खोपरा तेल संघटक 68 प्रतिशत होता है। संभावित खोपरा उपज प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 6.56 टन है। बारानी परिस्थितियों में ताड़ आम तौर पर लगभग 6-7 वर्षों में फल देने लगते हैं। तथापि सिंचाई तथा पर्याप्त धूप मिलने की अनुकूल परिस्थितियों में रोपण के चार वर्षों के भीतर जल्दी फूलना रिकार्ड किया गया है। बारानी परिस्थितियों में औसत वार्षिक पैदावार प्रति ताड़ 80 फल है। केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में इसकी खेती की सिफारिश की जाती है।

कल्पतरुः यह लंबी एवं उच्च पैदावार देने वाली किस्म है जो गुणवत्तापूर्ण गोल खोपरा उत्पादन के लिए अत्यधिक उपयुक्त और नमी की कमी का तनाव, मूल तना विगलन एवं पत्ता सड़न रोग के प्रति अपेक्षाकृत सहनशील होती है। यह किस्म कर्नाटक के तिप्तूर लंबे पेड़ों से चुनी गई है। इस किस्म के ताड़ लंबे, गोलाकार शिखर वाले होते हैं और नियमित रूप से फल देते हैं तथा अनुकूल परिस्थितियों में 80 वर्ष की आयु तक आर्थिक रूप से यह लाभदायक होता है। बारानी परिस्थितियों में इस किस्म में फूल निकलने में लगा औसत समय लगभग 6 वर्ष है। इसका फल अंडाकार का होता है और छिलका युक्त फल गोलाकार होता है। इस किस्म का औसतन फल वज़न लगभग 958 ग्राम है, जिसमें खोपरा संघटक प्रति फल 175 ग्राम है और खोपरे में तेल संघटक 67.2 प्रतिशत है। यह किस्म विशेष रूप से गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त है, क्योंकि गोल खोपरा उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान खराब होने का प्रतिशत अन्य विमोचित किस्मों की तुलना में कम (3.92 प्रतिशत) होता है। एक टन खोपरा बनाने के लिए लगभग 5600-6800 फल अपेक्षित हैं। इससे खोपरे की संभावित उपज प्रति वर्ष प्रति टन 4.56 टन है। यह किस्म अपेक्षाकृत सूखा सहनशील है और कर्नाटक, तमिलनाडु एवं केरल के बारानी एवं सिंचित दोनों क्षेत्रों में खेती के लिए उपयुक्त है।

कल्प मित्रः यह एक लंबी, उच्च पैदावार देने वाली, नियमित रूप से फलदायी किस्म है। इंडोनेशिया के जावा लंबे ताड़ों से इसका चयन किया गया है और यह किस्म नमी के तनाव के प्रति सहनशील और खोपरा तथा तेल उत्पादन के लिए उपयुक्त होती है। ये लंबी प्रकृति के ताड़ होते हैं जिनका तना मोटा और शिखर का वितान गोलाकार होता है। इनमें अधिक संख्या में पत्ते होते हैं। ताड़ नियमित रूप से फल देने वाले हैं और बारानी खेती के अंतर्गत बाग में रोपण के 7-8 वर्ष बाद इस पर फूल आना शुरू हो जाता है। इसके फल बड़े और अंडाकार के होते हैं तथा औसत वज़न 1001.19 ग्राम है। इससे प्रति फल औसत 241.14 ग्राम खोपरा (सूखा भ्रूणपोष) प्राप्त किया जा सकता है। खोपरे में तेल संघटक लगभग 66.50 प्रतिशत है। इससे प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 5.41 टन पैदावार प्राप्त हो सकती है।

यह किस्म केरल तथा पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में खेती के लिए उपयुक्त है।

चंद्र कल्पा: यह लक्षद्वीप की देशी नारियल प्रजाति लक्षद्वीप साधारण से चुनी गई किस्म है। वृद्धि की प्रकृति और फल की विशेषताओं की दृष्टि से यह पश्चिम तटीय लंबा समान है। लेकिन इस किस्म के फल अपेक्षाकृत छोटे और कोणीय होते हैं और परिपक्व फलों में तीन उभाड़ प्रकट रूप से दिखाई देते हैं। फल का रंग हरा-पीला से पीला-हरा तक विभिन्न होता है। औसत वार्षिक पैदावार प्रति ताड़ 100 फल है और अनुमानित खोपरा उपज प्रति वर्ष प्रति ताड़ 17 कि.ग्रा. है। फल मध्यम आकार के होते हैं और फल का औसत वज़न 800 ग्राम है। प्रति फल खोपरा संघटक 176 ग्राम और खोपरा तेल संघटक 72 प्रतिशत होता है। एक टन खोपरा बनाने के लिए लगभग 6000 से 7000 फलों की आवश्यकता होती है। इस किस्म के ताड़ नीरा (नारियल पुष्पक्रम का रस) उतारने के लिए भी उपयुक्त हैं जिसकी ज्यों का त्यों खपत की जा सकती है या इसे नारियल शर्करा या गुड़ के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। यह किस्म केरल, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में खेती के लिए उपयुक्त है।

कल्पश्रेष्ठ: यह उच्च पैदावार देने वाला, दोहरा प्रयोजन युक्त संकर है जिसे मलयन पीली बौनी (मादा ताड़) और तिप्तूर लंबी (नर पेड़) किस्म का संकरण करके विकसित किया गया है, जो उत्तम गुणवत्तायुक्त गोल खोपरा उत्पादन के साथ साथ डाब उत्पादन के लिए भी उपयुक्त है। इस किस्म के ताड़ों की वृद्धि तेज़ होती है और ये लंबी प्रकृति के ताड़ हैं। इस किस्म के फल अंडाकार के होते हैं और इसका डाब पानी अच्छी गुणवत्तायुक्त (368 मि.ली.) होती है। छिले फल गोलाकार के होते हैं जिसके प्रति फल से 216 ग्रा. खोपरा प्राप्त होता है। कल्पश्रेष्ठ किस्म के ताड़ नियमित रूप से फलदायी होते हैं और रोपण के 6-7 वर्ष बाद यह फूलता है। तथापि सिंचित परिस्थितियों में ताड़ों के रोपण के 4 वर्ष के भीतर फूल निकलने की उम्मीद की जाती है। सिंचित परिस्थितियों में इस किस्म की औसत वार्षिक पैदावार प्रति वर्ष प्रति ताड़ 167 फल हैं जिसमें अनुमानित वार्षिक उच्च खोपरा उत्पादन प्रति वर्ष प्रति ताड़ 35.9 कि.ग्रा. है (6.28 टन खोपरा/हे.)। कर्नाटक और केरल में इसकी खेती की सिफारिश की जाती है।

चंद्र संकरा: यह संस्थान में विकसित पहला संकर था और वर्ष 1985 में वाणिज्यिक खेती के लिए इसकी सिफारिश की गई थी और यह देश का सबसे लोकप्रिय बौना x लंबा संकर है। यह संकर उत्कृष्ट पश्चिम तटीय लंबे ताड़ों (नर ताड़) के पराग से चावक्काट नारंगी बौने ताड़ों (मादा ताड़) का संकरण करके उत्पादित किया गया है, जो खोपरा तथा डाब उत्पादन के लिए उपयुक्त है। इस किस्म के ताड़ मध्यम लंबी प्रकृति के होते हैं तथा इसके शिखर का वितान गोलाकार होता है। पश्चिम तटीय लंबा पितृ ताड़ की तुलना में ये ताड़ जल्दी फल देने लगते हैं। इसमें भूरे रंग के, मध्यम आकार के फल लगते हैं और प्रति फल खोपरा संघटक 208-225 ग्राम होता है तथा खोपरे में तेल संघटक 64-68 प्रतिशत है। अनुकूल बढ़वार की परिस्थितियों में फूल निकलने में लगने वाला औसत समय लगभग 3-4 वर्ष है और इससे प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 7.74 टन खोपरा और प्रति हेक्टर 2.99 टन तेल की उपज प्राप्त होती है। यह किस्म नमी की कमी के तनाव के प्रति संवेदनशील होती है और सिंचाई तथा अच्छी प्रबंधन परिस्थितियों में बेहतर प्रदर्शन करती है। इसकी केरल, कर्नाटक तथा तमिलनाडु में खेती के लिए सिफारिश की जाती है।

केरा संकरा: यह उच्च पैदावार देने वाली, दोहरा प्रयोजन वाली संकर किस्म है। मादा ताड़ के रूप में पश्चिम तटीय लंबी किस्म और नर ताड़ के रूप में चावक्काट नारंगी बौनी किस्म का संकरण करके इसको विकसित

किया गया है। इस किस्म के ताड़ लंबी प्रकृति के होते हैं और शिखर का वितान गोलाकार होता है। रोपण के 4 वर्ष से इस पर फल लगने लगते हैं। इसके फल भूरे रंग में मध्यम एवं दीर्घाकार के होते हैं और प्रति फल 187 ग्राम खोपरा और खोपरे में 68 प्रतिशत तेल निहित होता है। इस संकर की खेती केरल, कर्नाटक, तटीय महाराष्ट्र और तटीय आँध्र प्रदेश राज्यों में की जा सकती है।

कल्प गंगाः गंगा बोंदम (मादा ताड़) और फिजी लंबा (नर ताड़) का संकरण करके विकसित किया गया यह संकर गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त है। यह मध्यम लंबा ताड़ होता है और इसके शिखर का वितान गोलाकार होता है। इस पर हरे रंग के दीर्घाकार के फल लगते हैं। इन ताड़ों पर फूल निकलने में लगभग 4-5 वर्ष लगते हैं। यह प्रति वर्ष प्रति ताड़ 120 फल और प्रति वर्ष प्रति हेक्टर 3.38 टन खोपरा देता है। कर्नाटक राज्य में इस संकर की खेती की सिफारिश की जाती है।

निष्कर्ष

अधिकांश बौनी नारियल किस्में गोल खोपरा उत्पादन के लिए उपयुक्त नहीं होती है। यही नहीं, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विमोचित कतिपय लंबी किस्में जैसे कि केरा चंद्र, कल्प प्रतिभा, कल्प हरिता और कल्प शताब्दी भी गोल खोपरे के उत्पादन के लिए अनुपयुक्त हैं क्यों कि इसके फल जल्दी अंकुरित होते हैं और जब गोल खोपरे के उत्पादन के लिए फल को 8-12 महीने की लंबी अवधि के लिए भंडारित किया जाता है तो खराब होने की प्रतिशतता अधिक होती है।

देश में नारियल खोपरे का उत्पादन/उत्पादकता बढ़ाने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, विभिन्न राज्य कृषि विश्वविद्यालय, राज्य बागवानी विभाग तथा अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना के अधीन केंद्रों के साथ साथ नारियल विकास बोर्ड द्वारा किसानों एवं गैर सरकारी संगठनों को गोल खोपरा उत्पादन हेतु उपयुक्त उन्नत नारियल किस्मों के गुणवत्तायुक्त पौधों की आपूर्ति की जाती है।

बाज़ार की मांग को पूरा करने और नारियल किसानों को उच्चतम शुद्ध आय सुनिश्चित करने के लिए गोल खोपरे की अधिक उपज देनेवाली उन्नत किस्मों तथा संकरों की खेती करने की सलाह दी जाती है। यही नहीं, इससे नारियल खेती की समग्र लाभदायिकता में सुधार लाने और देश में नारियल खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलेगी। ■

सेवानिवृत्ति

बोर्ड के निदेशक श्री हेमचंद्र 31 जुलाई 2023 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने वर्ष 1988 में बोर्ड में सेवा प्रारंभ की थी। वे बोर्ड के विविध इकाई कार्यालयों में सेवारत रहे। उन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै, मुख्यालय, कोची और क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू में उप निदेशक की हैसियत से कार्य किया है। निदेशक के पद पर पदोन्नत होने के बाद उस हैसियत पर क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरू और मुख्यालय, कोची में सेवा की है। बोर्ड में उनका पूरा कार्यकाल 35 वर्ष तक रहा।

श्री अब्दुल मालेक, सहायक, प्रबीउ फार्म, अभयपुरी 31 जुलाई 2023 को अधिवर्षिता प्राप्ति पर नारियल विकास बोर्ड की सेवाओं से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने लगभग 33 वर्ष बोर्ड में सेवा की।

बस्तर में नारियल के साथ बहु-मंजिल फसल प्रणाली- एक विजय गाथा

श्री ईशांश सिंह राठौड के बाग में बहुमंजिली फसल प्रणाली का दृश्य

बीना सिंह, राजेश पटेल और सुमिता एस.
अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना, एस.जी. कृषि महाविद्यालय और अनुसंधान केंद्र,
इंदिरागांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर

बस्तर पठार के छत्तीसगढ़ राज्य में जगदलपुर क्षेत्र शामिल है जहाँ के अधिकांश ग्रामवासी अपनी आजीविका चलाने के लिए धान, मोटा अनाज, मकई और गौण वन उत्पादों पर निर्भर रहते हैं। प्रारंभ में आदिवासी लोग यह तय नहीं कर पा रहे थे कि अपनी मौजूदा फसल प्रणाली में नई फसल नारियल को शामिल करना है या नहीं। बस्तर के किसान नारियल की खेती करने के इच्छुक नहीं थे क्योंकि नारियल पेड़ फलन की स्थिति तक पहुँचने के लिए 7-10 वर्ष का समय लेता है। अधिकांश किसान आदिवासी हैं जिनकी आर्थिक स्थिति बहुत नाज़ुक थी और अपने बागान से लगातार आय मिलते रहना उनके लिए अनिवार्य था। समय के चलते किसानों ने सीख लिया कि नारियल से नियमित रूप से उपज मिलने तक दूसरी अंतरफसलों से बेहतर उपज और नियमित रूप से आजीविका प्राप्त करने के लिए दो पेड़ों के बीच की रिक्त जगह का कैसे उपयोग किया जा सकता है। प्रारंभ में, नारियल पौधों का रोपण खेतों के मेंडों में करते थे। लेकिन जैसे जैसे नारियल पेड़ों से लाभ मिलने लगे नारियल को अपनी खेती प्रणाली में शामिल करने में रुचि प्रकट होने लगी। अब नारियल पेड़ मेंडों से उनकी खेतीगत ज़मीन पर पहुँच गया है। नारियल में फलन शुरू होने तक आय सृजन में अंतरफसलें सहायक रहीं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना से जुड़े वैज्ञानिकों और अनुसंधान कर्मचारियों के निरंतर प्रयासों के फलस्वरूप नारियल का क्षेत्र विस्तार प्रगति पर है और अधिकाधिक किसान अपनी फसल प्रणाली में नारियल को भी शामिल करने के लिए आगे आ रहे हैं।

श्री ईशांश सिंह राठौड़ बस्तर जिले में बकावंड ब्लोक के निवासी है। वे भविष्य की सोच रखने वाला एक किसान है। उन्होंने अपने बाग में लगभग 2000 नारियल पौधे लगाए हैं जिनके बीच में आम, नींबू, ड्रागन फ्रूट, केला, पपीता, लीची, अनन्नास और स्ट्रॉबेरी जैसी फलदार फसलों और मटर, टमाटर, बैंगन, भिंडी और पत्तेदार सब्जियों जैसी मौसमी सब्जी फसलों की खेती की जा रही है।

उनके पूर्वज भी खेती में लगे हुए थे। वे एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से इंजीनियरी उपाधि हासिल करने के बाद किसी बहुराष्ट्रीय कंपनी में नौकरी कर रहे थे। वहाँ से यह सीख मिला कि फसल प्रबंधन तकनीकों का बेहतर प्रयोग करने से अपने बाग की उत्पादकता लाभदायक रूप से बढ़ायी जा सकती है। उन्होंने जगदलपुर कृषि एवं बागवानी महाविद्यालय के वैज्ञानिकों से संपर्क किया और उन्हें यह सलाह मिली कि अपने बाग में बहुमंजिल फसल प्रणाली

अपनायी जाए ताकि प्रति इकाई क्षेत्र से शुद्ध आय में वृद्धि की जा सके। उनका वास्तविक लक्ष्य मुख्य फसल के रूप में नारियल की खेती करते हुए अंतरफसलों के रूप में कई फलदार फसलों, मौसमीय सब्जियों और पुष्प फसलों को शामिल करना था।

श्री सिंह को डाब की बिक्री से लगभग 45,000 रुपए और अंतरफसलों से करीब 5 लाख रुपए प्राप्त हो रहे हैं। अपने नारियल बागान में उन्होंने 3500 अनन्नास के पौधे, 800 ड्रागन फ्रूट, 1000 आम के पेड़ और 1000 नींबू के पेड़ लगाए हैं। इसके अलावा, उनके बाग में केला, चीकू, अमरूद, पपीता, स्ट्रॉबेरी और लीची भी मौजूद हैं। वे बेफिक्र हैं कि नारियल बागान से और दूसरी अंतरफसलों से उन्हें अधिकाधिक आय अवश्य प्राप्त हो जाएगी। बस्तर के अधिकांश किसान उन्हें एक सफल किसान के रूप में देखते हैं जिसने खेती में अनुकरण योग्य आदर्श मिसाल खड़ा किया है। ■

अन्नपूर्णा - अनुफुड - 2023

नारियल विकास बोर्ड ने बोंबे प्रदर्शन केंद्र, गोरेगांव, मुंबई, महाराष्ट्र में 7 से 9 सितंबर 2023 तक आयोजित "अन्नपूर्णा - अनुफुड इंडिया - 2023" अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया।

इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय प्रदर्शकों ने भाग लिया, जिसने दुनिया भर में भोजन, पेय और आतिथ्य क्षेत्र के लिए पेशेवर मंच सृजित किया। मेले में 200 से अधिक प्रदर्शकों ने भाग लिया जिनमें खाद्य और खाद्य पेय उद्योग में मशीनें, उपस्कर, अर्ध प्रसंस्कृत उत्पाद विनिर्माता कंपनियाँ शामिल थीं और उन्होंने अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

नारियल विकास बोर्ड ने नारियल की खेती, उपोत्पाद उपयोगिता, विनिर्माण एवं विपणन से संबंधित बोर्ड की गतिविधियों और योजनाओं का प्रचार करने और भारत तथा विदेशों में नारियल उत्पादों के लिए संभावी वितरकों/उद्यमियों और खुदरा विक्रेताओं की पहचान करने के उद्देश्य से अन्नपूर्णा - अनुफुड - 2023 में भाग लिया।

नारियल तेल, विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर के विनिर्माता सर्वश्री वेपुरी एग्रो प्रोडक्ट्स; नारियल पानी तथा नाटा डी कोको के विनिर्माता सर्वश्री हभीत वेल्नेस प्रा.लि., अंधेरी, ईस्ट मुंबई; विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, विर्जिन प्लस गोलियाँ तथा नारियल क्रीम के विनिर्माता सर्वश्री केराटेक (प्रा.) लि., केरल; डाब पानी, नारियल दूध शेक तथा नारियल शर्करा के विनिर्माता सर्वश्री मधुरा कोको फेस्ट, कोयंबत्तूर, तमिलनाडु; नारियल तेल, नारियल साबुन, विर्जिन नारियल तेल, नारियल पानी के विनिर्माता सर्वश्री केकेआर एक्स्ट्रैक्शन प्रा. लि., पालक्काट, केरल; नाटा डी कोको विनिर्माता सर्वश्री नाटा न्यूट्रिको कोकनट फुड प्रोडक्ट एलएलपी, कण्णूर, केरल; डाब पानी विनिर्माता सर्वश्री एग्रिकॉल्स नेचुरल फुड्स, पालक्काट, केरल; विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर के विनिर्माता सर्वश्री कोणसीमा एग्रो प्रोडक्ट्स, मल्लयपालेम, ईस्ट गोदावरी जिला, आँध्र प्रदेश; विर्जिन नारियल तेल, डेसिकेटड नारियल पाउडर, नारियल तेल के विनिर्माता सर्वश्री रबको हाउस, साउथ बाज़ार, कण्णूर, केरल और नारियल तेल तथा नारियल खली विनिर्माता सर्वश्री केपीएल ओयल मिल्स प्रा.लि., तृश्शूर, केरल ने बोर्ड के स्टाल में अपने उत्पाद प्रदर्शित किए।

नारियल विकास बोर्ड ने विभिन्न मूल्य वर्धित उत्पाद जैसे पैकटबंद डाब पानी, नारियल तेल, नारियल दूध पाउडर, विर्जिन नारियल तेल और अच्छी सूचनात्मक चार्ट एवं पोस्टर आदि प्रदर्शित किए। नाविबो स्टाल में बोर्ड के प्रकाशन भी वितरित किए गए। इच्छुक पार्टियों से लगभग 1200 व्यापार पूछताछ प्राप्त हुईं।

नाविबो का प्रबीउ फार्म, हिच्चाचरा - नारियल की अच्छी गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों की माँग की आपूर्ति करते हुए

बी. चिन्नराज
फार्म प्रबंधक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन सह बीज उत्पादन फार्म, हिच्चाचरा

फार्म का नज़ारा

आमुख

नारियल विकास बोर्ड के दसवें प्रबीउ फार्म की स्थापना त्रिपुरा के हिच्चाचरा में बागवानी और मृदा संरक्षण विभाग, त्रिपुरा सरकार द्वारा सौंपी गई 22 हेक्टर भूमि में 5 फरवरी 2016 को हुई। फार्म का मुख्य लक्ष्य नारियल की विविध किस्मों की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियों का उत्पादन और कृषक समुदाय के बीच नारियल की खेती तकनीकों का प्रचार प्रसार करना है।

फार्म 22.20 और 24.33 उत्तरी 57 अक्षांश और 91.10 और 92.20 पूर्वी देशांतर में स्थित है। इस क्षेत्र की मिट्टी बलुई दोमट है और औसत तापमान 10-35 डिग्री सेल्शियस के बीच है। वार्षिक वर्षापात 1980-2750 मि.मी. के बीच है। यह फार्म राज्य की राजधानी अगर्तला से 110 कि.मी. दूरी पर दक्षिण त्रिपुरा जिले में स्थित है।

अवसंरचना

फार्म में दो गहरा नलकूप है जिनमें से प्रति घंटा 25000 गैलन पानी निकाला जा सकता है। इसके अलावा फार्म में प्रति घंटा 5000 लीटर पानी निकालने की क्षमता वाला एक और नलकूप भी है जिसका उपयोग पीने के पानी के लिए किया जाता है। फार्म के मध्य में 2 हेक्टर में फैला एक तालाब भी है जो फार्म में पानी की अतिरिक्त आवश्यकताओं की आपूर्ति करता है। फार्म 63 केवीए ट्रांसफोर्मर वाले एलटी लाइन से समर्थित है जो 43 बिजली के खंभे के साथ फार्म के कोने कोने में बिजली पहुँचाता है। राज्य के किसानों को नियमित रूप से प्रशिक्षण देने हेतु एक नया प्रशासनिक भवन सह प्रशिक्षण केंद्र का निर्माण किया गया है। वर्ष 2022-23 के दौरान ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित करने का कार्य पूरा हुआ जिसके ज़रिए बाग की अंतरफसलों और सजावटी फसलों सहित फार्म के हरेक ब्लोक में पानी पहुँचता है।

बागान

फार्म में 13 प्लोटों में विभिन्न लंबी, बौनी और संकर किस्मों के 2345 पौधों का रोपण किया गया है। फार्म में लंबी किस्म के 973 नारियल पौधों का रोपण किया गया है

कार्यालय भवन

जिनमें केरल का पश्चिम तटीय लंबा, कर्नाटक का तिप्तुर लंबा, ओड़िशा का साखीगोपाल और आँध्र प्रदेश का पूर्व तटीय लंबा शामिल हैं। बौनी किस्मों के 1118 पौधे मौजूद हैं जिनमें मलयन हरा बौना, मलयन पीला बौना, मलयन नारंगी बौना, चावक्काट नारंगी बौना, चावक्काट हरा बौना और गंगाबोंदम शामिल हैं। इन सारी किस्मों से चौथे वर्ष से लेकर उपज मिलने लगी है। संकर किस्मों में विभिन्न संकर संयोजनों के 116 पौधों का रोपण किया गया है।

प्रबीउ फार्म, हिच्चाचरा के रोपण संबंधी ब्यौरे

प्लोट नं.	किस्में	क्षेत्र हेक्टर में	पौधों की संख्या
1.	पश्चिम तटीय लंबी	0.80	143
2.	तिप्तुर लंबी	0.88	157
3.	असम लंबी	1.12	200
4.	पूर्व तटीय लंबी	1.02	183
5.	चावक्काट हरा बौनी	0.59	105
6.	गंगाबोंदम	0.78	140
7.	त्रिपुरा लंबी	0.50	90
8.	साखीगोपाल	1.12	200
9.	विदेशी किस्में	0.77	138
10.	संकर	0.65	116
11.	चावक्काट नारंगी बौनी	1.90	340
12.	मलयन पीला बौनी	1.33	237
13.	मलयन नारंगी बौनी	1.66	296
	कुल	**13.13**	**2345**

इसके अलावा 138 विदेशी नारियल किस्मों का भी रोपण किया गया है।

नर्सरी

फार्म में हर वर्ष विविध किस्मों के एक लाख नारियल पौधों की आपूर्ति करने की क्षमता युक्त एक नर्सरी का अनुरक्षण किया जाता है। देश के विभिन्न भागों से विविध किस्मों के बीजफलों का प्रापण किया जाता है। अब तक, फार्म में 75,786 नारियल पौधे उत्पादित किए गए हैं और राज्य कृषि एवं बागवानी विभाग के ज़रिए नारियल किसानों

फार्म की नर्सरी

को इनकी आपूर्ति की गई है। कोविड़ महामारी की परिस्थिति में फार्म में दो वर्ष बीजफलों का प्रापण नहीं हुआ, लेकिन 2022 के दौरान तमिलनाडु से 166700 बीजफलों का प्रापण किया गया और नर्सरी में बोए गए।

अन्य गतिविधियाँ

फार्म में अंतरफसलों के रूप में सुपारी, केला, आम, लीची, अमरूद, नींबु, अनन्नास और सब्जियों की खेती की जाती है। फार्म में एक वर्मी कंपोस्ट इकाई है जो फार्म के उपयोग के लिए प्रति वर्ष 100 टन वर्मी कंपोस्ट का उत्पादन करती है। फार्म में दो हेक्टर क्षेत्र में एक मछली तालाब भी है। परीक्षण के आधार पर तालाब में मछली पालन किया जा रहा है और यह उम्मीद है कि मछलीपालन से फार्म की आय में बढ़ोत्तरी होगी।

फार्म में बोर्ड की विविध विस्तार गतिविधियाँ भी चलायी जा रही हैं जैसे कि जागरूकता कार्यक्रम, प्रक्षेत्र दिवस कार्यक्रम, नारियल विषयक प्रखंड, जिला और राज्य स्तरीय संगोष्ठियाँ आदि। ■

भारत में नारियल के लिए अच्छी कृषि पद्धतियाँ: प्रौद्योगिकीय विकल्प, प्रक्षेत्र परिदृश्य एवं रणनितियाँ

सुब्रह्मणियन पी.*, तंपान सी.*, जोसफ राजकुमार और रवि भट्ट***
*भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद- केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड,
**भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद– केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, प्रादेशिक केंद्र, कायंकुलम

नारियल आधारित बहुविध और एकीकृत खेती प्रणालियाँ

अच्छी कृषि पद्धति का प्रमुख उद्देश्य उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों का अधिक प्रभावी तरीके से उपयोग करना है। एकल फसल के रूप में नारियल की खेती करने से उपलब्ध संसाधनों का बहुत ही कम उपयोग होता है। नारियल आधारित फसल प्रणाली एक अच्छी कृषि पद्धति है जो प्राकृतिक संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने में और टिकाऊ उत्पादन में सहायता करता है।

उपयुक्त सह फसलें उगाकर और/या पशुधन के साथ एकीकृत करते हुए अपनायी जाने वाली नारियल आधारित फसल प्रणाली से उत्पादकता बढ़ जाती है और नारियल बागों के प्रति इकाई क्षेत्र से शुद्ध आय में भी बढ़ोत्तरी होती है। ऐसी प्रणाली में भूमि, श्रम, सूर्यप्रकाश, पानी और पोषकतत्व जैसे प्रक्षेत्र संसाधनों का कुशल उपयोग किया जा सकता है और फसलों एवं फसल-पशुधन संघटकों के बीच आपसी सहक्रिया के परिणामस्वरूप उच्च उत्पादकता भी हासिल की जा सकती है। नारियल जैसी बहुवर्षीय फसल के साथ विविध वर्षीय, द्विवर्षीय या बहुवर्षीय फसलों को अंतर/मिश्रित फसलों के रूप में शामिल करके फसल विविधता लाने से भी इस प्रणाली की उत्पादकता और टिकाऊपन बढ़ जाता है। एकल फसल के रूप में खेती करने पर नारियल बाग में उपलब्ध मिट्टी और सूर्यप्रकाश जैसे बुनियादी संसाधनों का पूरा का पूरा उपयोग नहीं किया जाता है।

नारियल की बढ़वार प्रकृति और रोपण विधि ऐसी है कि नारियल बाग में पेड़ों के बीच की जगह पर अंतरफसल प्रणाली अपनाने के लिए यह अत्यधिक उपयुक्त होती है। सभी एकबीजपत्रियों की तरह नारियल पेड़ की भी अनूठी अपस्थानिक जड़ प्रणाली होती है। अनुकूल परिस्थितियों में मध्यम आयु के ताड़ों में ज्यादा से ज्यादा 4000 से 7000 जड़ें पायी जाती हैं। अच्छी प्रबंधन के अंतर्गत ताड़ द्वारा उत्पादित 74 प्रतिशत जड़ें 2 मीटर की दूरी तक ही फैलती हैं और 82 प्रतिशत जड़ें मिट्टी में 31 से 120 सें.मी. गहराई में सीमित रहती हैं। इसप्रकार, नारियल बाग में सक्रिय जड़ क्षेत्र उपलब्ध भूमि के 25 प्रतिशत तक ही सीमित रहता है और सहफसलें उगाने के लिए शेष क्षेत्र का उपयोग लाभदायक तरीके से किया जा सकता है। नारियल के शिखर पर पत्तों का विन्यास ऐसा है कि इसके बीच से गुजरकर सूर्यप्रकाश ज़मीन पर पड़ता है और अंतर/मिश्रित खेती के लिए ज़मीन और सौर ऊर्जा का उपयोग करने हेतु अवसर प्रदान करता है। ताड़ की आयु, शिखर का आकार, बाग में सूर्यप्रकाश की उपलब्धता और खेती किए जाने वाले क्षेत्र की कृषि जलवायु परिस्थितियाँ आदि के आधार पर अंतर/मिश्रित फसलों का चयन किया जाना होगा।

नारियल पेड़ों के बीच, वृद्धि के प्रारंभिक चरण में अंतर फसल उगाने और ताड़ के जीवनकाल के शेष चरण में मिश्रित फसलों की खेती करने हेतु गुंजाइश है। पाँच से सात वर्ष की आयु वाले नारियल पेड़ों के बागों में कंद फसलों और प्रकंदी मसालों (कसावा, जिमीकंद, शकरकंद, रतालू, सुथनी, चीनी आलू, अरवी, अदरक और हल्दी), अनाज और मोटे अनाज (धान, ज्वार, मकई, बाजरा और रागी), दाल और तिलहन फसलों (लोबिया, मूँग दाल, उडद दाल, अरहर, मूँगफली, सोयाबीन, चना और सूरजमुखी), सब्जी फसलों (कद्दु, सफेद पेठा, हरीमिर्च, आलू, सेम की फली, चिचिंडा, चौलाई, बैंगन, लौकी, तुरई, कुंदुरी प्रजातियाँ, लैबलैब, सहजन, कढ़ी पत्ता और टमाटर), फलदार फसलों (केला, अनन्नास और पपीता), पुष्प फसलों (*हेलिकोनिया* प्रजातियाँ, *एन्थूरियम* प्रजातियाँ और *जैस्मिनम* प्रजातियाँ)

* पिछले अंक से जारी...

और चारा घास और दलहन फसलों की खेती की जा सकती है।

ताड़ की वृद्धि के दूसरे चरण के दौरान याने 5-20 वर्ष की आयु में, पेड़ों के बीच की जगह में दूसरी फसलों की खेती करना मुश्किल हो सकता है क्योंकि इस चरण में सूर्यप्रकाश की उपलब्धता बहुत कम हो जाती है। तथापि, अरवी जैसी फसलों, पालयंकोटन आदि जैसे केले की कुछ किस्में, चारा घास, छाया पसंद करने वाले औषधीय पौधे आदि की खेती इस चरण के दौरान की जा सकती है जो छाया सहनशील होते हैं। ताड़ का कद 5 से 6 मीटर का हो जाने के बाद (20 वर्ष से अधिक आयु) अर्थात्, अधिक आयु के ताड़ वाले बागों में मिश्रित फसलों के रूप में प्रारंभिक चरण में उल्लिखित फसलों और कोको, वैनिला, काली मिर्च, दालचीनी, लौंग और जायफल, चीकू जैसी बहुवर्षीय फसलों और अडूसा (*अधटोडा बेडोमी*), कारवी (*नीलगिरियान्थस सिलिएटस*), दांती (*बालियोस्पर्मम मोन्टानम*), खसखस (*वेटिवेरिया ज़िज़ेनियोइड्स*), पिप्पली (*पाइपेर लोंगम*) जैसी औषधीय एवं सगंध फसलों की खेती अंतरफसलों के साथ की जा सकती है। मात्र बढ़वार के तीसरे चरण में ही अंतरफसलों के रूप में बहुवर्षीय फसलों की खेती की सिफारिश की जाती है। इसके लिए पेड़ों के बीच की दूरी 7.5 से 8.0 मीटर होना आवश्यक है। तथापि यदि पेड़ों के बीच की दूरी 10 मीटर और उससे अधिक रखी हो तो बहुवर्षीय फसलों की खेती बढ़वार के प्रारंभिक चरण से ही की जा सकती है। ऐसी जगहों में जहाँ बारिश पर्याप्त रूप से नहीं प्राप्त होती है, गर्मी के महीनों में सिंचाई करना आवश्यक है। नारियल पेड़ों को प्रयोग की जाने वाली खाद के अतिरिक्त इन फसलों के लिए पर्याप्त रूप से और अलग से खाद देना ज़रूरी है। क्षेत्र विशेष में स्थित कृषि विश्वविद्यालयों की अनुशंसाओं के अनुसार अंतरफसलों की खेती प्रक्रियाओं का अनुसरण करना चाहिए।

उच्च सघन बहुप्रजाति फसल प्रणाली

उच्च सघन बहुप्रजाति फसल प्रणाली में (एचडीएमएससीएस) किसानों के आहार, ईंधन, लकड़ी, चारा और नकद जैसी विविध प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से बड़ी संख्या में फसलों को उगाया जाता है। यह प्रणाली लघु जोत वाली इकाइयों के लिए आदर्श रूप से उपयुक्त होती है और इसका लक्ष्य प्रति इकाई क्षेत्र से कम समय में ही अधिकतम उत्पादन और साथ ही साथ टिकाऊपन सुनिश्चित करना है। इस प्रणाली में वार्षिक, द्विवार्षिक और बहुवर्षीय फसलें शामिल होती हैं। चुनिंदे फसलों में नकदी फसलें, खाद्य फसलें और चारा फसलें शामिल होती हैं। इसके आर्थिक रूप से उपयोगी हिस्से को छोड़कर शेष जैवभार का इस प्रणाली के अंदर ही पुनर्चक्रण किया जाता है। केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड में नारियल और केला, अनन्नास, कालीमिर्च, लौंग और जायफल जैसी फसलों को शामिल करके अनुरक्षित उच्च सघन बहुप्रजाति फसल प्रणाली के परीक्षण स्थान से यह पाया गया कि प्रति हेक्टर से औसतन 5 से 6 लाख रुपए की औसत वार्षिक शुद्ध आय प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त, प्रति हेक्टर से 25 टन जैविक अपशिष्ट भी उपलब्ध होता है जिसका पुनर्चक्रण करके फसलों को वर्मी कंपोस्ट के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उच्च सघन बहुप्रजातीय फसल प्रणाली में यदि जैविक पुनर्चक्रण प्रभावी तरीके से किया जाता है तो नारियल के लिए अनुशंसित रासायनिक उर्वरकों की मात्रा दो तिहाई तक कम की जा सकती है।

नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली

नारियल आधारित खेती प्रणाली पारिस्थितिक रूप से टिकाऊ प्रणाली है जो किसानों को अधिक आय प्राप्त करने में मदद करता है। एकीकृत खेती प्रणाली का उद्देश्य टिकाऊपन होता है और हम जिस वातावरण में जीते हैं उसको सुरक्षित रखते हुए कृषि आदान सामग्रियों के प्रभावी उपयोगीकरण के ज़रिए उत्पादन प्रक्रिया अनुकूल बनाया जाता है। नारियल बागों में स्टाइलो घास (*स्टाइलोसेंथेस ग्रेसिलिस*) जैसी दलहन चारा फसलों के साथ संकर नेपियर या गिनी घास जैसे चारा घास की मिश्रित खेती करना लाभकर पाया गया है। एक हेक्टर के नारियल बाग में उपर्युक्त फसलें उगाने से पाँच से छह दुधारू पशुओं के लिए आहार प्राप्त किया जा सकता है। तथापि, यदि नारियल बाग में अंतरफसल के रूप में संकर बाजरा नेपियर (CO 3, CO 4 और CO 5) की खेती की जाती है तो प्रति वर्ष प्रति हेक्टर लगभग 120 टन हरा चारा प्राप्त होता है जिससे

12 पशुओं को पाला जा सकता है। तथापि, किसानों की अभिरुचि के अनुसार मवेशियों के अलावा कुक्कुट पालन, मछलीपालन, बकरीपालन और मधुमक्खीपालन को भी नारियल खेती के साथ अपनाया जा सकता है। इस प्रणाली से प्राप्त मवेशी और कुक्कुट खाद का प्रयोग जब नारियल बाग में किया जाता है तो मिट्टी की उर्वरता काफी बढ़ जाती है। नारियल बागों में दुधारू गायों और दूसरे संघटकों का अनुरक्षण करने से किसानों की आय में बढ़ोत्तरी होती है और परिवार के लिए रोज़गार के अतिरिक्त अवसर भी खुल जाते हैं। 10 दुधारू गायों, प्रति बैच 100 पक्षियों के हिसाब से 6 बैचों में कुक्कुट पालन और CO 3 संकर बाजरा नेपियर चारा घास, 1000 मछली के बच्चे और बकरीपालन इकाई में 20 मादा और 2 नर बकरियों को पाले जाने वाले एक हेक्टर के नारियल आधारित मिश्रित खेती इकाई से प्रति वर्ष 6.0 से 6.5 लाख रुपए की शुद्ध आय प्राप्त होती है। ऐसी इकाई से सृजित रोज़गार प्रति वर्ष 900 श्रमिक दिवस है। एक नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणाली का अनुरक्षण करने से इस प्रणाली से 70 टन से अधिक घूरे की खाद और 1 लाख लीटर गो मूत्र प्राप्त होते हैं और इनका पुनर्चक्रण करके इस प्रणाली को दिया जाए तो मिट्टी के भौतिक, रासायनिक और जैविक गुणधर्म बेहतर हो जाते हैं और प्रणाली का टिकाऊपन सुनिश्चित हो जाता है। 75 प्रतिशत से अधिक नत्रजन और पोटेशियम अपेक्षाओं को फार्म से ही प्राप्त इन संसाधनों से पूरा किया जा सकता है और फोसफरस की शतप्रतिशत अपेक्षा की आपूर्ति बाग से ही हो जाती है।

कीट और रोग प्रबंधन

अच्छी कृषि पद्धति में कीट और रोग प्रबंधन का मूल आधार रासायनिक कीटनाशकों का न्यूनतम उपयोग और पर्यावरण हितैषी पद्धतियाँ सुनिश्चित करना है जिनमें जैव नियंत्रण एजेंटों का प्रयोग भी शामिल है। कीट परभक्षी (पतंग जो कीटों को पूरा या उसका हिस्सा खा जाता है), परजीवियाँ (पतंग जो अपनी संततियों को उत्पादित करने के लिए दूसरे कीटों का उपयोग करता है और इस प्रक्रिया के दौरान कीट को मार देता है) और रोगाणु (रोगकारक कीटों को मारने या उसकी वृद्धि दर कम करने वाले रोगाणु) आदि कुदरती शत्रु हैं। परभक्षी कीटों में सोनपंखी (लेडी बर्ड बीटल), लेस विंग और मकड़ी शामिल हैं। परजीवी कीटों में ततैया और मक्खी शामिल हैं जो लार्वे या सूँडियों जैसे रोगकारक कीटों पर अपने अंडे डालते हैं।

बागानों के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों में कीट एवं रोग सहनशील किस्मों के उपयोग पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। कीटों को मार भगाने के लिए नीम की गरी से उत्पादित नीम आधारित कीटनाशकों का प्रयोग भी किया जा सकता है। पाती (*आर्टिमिशिया वलगेरिस*), बिच्छू बूटी (*उर्टिका डियोका*), *पोलिगोनम* और *यूपाटोरियम ग्लैंडुलोसम* जैसे हवाई पौधे (एरियल प्लैंट) जो बागों में बहुतायत से उगते हैं, अरुचि या विषाक्तता उत्पन्न करने की क्षमता रखती हैं (एंटी फीडेंट क्रिया) और नारियल के कुछ पत्ता भक्षी कीटों को मार भगाने के लिए इसके पत्ते और तना से निष्कर्षित रस का प्रयोग किया जाता है।

अंतरफसलों के रोपण में समय और जगह दोनों का ध्यानपूर्वक प्रबंधन करने से कीटों के प्रकोप को रोका जा सकता है और साथ साथ कुदरती परभक्षियों की आबादी भी बढ़ जाती है जो कीटों, रोगों और खरपतवारों को नियंत्रित करने की स्वाभाविक क्षमता रखते हैं। स्वच्छ खेती; मृदा में निहित रोगाणुओं से लड़ने और पादप वृद्धि को बढ़ावा देने हेतु मिट्टी का स्वास्थ्य सुधारना; नियमित फसल आवर्तन; रोगों, कीटों और खरपतवारों के नियंत्रण हेतु प्राकृतिक जैविक एजेंटों को बढ़ावा देना; कीटों, पक्षियों और जानवरों से संरक्षण देने हेतु भौतिक रोध लगाना; कीटों के कुदरती शत्रुओं और परागणकारियों को बढ़ावा देने हेतु निवासस्थान में परिवर्तन लाना और फेरोमोन आकर्षियों एवं जाल जैसे अर्ध-रसायनों का प्रयोग आदि अन्य विधियाँ भी कीटों को भगाने हेतु आम तौर पर अपनायी जा सकती हैं।

नारियल और दूसरी अंतरफसलों के कीटों के प्रबंधन में सूक्ष्म जीव, परजीवी, परभक्षी और नीम एवं लहसुन से उत्पादित प्राकृतिक वनस्पति आधारित कीटनाशक सहित 150 जैविक कीटनाशक प्रभावी पाए गए हैं। नारियल और अन्य सह फसलों को प्रकोपित कीटों और रोगों के नियंत्रण हेतु प्रभावी जैव नियंत्रण एजेंटों के प्रयोग के कई दृष्टांत उपलब्ध हैं। प्रमुख कीट एवं रोग और उनके प्रबंधन हेतु अच्छी कृषि पद्धतियों में अनुसरण की जाने वाली विधियाँ सारणी 1 में दी गई हैं। यह अत्यंत उपयुक्त होता है कि नारियल के विविध कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु सामूहिक प्रणाली अपनायी जाए। वानस्पतिक कीटनाशक

के रूप में कई पौधे उपयुक्त हैं और फसल प्रणाली में इन पौधों को भी शामिल किया जा सकता है। रासायनिकों का प्रयोग विवेकपूर्ण तरीके से करना चाहिए और इसका प्रयोग मात्र तभी करना चाहिए जब ऐसा लगे कि कीटों की आबादी आर्थिक रूप से लाभदायक स्तर से परे हो रहे हैं। रासायनिकों का छिड़काव अत्यंत सावधानीपूर्वक करना चाहिए। कामगारों को उचित मास्क और दस्तानें पहनना होगा। सही प्रकार का रासायनिक, सही मात्रा में रासायनिक और सही प्रकार के नोक का प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव करते समय हवा की गति अत्यंत कम होनी चाहिए। बेहतर होगा कि यह सुबह-सुबह या शाम को किया जाए। रासायनिक कीटनाशकों में मिलाने के लिए साफ जल का प्रयोग करना चाहिए। सही समय पर कीटों के प्रकोप की पहचान करने हेतु ताड़ों का निकट से अनुवीक्षण और व्यवस्थित रूप से छानबीन करते रहना अत्यंत अनिवार्य है ताकि कीट नियंत्रण और फसल का नुकसान कम करने के लिए सटीक उपाय अपनाया जा सके।

सारणी 1: नारियल के कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु अच्छी कृषि पद्धतियाँ

क. कीट

कीट का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
गैंडा भृंग (*ओरिक्टस रिनोसरस*) *मेटाराइज़ियम मैजस*	1. बाग को स्वच्छ रखें। 2. रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। इससे कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है। 3. अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने के जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंडा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 5 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल (0.4 प्रतिशत)/3 ग्राम फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे या भा.कृ.अनु.प. -केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वानस्पतिक खली (2 ग्राम) रखें। 4. रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे भीतरी तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/चालमोगरा खली (*हाइड्रोकार्पस* प्रजाति)/पोंगम खली (*पोंगमिया पिन्नाटा*- 250 ग्राम) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालिन गोलियाँ रेत मिश्रित करके भरें। 5. प्रजनन गड्ढ़ों में भाँट (*क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम*) नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हॉर्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण अवयस्क अवस्था में ही कीटों का विकास रुक जाता है। 6. खाद के गड्ढ़ों को प्रति घन मीटर 5×10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, *मेटाराइज़ियम मैजस* से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सकें। 7. प्रति हेक्टर 10-15 की दर पर *बैकुलोवाइरस ऑरिक्टस* प्रकोपित वयस्क भृंगों को बाग में छोड़ दें। 8. क्षेत्र-व्यापक स्तर पर किसान सहभागिता से प्रौद्योगिकी अभिग्रहण करने पर कीटों का प्रकोप अत्यंत प्रभावी तरीके से कम किया जा सकता है और कीटों के नियंत्रण में पर्यावरण हितैषी तरीका विकसित होता है।

कीट का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
लाल ताड़ घुन (*रिंकोफरस फेरुजिनस*)	1. बाग की स्वच्छता बनाए रखना अनिवार्य होता है और शिखरहीन ताड़ों में बचे हुए कीट के अंड़ों, सूँडियों एवं घुनों को नष्ट कर देना चाहिए। गैंडा भृंग के लिए सुझावित पर्ण कक्षों में भरने का रोगरोधी उपाय अपनाना अत्यंत अनिवार्य है क्योंकि यह कीट लाल ताड़ घुन के प्रकोप के लिए रास्ता खोल देता है। 2. ताड़ को घाव न लगने दें क्योंकि ये घाव घुनों को अंडा देने के लिए आकर्षित कर सकता है। यदि ताड़ पर कोई यांत्रिक क्षति पहुँची हो तो उसे कोल तार से उपचारित करें। 3. पत्तों को काटते समय तने से कम से कम 120 सें.मी. लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटें ताकि तने से कीट का प्रवेश रोका जा सके। 4. प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और प्रकोप से मुक्त होकर ताड़ पर नई कोंपल निकलने लगती है। 5. यदि शिखर को नुकसान होता है तो, क्षतिग्रस्त ऊतकों को निकाल देना चाहिए और घाव के अंदर प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली. की दर पर कीटनाशक घोल, इमिडाक्लोप्रिड (0.02 प्रतिशत) का प्रयोग करना चाहिए। यदि घुन का प्रवेश तने के ज़रिए हुआ हो तो तने पर लगे छेद को सिमेंट/कोल तार से बंद करें और सबसे ऊपर के छेद को पेंचदार बरमा से तिरछा बनाएं और एक कीप की सहायता से कीटनाशक घोल इस छेद के अंदर बहा दें। 6. खमीर या गुड़रस से सक्रियित किण्वित ताड़ी या अनन्नास या गन्ने के घोल के साथ नारियल लकड़ी जाल सेट करें ताकि घुनों को आकर्षित किया जा सके। 7. वयस्क भृंगों को आकर्षित करने और मारने के लिए फेरोमोन जाल का प्रयोग करें। (यह सामुदायिक रूप से अपनाना चाहिए)
पत्ता भक्षी इल्ली (*ओपिसिना एरेनोसेला*) *गोनियोज़स निफैंटिडिस*	1. गंभीर रूप से प्रकोपित 2-3 बाह्य पत्तों को काटकर जला दें। 2. रोगप्रकोप की गुंजाइश वाले क्षेत्रों में कीट की मौजूदगी का पता लगाने के लिए ताड़ के पत्तों का नियमित रूप से अनुवीक्षण करते रहना चाहिए। 3. कीट के विविध चरणों के अनुसार तदनुरूप लार्वा परजीवी *गोनियोज़स निफैंटिडिस* (बेथिलिडे) को प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर एवं *ब्राकोन ब्रेविकोर्निस* (ब्रैकोनिडे) को प्रति ताड़ 30 परजीवी की दर पर, पूर्वप्यूपा परजीवी *एलैसमस निफैंटिडिस* (एलैसमिडे) और प्यूपा परजीवी *ब्रेकिमेरिया नोसटोय* (चैलसिडिडे) को हर 100 पूर्व प्यूपे और प्यूपे के लिए क्रमशः 49 और 32 की दर पर बाग में अधिक संख्या में छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का टिकाऊ प्रबंधन मुम्किन हुआ है। यदि बाग में विविध अवस्था वाले कीट मौजूद हो तो सभी परजीवियों को एक साथ छोड़ देना अपेक्षित होता है। 4. परजीवियों को छुड़ाने से पहले इन्हें पर्याप्त मात्रा में शहद देना चाहिए और पोषक गंधों (गैलरी के वाष्पशील पदार्थ) से सुगम्य बनाना चाहिए, ताकि पोषक कीटों की खोज करने की क्षमता बढ़ जाएं।

कीट का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
कोरिड बग (*पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस*) 	1. परागण किए गए गुच्छों पर नीम तेल-साबुन मिश्रण (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें। यह मिश्रण एक लीटर पानी में 5 मि.ली. नीम तेल और 8 ग्राम साबुन का टिकिया मिलाकर तैयार किया जा सकता है। 2. कीट प्रकोपित ताड़ के सभी गिरे बुतामों को एकत्र करके नष्ट करें। 3. अंडों और अपक्व अवस्था के कीटों को नष्ट करने के लिए शिखर की सफाई करें। 4. एज़ाडिरेक्टिन 300 पीपीएम (निंबिसिडिन) का 0.0004 प्रतिशत की दर पर(प्रति लीटर 13 मि.ली.) छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है। मई-जून और सितंबर-अक्तूबर के दौरान 1-5 महीने की आयु के नारियल गुच्छों पर दो बार छिड़काव करना संतोषजनक रूप से कीट का नियंत्रण करने के लिए अनिवार्य होता है। 5. बाग में कोरिड बग के कुदरती शत्रुओं में वीवर चींटी, *आकोफला स्मार्गडीना* सबसे प्रभावी परभक्षी पाए गए हैं। 6. दो अंडा परजीवियों जैसे *क्राइसोकैल्सिसा ओविसेप्स* और *ग्रयोनहोमोसेरी* को संभाव्य अंडा परजीवी के रूप में पहचाने गए हैं। बाग से एकत्रित कुल अंडों का 40 प्रतिशत तक परजीवियों का आहार बनते पाया गया है। 7. परागण किए गए गुच्छों पर प्रति लीटर 0.3 मि.ली. की दर पर क्लोरएंट्रानिलिप्रोल या प्रति लीटर 1.0 मि.ली. की दर पर लैम्बडा साइहलोथ्रिन का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।
नारियल एरियोफिड माइट (*एसेरिया गुरुर्रोनिस*)	1. सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाकर नष्ट करना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है। 2. नीम तेल-लहसुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में नीम तेल 200 मि.ली., साबुन 50 ग्राम और लहसुन 200 ग्राम) नए परागित पाँच नारियल गुच्छों पर छिड़काव करें। 3. या एक लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 1 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन निहित नीम सूत्रीकरण का छिड़काव करें। 4. या 800 मि.ली. पानी में पाम तेल (200 मि.ली.) और गंधक (5 ग्रा.) मिश्रित करके छिड़काव करें। 5. 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा देना भी प्रभावी होता है। 6. परागण के तुरंत बाद गुच्छों पर नीम दवा के साथ साथ तीन बार प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6 x 10^8 सीएफयू रोगजनक फफूँद (एकरोपैथोजन) *हिरसुटेल्ला थोमसोनी* निहित टैल्क आधारित दवा का छिड़काव। 7. परभक्षी माइट, *नियोस्युलस बाराकी* और *एम्ब्लोसियस* प्रजाति प्राकृतिक रूप से कीट नियंत्रण सुगम बनाता है। 8. कल्पहरिता (कुलशेखरम लंबा से चयनित) माइट प्रकोप के प्रति सहनशीलता दर्शाता है। 9. अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, ताड़ के थालों में हरी खाद फसलें उगाना और फूल निकलने पर उखाड़कर थालों में मिलाना, गर्मी के मौसम में सिंचाई, मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना आदि ताड़ का स्वास्थ्य सुधारता है और कीट प्रकोप कम करता है।

कीट का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी (*एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस*) 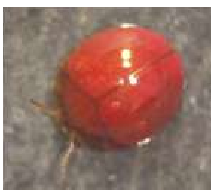 *लियोक्रिनस नीलगिरियानस*	1. पत्तियों से कज्जली फफूँद की परत को निकालने के लिए 1 प्रतिशत कलफ घोल का प्रयोग करें। 2. गंभीर मामले में, नीम तेल 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और कीटनाशक के प्रयोग की अनुशंसा नहीं दी जाती है। 3. वयस्क सफेदमक्खियों को फँसाने के लिए ताड़ के तने पर पीला चिपचिपा जाल स्थापित करें। 4. एफिलिनिड परजीवी *एनकार्शिया गुआडेलूपे* और क्रिसोपिड परभक्षी, *एपेर्टोक्राइसा* प्रजाति, लेडी बीटल *जाउरेविया पल्लिडुला*, *सेरेंगियम पार्सेसेटोसम* और *मेनोकिलस सेक्समैकुलेटस*, साइबोसिफलिड परभक्षी, *साइबोसिफलस* प्रजाति का प्रयोग और साथ साथ बाग में कज्जली फफूँद भक्षी भृंग, *लियोक्रिनस नीलगिरियानस* कज़ब का परिरक्षण। 5. प्रति एकड़ 5 की दर पर पीले चिपचिपे जाल का प्रयोग। 6. छोटे ताड़ों में, जेट गति से पानी छिड़कने से सफेदमक्खी को हटाया जा सकता है और कीट के आहार लेने की और प्रजनन क्षमता कम हो जाती है। 7. काला फफूँद भक्षी भृंग *लियोक्रिनस नीलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से पत्तियों पर जमे सारे काले फफूँदों को यह खा लेता है और उन्हें इस प्रकार साफ करता है कि ताड़ों की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता बेहतर हो जाती है।
जड़ सूँडी (*ल्यूकोफोलिस कोनियोफोरा*) 	1. पेड़ों के बीच की जगहों में 5-10 सें.मी. गहराई में रोगाणु सूत्रकृमि *स्टेइनेरनेमा कार्पोकैप्से* की जलीय दवा का प्रति हेक्टर 1.5 बिलियन की संक्रामक छोटी कृमियों की दर पर मिट्टी में प्रयोग और आवश्यकता के अनुसार बार बार अनुप्रयोग। 2. गर्मी के दौरान बार बार जुताई करके विविध अवस्थाओं की सूँडियों को बाहर निकालना ताकि परभक्षी इन्हें खा सके। 3. मानसून की शुरुआत के साथ रोज़ाना शाम को दो हफ्ते के लिए वयस्क भृंगों को हाथ से निकालना। 4. प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नारियल के थालों में नीम खली का प्रयोग करने से नई जड़ें निकलती हैं।
नारियल शल्क कीट (*एस्पिडियोटस डिस्ट्रक्टर*)	1. एफिलिनिड परजीवी *एफिटिस* प्रजाति का प्रयोग सफल पाया गया है। 2. लेडी बग *चिलोकोरस नाइग्रिटस*, *ससाजिस्कैम्नस द्विपाकल्पा*, *फैरोसैम्नस होर्नि* (कोकिनेलिडे) प्रभावी परभक्षी पाए गए हैं।
स्लग इल्ली (*डार्ना नरेरिया*)	1. कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है। 2. यूलोफिड लार्वा परजीवी *पेडियोबियस इम्ब्रुएस* से प्रचुर जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर *बैसिलस थुरिंजिएनसिस* का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

कीट का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
फल छेदक (*साइक्लोडेस ओम्मा*)	1. शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए। 2. हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगाणु *बैसिलस थुरिंजिएनसिस* प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है।
चूहा (*रैटस रैटस रॉटोनी*)	1. यांत्रिक अवरोध (बैंड) और विषैला चारा या जाल रखकर चूहों का नियंत्रण किया जा सकता है। नारियल पेड़ के तने को पोलिथीन शीट से ढकने से चूहों का नुकसान कम होते पाया गया है। 2. ज़मीन से 2 मीटर की ऊँचाई में ताड़ के तने के चारों ओर लगाया गया 40 सें.मी. चौड़ा जी.आई शीट का फीता चूहों के लिए यांत्रिक अवरोध के रूप में कार्य करता है। 3. नारियल पौधों का रोपण एक दूसरे के बीच समुचित दूरी छोड़ते हुए किया जाए और साथ साथ गिरे पत्तों और अन्य ताड़ अपशिष्टों को नियमित अंतराल में नष्ट करते रहने से नारियल बागों में चूहों का प्रकोप कम किया जा सकता है।

ख. रोग

रोग का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
कली सड़न	1. नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है। 2. गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को हटाकर बाग को स्वच्छ रखें। 3. मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडेर्मा (*ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* सीपीटीडी 28) संपुष्ट दो कयरगूदा टिकिया रखें और रोगरोधी उपाय के रूप में हर दो महीने बाद यह दोहराते रहना चाहिए। 4. तर्कु पत्ते के पूरे सड़े हुए ऊतकों को हटाएं। सड़े हुए भाग आसानी से हटाने और अच्छी तरह साफ करने के लिए यदि आवश्यक हो तो तर्कु पत्ते के समीप के दो या तीन स्वस्थ पत्तों को भी हटाएं। प्रकोपित ऊतकों को हटाने के बाद घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को वैसे ही रहने दें। 5. आसपास के ताड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें। 6. प्रकोपित ऊतकों को जलाकर या गहरा गड्ढ़ा खोदकर उसमें गाड़ दें। 7. बाग में पर्याप्त जलनिकासी की व्यवस्था करें और अधिक संख्या में ताड़ न लगाएं। 8. रोगप्रकोप से बचाने के लिए नवरोपित पौधों पर भी बोर्डो मिश्रण (1 प्रतिशत) से रोगरोधी छिड़काव किया जा सकता है। 9. ऐसे क्षेत्रों में जहाँ तेज़ हवा चलती है और नारियल के पत्तों का नुकसान होता है, *फाइटोफ्थोरा* के प्रकोप को रोकने के लिए बोर्डो मिश्रण (1 प्रतिशत) का छिड़काव करना अनिवार्य होता है

रोग का नाम	प्रबंधन पद्धतियाँ
पत्ता सड़न	1. कोंपल के सड़े हुए भाग को और निकटस्थ 2-3 पत्तों को हटाएं और प्रति ताड़ 300 मि.ली. पानी में 2 मि.ली. हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी निहित फफूँदनाशी घोल या प्रति ताड़ 500 मि.ली. पानी में 50 ग्राम की दर पर *स्यूडोमोनास फ्ल्यूरेसेंस* या *बैसिलस सब्टिलिस* के टैल्क आधारित दवा का प्रयोग कोंपल के चारों ओर अच्छे से करें। 2. गैंडाभृंग के प्रकोप को रोकने हेतु रोगरोधी उपाय अपनाया जाए।
तना स्रवण	1. पानी का जमाव रोकें और ताड़ को स्वस्थ रखने हेतु अनुशंसित मात्रा में जैविक खाद का प्रयोग करें। 2. तना/जड़ को घाव लगने से बचाने के लिए उसके निकट कचरे और ताड़ के अपशिष्टों को न जलाएं। 3. छेनी से रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह हटाकर घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) का लेप करें और 0.1 प्रतिशत घोल से प्रति पेड़ 25 लीटर की दर पर थालों को शराबोर करें। 4. तने पर रिसाव वाले भागों पर *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* के टैल्क आधारित दवा के पेस्ट से लेप करें (25 मि.ली. पानी में 50 ग्राम ट्राइकोडेर्मा मिलाकर पेस्ट तैयार किया जाता सकता है।) 5. दूसरे जैविक पदार्थों के साथ साथ थाले में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* से संपुष्ट नीम खली का प्रयोग करें। 6. रोग प्रबंधन हेतु *ट्राइकोडर्मा हमैटम* और *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* से संपुष्ट कयरगूदा खली का प्रयोग करें।
मूल तना विगलन रोग	1. मृत ताड़ों को और रोग के गंभीर प्रकोप वाले ताड़ों को हटाएं और इन ताड़ों के तने और (*गैनोडेर्मा* मुरझा) जड़ क्षेत्र का नाश करें ताकि रोगकारक संरोप का नाश किया जा सके। 2. रोगग्रस्त ताड़ों के चारों ओर 2 फीट की गहराई के गड्ढ़े खोदकर इन ताड़ों को स्वस्थ ताड़ों से अलग करें। 3. रोगप्रकोप वाले बागों में बाढ़ सिंचाई या जुताई न करें ताकि संरोप का फैलाव रोका जा सके। 4. छह महीने के अंतराल में प्रति वर्ष प्रति ताड़ *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* (सीपीटीडी 28) से संपुष्ट नीम खली (5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम की जा सकती है।

तुड़ाई

प्रायः 11-12 महीने की आयु के फलों की तुड़ाई की जाती है। साल में विभिन्न अंतराल में नारियल की तुड़ाई की जाती है। ताड़ की उपज के अनुसार इसकी आवृत्ति में अंतर हो सकता है। प्रायः साल में 6 से 10 बार फलों की तुड़ाई की जाती है। अच्छी तरह अनुरक्षित और उच्च उपज मिलने वाले बागों में गुच्छों का उत्पादन नियमित रूप से होता रहता है और तुड़ाई महीने में एक बार की जाती है। ऐसे इलाकों में जहाँ कयर रेशे के विनिर्माण हेतु छिलकों का उपयोग किया जाता है 11 महीने की आयु के फलों की तुड़ाई की जा सकती है क्योंकि वे अच्छी गुणवत्ता के रेशे प्रदान करते हैं। परंपरागत रूप से फलों की तुड़ाई करने के लिए नारियल पेड़ों पर चढ़ने हेतु कुशल कामगारों को लगाया जाता है। आजकल, तुड़ाई कार्यों के लिए कुशल ताड़ारोहक मिलना मुश्किल हो गया है जो नारियल किसानों द्वारा सामना की जा रही एक गंभीर समस्या है। केरल में कण्णूर जिले के एक किसान ने पेड़ पर चढ़ने के लिए एक सरल उपकरण का आविष्कार किया है जिसकी लोकप्रियता बढ़ रही है और अधिकांश ताड़ारोहक पेड़ पर चढ़ने के लिए इस उपकरण का प्रयोग कर रहे हैं। अच्छी कृषि पद्धति का

एक पहलू है प्रचालन में होने वाला जोखिम कम करना, जो नारियल पर अत्यधिक लागू होता है। हाथ से किए जाने वाले कार्यों में नारियल की तुड़ाई एक प्रमुख कार्य है। इस पर लगने वाला कठिन श्रम कम करने और ताड़ारोहकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु हाल ही में ताड़ारोहण उपस्करों का विकास किया गया है। तथापि, पुरानी पीढ़ी के ताड़ारोहक अब भी अपने आप पेड़ों पर चढ़ जाते हैं और वे ताड़ारोहण उपस्करों का उपयोग नहीं करते हैं। 60 वर्ष की आयु की लंबी किस्म के नारियल पेड़ 15 से 18 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ते हैं और इसलिए ताड़ारोहकों का जीवन खतरे से खाली नहीं होता है। अतः ताड़ारोहकों को इस पेशे में शामिल जोखिमों से अवगत कराना ज़रूरी है और सुरक्षा संलग्नकों के साथ यांत्रिक ताड़ारोहण उपस्करों का उपयोग करने के लिए उन्हें प्रशिक्षण देना अनिवार्य है। बाग के मालिकों को उनकी बीमा कराने में मदद करनी चाहिए। युवा पीढ़ी के ताड़ारोहकों को यांत्रिक ताड़ारोहण उपस्करों के सही उपयोग के बारे में समुचित प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है।

तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण हेतु अच्छी कृषि पद्धति

नारियल खेती से आय बढ़ाने की महत्वपूर्ण रणनीति है उत्पाद विविधीकरण के ज़रिए मूल्यवर्धन। नारियल ताड़ के विविध हिस्सों का उपयोग करते हुए तरह तरह के खाद्य एवं खाद्येतर उत्पादें बनाए जाते हैं। नारियल उत्पादों को डाब आधारित उत्पादें, पुष्पक्रम रस (नीरा) आधारित उत्पादें, नारियल दूध आधारित उत्पादें और परिपक्व नारियल आधारित उत्पादें आदि व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है। भारत में मूल्यवर्धन हेतु नारियल के प्रक्षेत्र स्तरीय प्रसंस्करण का अभिग्रहण बहुत कम हो रहा है और इसका मुख्य कारण यह है कि अधिकांश जोत लघु और सीमांत किसानों के पास हैं जो प्रसंस्करण उद्यम अपनाने में संसाधन की कमी जैसे कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। छितराए पड़े जोतों में संसाधन की कमी के कारण उत्पन्न चुनौतियों से निपटने के लिए सामूहिक नज़रिया अपनाना उचित होता है और नारियल क्षेत्र में बड़ी संख्या में किसान उत्पादक संगठनों का गठन किया गया है और इनमें से कई नारियल के मूल्यवर्धित उत्पादों का उत्पादन और विपणन जैसे उद्यमों में जुट गए हैं। कई नारियल उत्पादें, विशेषतया खाद्य उत्पादें ऐसे हैं कि उनके लिए गुणवत्ता मानक निर्धारित किया गया है जो नियामक उपायों से संबंधित एजेंसियों द्वारा तय किया जाता है। नारियल के तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण और विपणन संबंधी अच्छी कृषि पद्धतियाँ उपलब्ध गुणवत्ता मानदंडों को ध्यान में रखते हुए और जिन उत्पादों के लिए कोई मानदंड तय नहीं है उनके लिए नए गुणवत्ता मानदंड निर्धारित करके उनके अनुरूप तैयार की जानी होगी। कामगारों की व्यक्तिगत स्वच्छता बनाए रखना, उत्पादन केंद्र एवं परिसर में और पैकिंग इकाई के अंदर स्वच्छता सुनिश्चित करना आदि का अनुपालन सहित हरेक नारियल उत्पाद के लिए उत्पादन प्रक्रिया विधि का संकलन तैयार करना होगा और अभिग्रहण एवं प्रमाणन हेतु अच्छी कृषि पद्धतियों के लिए तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण संबंधी दिशानिर्देश बनायी जानी होगी। नारियल के तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण संबंधी अच्छी कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूकता सृजित करने के लिए नियमित अंतराल में क्षमता निर्माण पहल आयोजित की जानी होगी ताकि उद्यमियों, कामगारों और दूसरे हितधारकों को लाभान्वित बनाए जा सके और सुरक्षित एवं स्वास्थ्यदायक नारियल उत्पादें सुनिश्चित किए जा सके।

नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों का प्रक्षेत्र स्तरीय अभिग्रहण

भले ही नारियल अनुसंधान संस्थानों ने अच्छी कृषि पद्धति के सिद्धांतों के अनुरूप पर्याप्त संख्या में प्रौद्योगिकियाँ विकसित की हैं, लेकिन भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद -केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा केरल में आयोजित अध्ययन से यह सूचित होता है कि अनुशंसित उत्पादन प्रौद्योगिकियों का अभिग्रहण संतोषजनक स्तर पर नहीं हो रहा है (तंपान एवं अन्य, 2021)। रोपण हेतु पेड़ों के बीच की अनुकूलतम दूरी का अनुसरण मात्र 30 प्रतिशत नारियल बागों में ही किया गया है। इसी प्रकार, नारियल जोतों में ड्रिप सिंचाई जैसी जल संरक्षण सिंचाई विधियों का अभिग्रहण भी बहुत कम हो रहा है। हकीकत यह है कि सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों की अत्यधिक कमी होने से नारियल की उत्पादकता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है, इसके बावजूद भी अधिकांश नारियल किसान (99 प्रतिशत) अपने नारियल पेड़ों के लिए सूक्ष्म पौष्टिकतत्वों का प्रयोग नहीं करते हैं। नारियल आधारित अंतर/मिश्रित खेती प्रणाली का अनुसरण भी लगभग 50 प्रतिशत से कम बागों में होता है जो यह सूचित

करता है कि समुचित विकास/विस्तार हस्तक्षेपों के ज़रिए नारियल आधारित अंतर/मिश्रित फसल प्रणाली को प्रचलित बनाने की गुंजाइश है, खास तौर पर लघु और सीमांत जोतों में। खाद्य उत्पादन बढ़ाने हेतु नारियल बागों में बहुफसल प्रणाली की संभावनाओं का लाभ उठाना अत्यंत महत्वपूर्ण हो गया है। एकीकृत खेती प्रणाली 15.73 प्रतिशत से कम नारियल बागों में ही अपनायी गयी है। किसानों के नारियल बागों में कीट और रोग प्रकोप की समस्या भी काफी गंभीर हो गया है। तथापि, एकीकृत कीट प्रबंधन विधि एक तिहाई से कम नारियल बागों में और एकीकृत रोग प्रबंधन विधि 10 प्रतिशत से कम बागों में ही अपनायी गयी है। वैसे ही, नारियल के मूल्यवर्धन हेतु प्रक्षेत्र स्तरीय प्रसंस्करण भी बहुत कम हो रहा है। किसानों द्वारा टिकाऊ उत्पादन प्रौद्योगिकियों का बहुत कम अभिग्रहण यह सूचित करता है कि नारियल में अच्छी कृषि पद्धति के अभिग्रहण को बढ़ावा देने हेतु हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है।

नारियल में अच्छी कृषि पद्धति को बढ़ावा देने हेतु रणनीति

नारियल किसान और उद्यमी विविध प्रकार के प्रौद्योगिकीय और सामाजिक-आर्थिक अड़चनों का सामना करते हैं जिसके फलस्वरूप उत्पादन और प्रसंस्करण के लिए अनुशंसित विधियों का अभिग्रहण बहुत कम स्तर पर होता है। नारियल किसानों द्वारा सामना की जा रही समस्याओं में शामिल हैं बाज़ार में नारियल और इसके मूल्यवर्धित उत्पादों के भाव में गिरावट/उतार-चढ़ाव, छितराए पड़े जोत, बाग में मालिक की अनुपस्थिति, नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूकता/जानकारी का अभाव, श्रमिकों की कमी और उच्च वेतन दर, सिंचाई सुविधाओं का अभाव, प्रसंस्करण अवसंरचना की कमी आदि। अतः, उत्पादकता में वृद्धि और सुस्थिरता तथा नारियल के सुरक्षित एवं स्वस्थ खाद्य और खाद्येतर उत्पाद सुनिश्चित करने के लिए नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के अभिग्रहण को बढ़ावा देने हेतु किसानों और उद्यमियों को समर्थन देने वाली नीतियाँ एवं कार्यक्रम कार्यान्वित करना अनिवार्य बन जाता है।

सबसे पहले देश के विविध नारियल उत्पादक क्षेत्रों में टिकाऊ नारियल उत्पादन हेतु अच्छी कृषि पद्धति के सिद्धांतों के अनुरूप उपलब्ध प्रौद्योगिकियों का नक्शा खींचना आवश्यक है ताकि अच्छी कृषि पद्धतियों के अभिग्रहण हेतु कृषि-पारिस्थितिकीय क्षेत्र वार दिशानिर्देश तैयार किया जा सके। वैसे ही, नारियल उत्पादों के उत्पादन और विपणन हेतु उपलब्ध कराई गयी प्रक्रिया विधि का भी खाका बनाना होगा ताकि सुरक्षित और स्वास्थ्यदायक नारियल उत्पाद सुनिश्चित करने हेतु अच्छी कृषि पद्धति के अभिग्रहण के लिए दिशानिर्देश बनाए जा सके।

अच्छी कृषि पद्धति के अभिग्रहण/प्रमाणन हेतु दिशानिर्देश बनाने के लिए नारियल अनुसंधान संस्थानों, विकास एजेंसियों, किसान उत्पादक संगठनों, उद्यमियों, फैब्रिकेटरों, कृषि आदान सामग्री एजेंसियों, प्रमाणन एजेंसियों, विपणन एजेंसियों, उधार संस्थानों और अन्य संगत हितधारकों को एक आम मंच पर एक साथ लाना होगा। नारियल विकास बोर्ड, जो कि देश में नारियल उद्योग के एकीकृत विकास हेतु अधिदेशित मुख्य एजेंसी है, अनुशंसित प्रौद्योगिकियों की सूची बनाने हेतु गतिविधियों का समन्वयन करने और इसके अभिग्रहण को प्रोत्साहित करने हेतु नीतियों एवं कार्यक्रमों को विकसित करने के लिए समर्थक संगठन के रूप में कार्य कर सकता है। एक बार नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के लिए दिशानिर्देश बनाए जाने के बाद और इसको बढ़ावा देने हेतु कार्रवाई की रूपरेखा तैयार किए जाने पर, नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के प्रमाणन हेतु उपयुक्त एजेंसियों की पहचान करना होगा और उन्हें प्रत्यायित करना होगा।

नारियल की टिकाऊ उत्पादकता के लिए जलवायु लचीले पद्धतियों पर ज़ोर देते हुए अच्छी कृषि पद्धतियों पर अनुसंधान को और सशक्त बनाने की आवश्यकता है। कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन सिफारिशों को विकसित करने हेतु अनुसंधान हस्तक्षेप भी अपेक्षित है। छितराए पड़े नारियल बागों के लिए उपयुक्त जुताई/खेती प्रक्रियाओं/पौधा संरक्षण/ताड़ारोहण उपस्करों और मशीनरियों का विकास करना आवश्यक हो गया है और इस क्षेत्र में अनुसंधान को और मज़बूत करना आवश्यक है।

भारत में नारियल की खेती लघु किसानों द्वारा की जाती है। इसलिए सामूहिक नज़रिए से नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों का अभिग्रहण करने हेतु संसाधनों की कमी महसूस करने वाले किसानों को सशक्त बनाने हेतु उपयुक्त समर्थन तंत्र अपेक्षित है। नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के बारे में जागरूकता/जानकारी सृजित करने के उद्देश्य से किसानों, श्रमिकों, उद्यमियों और दूसरे हितधारकों के लिए

क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना आवश्यक है। नारियल उत्पादन और प्रसंस्करण में अच्छी कृषि पद्धतियों के अभिग्रहण के हितलाभों, विशेषकर गैप प्रमाणित नारियल और इसके उत्पादों के विपणन में बेहतर मूल्य प्राप्त होने की संभावनाओं के बारे में किसानों और उद्यमियों को अवगत कराना होगा ।

उपयुक्त किस्मों के गुणवत्तायुक्त पौधों की उपलब्धता बढ़ाने के लिए नारियल क्षेत्र में किसान उत्पादक संगठनों द्वारा प्रबंधित विकेंद्रीकृत सामुदायिक नारियल नर्सरियों को बढ़ावा देने हेतु अनुकूल नीति सृजित करना होगा। टिकाऊ नारियल उत्पादन हेतु बाग में ताड़ों की संख्या अनूकूलतम बनाए रखने के लिए अधिक संख्या में ताड़ मौजूद नारियल बागों को पुनर्गठित करने के लिए विकास/विस्तार हस्तक्षेप बनाएं और कार्यान्वित करें।

नारियल बागों में ड्रिप सिंचाई जैसी जल संरक्षण सिचाई विधियों को बढ़ावा देने हेतु समुचित हस्तक्षेप अपेक्षित है। नारियल के मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन हेतु कृषि पारिस्थितिकी इकाई (एईयू) आधारित प्रौद्योगिकी पैकेज विकसित करने और इसके अभिग्रहण को आसान बनाने हेतु विकास/विस्तार हस्तक्षेपों की भी आवश्यकता है। नारियल के लिए अनुकूलित उर्वरक आदान सामग्रियों के उत्पादन और विपणन हेतु नारियल क्षेत्र के किसान उत्पादक संगठनों को बढ़ावा देना होगा और प्रशिक्षित किसान उत्पादक संगठनों को कृषि-सेवा केंद्रों से संबद्ध कराना होगा। वैसे ही, टिकाऊ नारियल उत्पादन के लिए जैविक/जैव आदान सामग्रियों के उत्पादन और विपणन हेतु महिला स्वयं सहायता समूहों/किसान समूहों को प्रोत्साहित करने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

नारियल बागों में कंद फसलें जैसी खाद्य फसलों पर ध्यान देते हुए अंतर/मिश्रित खेती पर हस्तक्षेप करने हेतु नारियल क्षेत्र के किसान उत्पादक संगठनों और महिला स्वयं सहायता समूहों को सहायता दी जा सकती है। अनुसंधान संस्थाओं में विकसित विविध प्रकार की नारियल आधारित एकीकृत खेती प्रणालियों के फ्रंट लाइन निदर्शन और नारियल किसानों द्वारा अपनायी गई सफल मोडलों को कृषि विज्ञान केंद्रों और किसान उत्पादक संगठनों की सक्रिय सहभागिता के साथ राज्य कृषि/बागवानी विभाग की प्रक्षेत्र स्तरीय इकाइयों के द्वारा व्यवस्थित करने की आवश्यकता है।

विस्तार समर्थन की क्षमता बढ़ाने हेतु व्यक्तिगत किसान से समूह/समुदाय आधारित विकेंद्रीकृत सहभागिता प्रणाली की ओर आदर्श बदलाव अपेक्षित है ताकि फसल के नुकसान से बचने के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों के अनुरूप एकीकृत कीट प्रबंधन/एकीकृत रोग प्रबंधन विधियों के अभिग्रहण को बढ़ावा दिया जा सके। नारियल के मूल्यवर्धन हेतु प्रक्षेत्र स्तरीय प्रसंस्करण बहुत कम हो रहा है और इसलिए, अच्छी कृषि पद्धतियों के अनुरूप मूल्यवर्धित नारियल उत्पादों का उत्पादन और विपणन करने हेतु नारियल आधारित उद्यमों को चलाने में नारियल क्षेत्र के किसान उत्पादक संगठनों को सुसाध्य बनाने के लिए हस्तक्षेप करना होगा ताकि नारियल खेती से आय बढ़ायी जा सके।

निष्कर्ष

टिकाऊपन सुनिश्चित करने और नारियल के सुरक्षित एवं स्वास्थ्यदायक खाद्य एवं खाद्येतर उत्पादों के लिए उत्पादन और तुड़ाई उपरांत प्रसंस्करण की अच्छी कृषि पद्धतियों का अभिग्रहण वर्तमान जलवायु परिवर्तन परिदृश्य के अंतर्गत अत्यधिक समीचीन होता है। देश के नारियल अनुसंधान संस्थानों द्वारा नारियल के टिकाऊ उत्पादन और उत्पादन उपरांत प्रसंस्करण के लिए अच्छी कृषि पद्धतियों के अनुरूप अधिक संख्या में प्रौद्योगिकियाँ उपलब्ध करायी गई हैं। टिकाऊ उत्पादकता के लिए जलवायु लचीली विधियों, कृषि पारिस्थितिकीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन सिफारिशें विकसित करने और छितराए पड़े नारियल जोतों के लिए उचित उपस्करों और मशीनरी विकसित करने पर ज़ोर देते हुए नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों पर अनुसंधान पहल को और सशक्त बनाना होगा। अच्छी कृषि पद्धति को बढ़ावा देने और किसानों एवं उद्यमियों को लाभान्वित बनाने में उपयुक्त विकास/विस्तार हस्तक्षेप के लिए अनुकूल नीति वातावरण सृजित करने हेतु हस्तक्षेप करना आवश्यक है। नारियल क्षेत्र में अनुसंधान और विकास/विस्तार संस्थाओं, किसान उत्पादक संगठनों/स्वयं सहायता समूहों, उद्यमियों/प्रसंस्करणकर्ताओं और दूसरे हितधारकों द्वारा गतिविधियों का प्रभावी कार्यान्वयन नारियल की अच्छी कृषि पद्धतियों के अभिग्रहण/प्रमाणन हेतु समुचित दिशानिर्देश बनाने और कार्यान्वित करने के लिए पूर्वापेक्षित है। ■

नारियल बागों में मासिक कार्य

अक्तूबर

रोपण

निचले क्षेत्रों में, नारियल पौधों का रोपण किया जा सकता है। पौधों के गड्ढ़ों में बारिश के पानी का जमाव रोक दें। उत्तर पूर्वी मानसून की शुरुआत के साथ तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में नव रोपण शूरू किया जा सकता है।

खाद प्रयोग

सिंचित परिस्थितियों में, यदि सितंबर के दौरान रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग नहीं किया गया हो तो अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग किया जा सकता है। जून के दौरान लगाए गए नारियल पौधों के लिए रासायनिक उर्वरकों का (सामान्य सिफारिश का दसवाँ भाग याने 100 ग्राम यूरिया, 200 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश और 200 ग्राम रॉक फोस्फेट) पहला प्रयोग किया जा सकता है। हमेशा यह अनुशंसा दी जाती है कि सामान्य सिफारिशों का अनुसरण करने के बजाय मिट्टी की जाँच करके इसके परिणाम के अनुसार रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें। मैगनीशियम की कमी के कारण जिन ताड़ों के पत्तों का रंग पीला दिखने लगा है, ऐसे ताड़ों के लिए दूसरे उर्वरकों के साथ साथ 0.5 कि.ग्रा मैगनीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

सिंचाई

पूर्वी और उत्तर-पूर्वी राज्यों में नारियल की खेती किए जाने वाले गैर परंपरागत क्षेत्रों में सुरक्षित सिंचाई के रूप में न्यूनतम तापमान 20^0 सें. से कम हो जाने पर नारियल ताड़ों की सिंचाई शुरू की जा सकती है। सिंचाई शुरू करने से पहले नारियल पेड़ के थालों में 1.8 मीटर के घेरे में कम से कम 15 सें.मी. की ऊँचाई तक मोटा पलवार लगाना चाहिए। नारियल की खेती किए जाने वाले शेष क्षेत्रों में मिट्टी में नमी की उपलब्धता और मानसून खत्म होने के आधार पर सिंचाई शुरू की जानी चाहिए।

हरी खाद प्रयोग

उत्तर पूर्व मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले तमिलनाडु जैसे क्षेत्रों में सनई (*क्रोटलेरिया जनसिया*) या ढैंचा (*सेसबानिया एकुलेटा*) या लोबिया (*विगना अनगुइकुलेटा*) या जंगली नील (*टेफ्रोसिया परपुरिया*) जैसी हरी खाद फसलें उगायी जा सकती हैं। एकल फसल के रूप में नारियल की खेती किए जाने वाले बागों में पेड़ों के बीच की जगह में हरी खाद फसलों की अनुशंसित बीजदर हैः सनई-प्रति हेक्टर 20 कि.ग्रा., ढैंचा-प्रति हेक्टर 30 कि.ग्रा., लोबिया-प्रति हेक्टर 25 कि.ग्रा. और जंगली नील-प्रति हेक्टर 15 कि.ग्रा.।

यदि अंतर फसलों की खेती की जा रही है तो 1.8 मीटर घेरे के नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाई जा सकती हैं। लोबिया और ढैंचा के लिए प्रति थाला बीज दर 100 ग्राम है जबकि अन्य हरी खाद फसलों के लिए प्रति थाला 75 ग्राम बीज बो सकते हैं।

हरी खाद फसल की खेती

खेती प्रक्रियाएं

यदि सितंबर में नहीं किया गया हो तो बागान को खरपतवार मुक्त रखने के लिए अंतर जगह की जुताई/ खुदाई की जानी चाहिए। यह ध्यान रखा जाए कि जुताई करते समय नारियल पेड़ों को कोई घाव न लगें।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी की निराई गुड़ाई करें। पाँच महीने आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से निकाल दें। नारियल पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। नारियल पौधों के लिए सिंचाई की जानी चाहिए। उत्तर-पूर्वी मानसून अच्छी तरह मिलने वाले क्षेत्रों में बीजफलों की बुआई की जा सकती है।

पलवार लगाना

यदि सितंबर के दौरान पेड़ों के थालों में पलवार नहीं लगाया गया हो तो अब पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बाग में उपलब्ध गिरे सूखे नायिल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।

नारियल के पत्तों से पलवार

नारियल में कीट और रोग प्रबंधन

लगातार शुष्क और नम अवधि के साथ बीच बीच में वर्षण के कारण फलों पर कीटों और रोगों का प्रकोप अधिक होता है जिसके लिए व्यवस्थित हस्तक्षेप की ज़रूरत होती है। लगातार बारिश मिलने वाले और छोटी अवधि में शुष्क गरम मौसम होने वाले क्षेत्रों में अपक्व फलों का गिराव और बुतामों का झड़ना गंभीर होते देखा गया है। सामान्य रूप से इस चरण में बहुत कम संख्या में फल लगते हैं। जलवायु संवेदनशीलता के साथ साथ ये समस्याएं और भी गंभीर हो जाती हैं और इन समस्याओं से निपटने के लिए पौष्टिकतत्वों का विभाजित करके प्रयोग व्यवस्थित करना चाहिए और इन फल कीटों और रोगों से निपटने के लिए सामयिक हस्तक्षेप करना इस महीने के दौरान अनिवार्य है। नारियल एरियोफिड माइट, कोरिड बग जो फल को झुर्रिदार बनाता है और फल छेदक कीटों का प्रकोप देश के कुछ नारियल उत्पादक इलाकों में रिपोर्ट किया गया है। फल पर होने वाली इन समस्याओं की प्रबंधन विधियाँ आगे बतायी जाती हैं:

नारियल एरियोफिड माइट, *एसेरिया गुर्रेरोनिस*

नारियल एरियोफिड माइट एक आक्रामक कीट है जिसके बारे में सबसे पहले 1998 में रिपोर्ट की गई थी और जाड़े के मौसम पूर्व इसका प्रकोप अधिक होता है। यह मकड़ी परिवार का कीट है जिसके दो युगल पैर होते हैं। इसका आकार इतना छोटा है (200-250 माइक्रोन) कि माइक्रोस्कोप से ही इसको देख सकते हैं। यह 100-150 अंड़े डालता है और इसका जीवनचक्र 7-10 दिन में पूरा हो जाता है। परागण के बाद विकासशील फलों पर माइट का प्रकोप तुरंत होता है और यह पत्राभ के अंदर सीमित रहता है और परिदलपुंज के निचले भाग के मेरिस्टमी ऊतकों को खा लेता है। परिदलपुंज के नीचे लंबाकार में सफेद लकीरें दर्शित होती हैं जो कि इसके प्रकोप का पहला लक्षण है। कुछ ही दिनों में परिदलपुंज के चारों ओर पीला मंडल प्रकट होता है जो मस्से जैसा बन जाता है और अंत में वहाँ पर दरारें, छेद और गोंदार्ति(गम्मोसिस) उत्पन्न होता है। बुतामों और अपक्व फलों का झड़ना और फलों की कुरूपता आदि माइट के प्रकोप के अन्य लक्षण हैं।

फलों पर माइट का प्रकोप

प्रबंधन

- सूखे शूकीछद, पुष्पक्रम के अपशिष्ट, गिरे फल आदि को हटाएं और इन्हें मिट्टी में गाड़ देना या जला देना कीट की आबादी कम करने के लिए अनिवार्य है।
- नीम तेल-लहसुन-साबुन मिश्रण 2 प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में नीम तेल 200 मि.ली., साबुन 50 ग्राम और लहसुन 200 ग्राम का मिश्रण) या 0.004 प्रतिशत की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम छिड़कना या 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10000 पीपीएम तुल्य मात्रा में पानी के साथ जड़ों द्वारा साल में तीन बार याने मार्च-अप्रैल, अक्तूबर-नवंबर और दिसंबर-जनवरी के दौरान देना अनुशंसित है। रोगरोधी उपाय के रूप में गर्मियों में तापमान बढ़ने से पहले का प्रयोग भी उचित होता है।
- नीम दवा के साथ साथ प्रति ताड़ प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर 1.6 X 10^8 सीएफयू माइट पर रोगजनक फफूँद (एसेरो पैथोजन) *हिरसुटेल्ला थोमसोनी* निहित टैल्क आधारित दवा का प्रयोग।
- बाग में कल्प हरिता (कुलशेखरम लंबे से चयनित) किस्म पर माइट का प्रकोप अत्यंत कम पाया गया है।
- अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग, जैवभार का पुनर्चक्रण, नारियल थालों में हरी खाद फसलें उगाना और इनमें फूल निकलने पर उन्हें उखाड़कर वहीं मिट्टी में मिला देना, गर्मी के समय सिंचाई और समुचित उपायों से मिट्टी और जल संरक्षण करने से ताड़ों का स्वास्थ्य सुधरता है और कीट का प्रकोप कम होता है।

कोरिड बग, *पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस*

निम्फ और वयस्क कीट कोमल बुतामों (1-3 महीने आयु के) के मेरिस्टमी क्षेत्र को छेद लेता है और खाए गए स्थानों के चारों ओर विष इंजेक्ट करता है जिससे ऊतकक्षय होता है। काटे गए छेद बढ़कर ऊतकक्षयी घाव बन जाता है और जब झड़कर गिरे बुतामों के परिदलपुंज भाग को हटाया जाता है तो धुरी आकार के धब्बे प्रकट होते हैं। परागण के पहले ही मादा फूलों पर आक्रमण होता है और ये फूल सूख जाते हैं और शिखर पर पुष्पक्रम में ऐसे फूलों को देखा जा सकता है और इसके परिणामस्वरूप बंध्या फलों का उत्पादन होता है। अधिकांश कीट प्रकोपित बुताम और डाब गिर जाते हैं। गुच्छों पर शेष फलों के छिलकों पर झुर्रियाँ और शिकन नज़र आने लगते हैं और फल कुरूप हो जाते हैं।

प्रबंधन

- अंड़े तथा अवयस्क कीटों का नाश करने के लिए शिखर की सफाई करें।
- एज़ाडिरेक्टिन 300 पीपीएम (निंबिसिडिन) का 0.0004 प्रतिशत की दर पर (प्रति लीटर 13 मि.ली.) छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है। मई-जून और सितंबर-अक्तूबर के दौरान 1-5 महीने की आयु के नारियल गुच्छों पर दो बार छिड़काव करना संतोषजनक रूप से कीट का नियंत्रण करने के लिए अनिवार्य होता है।
- बाग में कोरिड बग के कुदरती शत्रुओं में काई (वीवर) चींटी, *ओयकोफिला स्मार्गडीना* सबसे प्रभावी परभक्षी पाए गए हैं।
- दो अंडा परजीवियों जैसे *क्राइसोकैल्सिसा ओविसेप्स* और *ग्रयोनहोमोसेरी* को संभाव्य अंडा परजीवी के रूप में पहचाने गए हैं। बाग से एकत्रित कुल अंडों का 40 प्रतिशत तक परजीवियों का आहार बनते पाया गया है।
- गंभीर प्रकोप के मामले में परागण किए गए गुच्छों पर प्रति लीटर 0.3 मि.ली. की दर पर क्लोरएंट्रानिलिप्रोल या प्रति लीटर 1.0 मि.ली. की दर पर लैम्बडा साइहलोथ्रिन का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

फल छेदक कीट, *साइक्लोडस ओम्मा*

पोल्लाची (तमिलनाडु) के कुछ बागानों में फल छेदक का प्रकोप पाया गया है। यह एक छिटपुट कीट है जो आमतौर पर बौने जीनप्ररूपों और संकरों में पाया जाता है। नत्रजनयुक्त उर्वरकों के अतिरिक्त पोषण से जो रसीलापन आ जाता है वह भी कीट के प्रकोप का प्रमुख कारण है। परागण के बाद बुतामों को तथा अपक्व फलों को छेदकर इल्ली अंदर घुस जाती है और रात के समय इसके भीतरी

भागों को खा जाती है जिसके फलस्वरूप बुताम झड़ जाते हैं। जिन ताड़ों पर कृत्रिम परागण होता है, वे इस कीट के प्रकोप का शिकार जल्दी हो जाते हैं। ताड़ के शिखर के अपशिष्टों पर प्यूपा अवस्था में कीट पाए जाते हैं।

प्रबंधन

- शिखर की सफाई करके अपक्व अवस्था के कीटों को हटाना चाहिए।
- रसीलापन से बचने के लिए नत्रजनयुक्त उर्वरकों का प्रयोग विवेकपूर्ण रूप से तथा आवश्यकता के आधार पर करना चाहिए।
- हस्त चालित स्प्रेयर का प्रयोग करके कीट-रोगाणु *बैसिलस थुरिंजियेंसिस* प्रति लीटर 20 ग्राम की दर पर और नीम तेल 0.5 प्रतिशत (10 ग्राम साबुन पाउडर के साथ 5 मि.ली. प्रति लीटर) का छिड़काव करने से कीट का प्रकोप कम होता है।

कली सड़न

कतिपय नम क्षेत्रों में कली सड़न रोग का शिकार होकर सैकड़ों पेड़ मर जाते हैं। भारत में कली सड़न रोग का प्रकोप एक प्रतिशत से कम रिपोर्ट किया गया है। रोगाणु कलिका क्षेत्र पर वार करता है जिससे कलिका क्षेत्र सड़ने लगता है और ताड़ मर जाते हैं। पीले रंग का होकर कोंपल का मुर्झाना इस रोग का पहला प्रकट लक्षण है। कोंपल भूरे रंग का हो जाता है और नीचे की ओर झुक जाता है। प्रकोपित कोंपल को आसानी से खींचकर निकाला जा सकता है क्यों कि इसका मूल भाग पूरी तरह सड़कर बदबू उत्पन्न करने लगता है। 20^0-24^0 सेल्शियस तापमान और 98-100 प्रतिशत के बीच आपेक्षिक आर्द्रता कली सड़न रोग के लिए अनुकूल वातावरण पैदा करता है। बारिश के मौसम में इसप्रकार के अनुकूल दिन लगातार बना रहना यह निर्धारित करता है कि रोग का विकास और प्रकोप की तीव्रता कहाँ तक हो सकता है। फाइटोफ्थोरा रोग अत्यंत घातक होने के कारण मानसून के दौरान ताड़ के स्वास्थ्य का खासतौर पर कोंपल वाले क्षेत्र का निकट संवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है।

कली सड़न रोग प्रकोपित ताड़

प्रबंधन

- नियमित रूप से शिखर की सफाई और मानसून की शुरुआत में रोगरोधी उपाय के रूप में शिखर पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करना और 35 से 40 दिनों बाद एक बार फिर छिड़काव करना कली सड़न रोग का प्रकोप कम करने के लिए सहायक होता है।
- बाग की सफाई और बारिश के मौसम में समुचित जलनिकासी सुविधा प्रदान करना।
- मानसून शुरू होने के एकदम पहले सबसे भीतरी पर्ण कक्षों में ट्राइकोडर्मा (*ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* सीपीटीडी 28) संपुष्ट कयर गूदा खली रखनी चाहिए और दो महीने बाद एक बार फिर यह दोहराना चाहिए।
- एक तेज़ चाकू से कोंपल के पूरे सड़े हुए भाग को काटकर हटाएं और घाव पर 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट का लेप करें और बारिश का पानी अंदर आने से बचाने के लिए घाव को एक पोलिथीन शीट से ढक दें। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षा आवरण को वैसे ही रहने दें।

फलों का गिराव

फलों के गिरने के कई कारण हो सकते हैं जैसे कि आनुवंशिक/कायिक, पौष्टिक असंतुलन/कमी, परागण ठीक तरह से न होना, कीटों या माइट का प्रकोप, जल जमाव/सूखा या फफूँद का प्रकोप आदि। फल गिराव के कारक प्रमुख फफूँद प्रजातियाँ *फाइटोफ्थोरा पामिवोरा* और *लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे* हैं। *फाइटोफ्थोरा पामिवोरा* के प्रकोप से फलों पर जलसिक्त घाव प्रकट होता है।

ये घाव भूरे रंग के हो जाते हैं और फल गुच्छों से अलग हो जाते हैं। फाइटोफ्थोरा का प्रकोप बारिश के

मौसम में और उच्च आर्द्रता वाले क्षेत्रों में आमतौर पर पाया जाता है।

फलों पर *लैसियोडिप्लोडिया थियोब्रोमे* का प्रकोप होने पर उस पर गहरे धूसर रंग से भूरे रंग के घाव प्रकट हो जाते हैं जिसकी सीमाएं लहरिया और विषम होती हैं। जैसे जैसे प्रकोप बढ़ता है फल की मध्यफलभित्ति और भ्रूणपोष सड़कर बदरंग हो जाते हैं। गंभीर प्रकोप होने पर फल शुष्कित, झुर्रिदार और कुरूपित हो जाता है और पकने से पहले ही गिर जाता है। माइट प्रकोपित फलों पर *लैसियोडिप्लोडिया* का प्रकोप काफी गंभीर हो जाता है और सालभर रहता है। शुष्क इलाकों में भी इसका प्रकोप देखा गया है।

प्रबंधन

- प्रकोपित फलों को निकालकर नष्ट कर देना।
- मानसून शुरू होने से एकदम पहले शिखर की सफाई करें और गुच्छों पर एक प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

नवंबर

पौधों की सिंचाई

पौधों को ड्रिप या थाला सिंचाई विधि से पानी देना चाहिए। यदि ड्रिप सिंचाई अपनाई जा रही है तो प्रति दिन प्रति पौध औसतन 10 लीटर पानी देना चाहिए। थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियों के ज़रिए चार दिनों में एक बार 40 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।

वयस्क ताड़ों के लिए सिंचाई

उत्तर पूर्वी मानसून बारिश मिलने वाले इलाकों को छोड़कर शेष इलाकों के नारियल बागों में सिंचाई शुरू की जा सकती है। उन क्षेत्रों के नारियल बागों में भी सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए जहाँ उत्तर पूर्व मानसून से पर्याप्त मात्रा में बारिश प्राप्त नहीं होती है (यदि दस दिनों से अधिक बारिश नहीं मिल रही हो तो)।

यदि थाला सिंचाई विधि अपनायी गयी हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।

नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। पेड़ के तने से एक मीटर के घेरे में समान दूरी में 1'x1'x1' आकार के चार छोटे गड्ढ़े खोदने चाहिए। गड्ढ़ों को कयर गूदे से भरना चाहिए। पोलिथीन पाइप की नली के ज़रिए इन गड्ढ़ों की उप सतह पर ड्रिपर/माइक्रोट्यूब स्थापित किया जाना चाहिए। रेतीली मिट्टी में ड्रिपिंग पाइंटों की संख्या छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों में यह चार

नारियल पौधों की सिंचाई

होनी चाहिए। ड्रिप सिंचाई प्रणाली से प्रति दिन प्रति ताड़ 30-45 लीटर पानी की व्यवस्था की जानी चाहिए।

जल निकासी की व्यवस्था

जिन इलाकों में उत्तर पूर्वी मानसून प्राप्त होता है उन इलाकों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित की जानी चाहिए। मिट्टी के प्रकार और भौम-जल स्तर के अनुसार समुचित आकार के, कम से कम 50 सें.मी. गहरी और चौड़ी जल निकासी नाली या तो हाथ से या यांत्रिक विधि से बनायी जा सकती है। ताड़ों के हरेक दो कतारों के लिए जल निकासी नाली का निर्माण करना होगा।

खाद प्रयोग

नारियल पेड़ों के लिए ड्रिप फेर्टिगेशन शुरू किया जाए। यूरिया और म्यूरिएट ऑफ पोटेश जैसे जल में घुलनशील उर्वरक ड्रिप सिंचाई विधि के साथ दी जा सकती है। नारियल पेड़ों के लिए सामान्य सिफारिश के अनुसार ये उर्वरक (अनुशंसित मात्रा का 50 प्रतिशत याने प्रति वर्ष प्रति ताड़

खाद प्रयोग

के लिए 545 ग्राम यूरिया और 1000 ग्राम म्यूरिएट ऑफ पोटेश) मासिक फेर्टिगेशन कार्यक्रम के ज़रिए दो तुल्य भागों में दी जा सकती है। किंतु, रासायनिक उर्वरकों की मात्रा मिट्टी की जाँच के परिणामों और लक्षित उपज के आधार पर तय की जानी चाहिए।

जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाती है वहाँ थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग किया जाए।

मैग्नीशियम की कमी के कारण जिन नारियल पेड़ों के पत्ते पीले पड़ गए हो उनके थालों में 0.5 कि.ग्रा. मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग किया जा सकता है।

हरी खाद का प्रयोग

उत्तर पूर्वी मानसून का लाभ प्राप्त होने वाले क्षेत्रों में हरी खाद के 50 प्रतिशत पौधों में फूल खिलने लगे तो इनकी जुताई करके नारियल पेड़ों के बीच की जगह पर मिट्टी में मिलाया जा सकता है। इसी प्रकार, नारियल थालों में उगाए जाने वाले हरी खाद पौधों को भी उखाड़के मिट्टी में मिला देना चाहिए।

मातृ ताड़ों का चयन

गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्रियाँ उत्पादित करने के लिए बीजफल एकत्रित करने हेतु मातृ ताड़ों का चयन करें।

लंबी किस्मों में, बीजफलों का एकत्रण उन ताड़ों से किया जाना चाहिए जिनकी आयु 20 वर्ष से अधिक हो, पैदावार बारानी और सिंचित परिस्थितियों में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 80 और 120 नारियल से अधिक और फलों का वज़न 600 ग्राम तथा खोपरे का वज़न 150 ग्राम या इससे अधिक हो। यही नहीं ताड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और ये रोगमुक्त हों। पेड़ पर चौडे पर्णाधार के साथ छोटा और मज़बूत पर्णवृंत होने चाहिए जो तने से मज़बूती से जुड़ा हुआ हो। गुच्छे का डंठल छोटा, मोटा एवं मज़बूत हो और नीचे की ओर लटकने या झुकने की प्रवृत्ति नहीं दर्शानी चाहिए। ऐसे ताड़ों को न चुनें जिस पर बंध्या फल लगता हो या अधिक संख्या में अपक्व फल का गिराव हो।

अधिक आयु के याने 60 वर्ष से अधिक आयु वाले ताड़ों को और खाद के गड्ढे जैसे अनुकूल परिस्थितियों में बढ़ने वाले ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। जिन ताड़ों पर एकांतर वर्षों में फल लगता हो, ऐसे ताड़ों को भी नहीं चुनना चाहिए। बौनी किस्मों में 12 साल या इससे अधिक आयु के तथा बारानी और सिंचित परिस्थिति में प्रति वर्ष प्रति ताड़ क्रमशः 60 और 100 से अधिक फल देने वाले ताड़ों से बीजफल एकत्र किया जा सकता है। यही नहीं पेड़ पर कम से कम 30 पत्ते होने चाहिए और फल का वज़न 400 ग्राम से अधिक होना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

- नर्सरी से खरपतवार निकाल देना चाहिए।
- पाँच महीने की आयु के अनंकुरित फलों और मृत अंकुरों को नर्सरी से हटाना चाहिए।
- नारियल के पत्तों या सूखे घास से या हरी खाद फसल उगाकर जीवित पौधों से नर्सरी में पलवार लगाया जा सकता है।
- सिंचाई की व्यवस्था करें।
- कीटों और रोगों के खिलाफ आवश्यकता के अनुसार पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। यदि दीमक का प्रकोप पाया जाए तो नर्सरी में प्रति लीटर 2 मि.ली. की दर पर क्लोरपाइरिफोस से मिट्टी को शराबोर करना चाहिए। नारियल नर्सरी को सफेदमक्खी के प्रकोप से बचाने के लिए नारियल पत्तों पर पानी का छिड़काव किया जा सकता है।

पलवार लगाना

यदि पहले नहीं किया गया हो तो नारियल थालों में पलवार लगाया जा सकता है। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध सूखकर गिरे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है। बिहार, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़

और पूर्वोत्तर राज्यों जैसे अपरंपरागत इलाकों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए थालों में मोटी परत में पलवार लगाएं। ऐसे क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव को बेअसर करने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है।

पौधा संरक्षण

वर्तमान में, अभूतपूर्व मौसमीय अनिश्चितताओं के कारण नारियल पर कीटों के नुकसान स्तर पर भारी परिवर्तन देखा गया है। प्रायद्वीपीय और पूर्वोत्तर भारत में आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेदमक्खी *(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस मार्टिन)*, कर्नाटक में कृष्ण शीर्ष इल्ली *(ओपिसिना एरेनोसेल्ला वाकर)* और आँध्र प्रदेश और कर्नाटक में स्लग इल्ली (*डार्ना नरेरिया मूर*) का प्रकोप इस तथ्य के समर्थन के उत्तम दृष्टांत हैं। गैंडा भृंग *(ओरिक्टस रिनोसेरस लिन.)* और लाल ताड़ घुन *(रिंकोफोरस फेरुजिनियस ओलिवर)* सर्वव्यापी कीट है जो भारत के प्रायद्वीपीय क्षेत्रों में मानसून और मानसून के पश्चात् प्रमुख रूप से पाया जाता है। उत्तर-पूर्वी मानसून के दौरान घातक शोषक कीट कोरिड बग *(पैराडैसिनस रोस्ट्रेटस डिस्टंट)* का प्रकोप पाया जाता है जिससे हम अनजान रहते हैं। कम से कम 2-3 गुच्छों पर इसका प्रकोप होता है जिससे सारा बुताम गिर जाते हैं और फलहीन गुच्छे रह जाते हैं। कली सड़न रोग, फलों का गिराव, पत्ता सड़न, तना स्रवण और मूल तना विगलन/*गैनोडेर्मा* मुर्झा जैसे रोगों से भी नारियल को नुकसान होता है। बदलती जलवायु परिस्थितियों में नारियल पर कीटों और रोगों के प्रकोप पर नियंत्रण पाने के लिए व्यवस्थित रूप से अनुवीक्षण करना अत्यंत अनिवार्य है। रोगों और कीटों के प्रकोप की पहचान करने के लिए नारियल बागों में नियमित निरीक्षण और अनुवीक्षण करना चाहिए और फसल को नुकसान होने से बचाने के लिए आवश्यकता आधारित और समुचित पौधा संरक्षण उपाय अपनाना चाहिए। नवंबर महीने के लिए कीटों और रोगों के प्रबंधन हेतु अनुशंसाएं नीचे दी गई हैं:

एकीकृत कीट प्रबंधन

गैंडा भृंग

- बीटल हुक का प्रयोग करके गैंडा भृंगों को निकालकर यांत्रिक विधि से इन पर नियंत्रण पा सकता है। भृंगों को निकालते समय ताड़ की वृद्धि बिंदु को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए।
- रोगरोधी उपाय के रूप में प्रति ताड़ सबसे भीतरी तीन पर्णकक्षों को 250 ग्राम की दर पर चूर्णित नीम खली/चालमुगरा (*हाइड्रोकार्पस* प्रजाति/पोंगमिया) खली समान मात्रा में महीन रेत मिलाकर भरें।
- सबसे भीतर के तीन पर्णकक्षों में 4 ग्राम की नैफ्थलीन गोलियाँ (प्रति ताड़ 12 ग्राम) हरेक पर्णकक्ष में रखकर इसे मिट्टी से ढकना चाहिए।
- क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल ए.आई.0.4 प्रतिशत (5 ग्राम) या फिप्रोनिल (3 ग्राम) या भा.कृ.अनु.प.-केन्द्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित वनस्पति खली (2 ग्राम) निहित छिद्रित सैशे रखें।
- गोबर/कंपोस्ट गड्ढों में भांट *(क्लीरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम लिन.)* नामक खरपतवार मिला दें।
- प्रजनन स्थानों को हरी मस्कार्डिन कवक *(मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि)* से उपचारित करें।

लाल ताड़ घुन

- ताड़ों को घाव लगने से बचें, क्योंकि इससे भृंग अंडा डालने के लिए आकर्षित हो जाएगा। यदि कोई यांत्रिक क्षति लगी हो तो इसे कोल तार से उपचारित करें।
- पत्तों को काटते समय पर्णवृंत को तने से 120 सें.मी. की लंबाई में छोड़कर काटना चाहिए ताकि तने पर घुन का प्रवेश रोका जा सके।
- कीट प्रकोप की गंभीर स्थिति में ताड़ों को काटकर जलाने से तने पर बसे विविध अवस्था वाले कीटों का नाश किया जा सकता है।
- गैंडा भृंग की रोकथाम हेतु पर्णकक्ष भरने के उपाय का जो सुझाव दिया जाता है इसे अपनाना अनिवार्य है

क्योंकि यह कीट तने पर लाल ताड़ घुन के प्रवेश के लिए रास्ता बना देता है।

- यदि नुकसान शिखर पर लगा हो तो नुकसानग्रस्त ऊतकों को निकाल देना चाहिए और कीटनाशी घोल, इमिडाक्लोप्रिड (0.02 प्रतिशत) प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली. की दर पर डाल दें। यदि घुन तने से प्रवेश करता है तो तने पर लगा छेद सीमेंट/कोल तार से बंद करें और बरमा की सहायता से सबसे ऊपर का छेद तिरछा बनाकर कीप से इस छेद में कीटनाशी घोल डाल दें।

पत्ता भक्षी इल्ली

- बुरी तरह से कीटग्रस्त और सूखे 2-3 बाहरी पत्तों को काटकर जला दें ताकि कीट का फैलाव रोका जा सके।
- संतुलित मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और जैविक खादों के प्रयोग के ज़रिए मिट्टी और प्रकोपित ताड़ का स्वास्थ्य सुधार सकता है।
- बाग में इस कीट का कुदरती शत्रु जीव काफी अधिक संख्या में रहते हैं, इसलिए *ओपिसीना एरेनोसेला* के प्रबंधन के लिए सामान्यतया रासायनिकों की सिफारिश नहीं की जाती है। इस कीट के लार्वा और प्यूपा की दशा कई परभक्षियों का आहार है, इसलिए कीट का जैविक नियंत्रण प्रभावी और व्यवहार्य प्रणाली होता है। विविध अवस्था वाले परजीवीयों का, जैसे लार्वा परजीवी *गोनियोज़स निफैंटिडिस* (बेथिलिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, *ब्राकोन ब्रेविकोर्निस* (ब्रैकोनिडे) प्रति ताड़ 20 परजीवी की दर पर, पूर्वप्यूपा परजीवी *एलैसमस निफैंटिडिस* (एलास्मिडे) 49/100 पूर्वप्यूपा की दर पर और प्यूपा परजीवी *ब्रेकिमेरिया नोसटोय* (कैल्सिडिडे) 32/100 प्यूपे की दर पर, समुचित समय पर बाग में छुड़ाने से प्रभावी रूप से इस कीट का टिकाऊ प्रबंधन मुम्किन पाया गया है। बाग में विविध अवस्था वाले कीटों पर नियंत्रण पाने के लिए परजीवियों को एक साथ छोड़ना भी अपेक्षित है। परजीवियों को छुड़ाने से पहले लार्वा मल पर उनका अनुकूलन बाग स्तर पर परजीविता बढ़ाने के लिए उचित है।

पत्ता भक्षी इल्ली

एरियोफिड माइट

- सबसे बाहरी परागित पाँच नारियल गुच्छों पर नीम तेल - लहसुन - साबुन मिश्रण दो प्रतिशत गाढ़ता पर (10 लीटर पानी में 200 मि.ली. नीम तेल, 50 ग्राम साबुन और 200 ग्राम लहसुन मिश्रित करके) छिड़क दें।
- या प्रति लीटर पानी में 4 मि.ली. की दर पर 1 प्रतिशत एज़ाडिरेक्टिन निहित नीम दवा का छिड़काव करें।
- या 800 लीटर पानी में पाम तेल (200 मि.ली.) और सल्फर (5 ग्राम) के घोल का छिड़काव करें।
- 10 मि.ली. की दर पर एज़ाडिरेक्टिन 10,000 पीपीएम + 10 मि.ली. पानी जड़ों द्वारा देना भी प्रभावी है।
- खादों और उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के साथ साथ 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग भी अनुशंसित है।

कोरिड बग

- परागित गुच्छों पर नीम तेल-साबुन घोल (0.5 प्रतिशत) का छिड़काव करें। एक लीटर पानी में 5 मि.ली. नीम तेल और 8 ग्राम धुलाई का साबुन मिलाकर यह घोल तैयार किया जा सकता है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- पत्तों पर रासायनिक कीटनाशी का छिड़काव नहीं करना चाहिए।
- कज्जली फफूँद की परत को निकालने के लिए पत्तों पर एक प्रतिशत कलफ घोल का प्रयोग करें।
- गंभीर प्रकोप की स्थिति में, नीम तेल 0.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और किसी भी कीटनाशी की अनुशंसा नहीं दी जाती है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी

- वयस्क सफेद मक्खियों को फँसाने के लिए ताड़ के तने पर पीला चिपचिपा फँदा स्थापित करें।
- परजीवियों *(एनकार्सिया गुआडेलूप)* के प्रवर्धन को बढ़ावा दें और परजीवीकृत प्यूपे को सफेद मक्खी के प्रकोप की शुरुआत वाले स्थानों में पुनः छोड़ दें।
- बाग में ही कज्जली फफूँद भक्षी कीट *लियोक्रिनस निलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करें।

एकीकृत रोग प्रबंधन

कली सड़न

- कोंपल के रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह निकाल दें। सड़े हुए हिस्सों को हटाने और अच्छी तरह साफ करने के लिए यदि आवश्यक हो तो कोंपल के निकट के दो या तीन स्वस्थ पत्तों को भी काट दें। प्रकोपित ऊतकों को हटा देने के बाद 10 प्रतिशत बोर्डो पेस्ट लगाएं और घाव को पोलिथीन शीट से ढक दें ताकि बारिश का पानी अंदर न घुस जाए। सामान्य अंकुर निकलने तक सुरक्षित रूप से ढककर रखें।
- निकाले गए प्रकोपित ऊतकों को जला दें या गहरे गडढ़े खोदकर मिट्टी में गाढ़ दें।
- आसपास के ताड़ों पर 1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण का छिड़काव करें।

तना स्त्रवण

- पेड़ के तने के निकट कचरा न जलाएं।
- तने पर घाव लगने न दें।
- छेनी से रोगग्रस्त ऊतकों को पूरी तरह हटाकर घाव पर 5 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल (100 मि.ली. पानी में 5 मि.ली.) का लेप करें और 0.1 प्रतिशत घोल से प्रति पेड़ 25 लीटर की दर पर थालों को शराबोर करें।
- तने पर स्राव निकलने वाले भागों पर *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* के टैल्क आधारित दवा के पेस्ट से लेप करें (25 लीटर पानी में 50 ग्राम *ट्राइकोडर्मा* मिलाकर पेस्ट तैयार किया जा सकता है)।
- मिट्टी में प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* से संपुष्ट नीम खली का प्रयोग करें और अनुशंसित सिंचाई/नमी संरक्षण विधियाँ अपनाएं।

पत्ता सड़न

- कोंपल के सड़े हुए भाग और आसपास के 2-3 पत्तों को हटाएं और कोंपल के चारों ओर सबसे निचले भाग पर प्रति ताड़ 300 मि.ली.पानी में 2 मि.ली. हेक्साकोनाज़ोल 5 ईसी निहित फफूँदनाशी घोल या प्रति ताड़ 500 मि.ली. पानी में 50 ग्राम की दर पर *स्यूडोमोनस फ्लूरसेंस* या *बैसिलस सब्टिलिस* के टैल्क आधारित दवा का प्रयोग करें।
- गैंडा भृंग के प्रकोप की रोकथाम हेतु उपाय अपनाएं।

मूल तना विगलन/*गैनोडेर्मा* मुर्झा

- मृत और रोग की गंभीर स्थिति वाले ताड़ों को हटा दें और इन ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें।
- थाले के चारों ओर 2 मीटर की गहराई और एक मीटर की चौडाई में गड्ढ़े खोदकर रोगग्रस्त ताड़ों को स्वस्थ ताड़ों से अलग करें।
- प्रकोपित बागों में बाढ़ सिंचाई या जुताई न करें ताकि संरोप का फैलाव रोक सके।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ 50 कि.ग्रा. गोबर की खाद या हरे पत्ते का प्रयोग करें।
- प्रति ताड़ 5 कि.ग्रा. की दर पर नीम खली संपुष्ट ट्राइकोडेर्मा हर्जियानम का प्रयोग करें और चार दिनों में एक बार ताड़ों की सिंचाई करें और थालों में पलवार लगाएं।
- प्रति ताड़ 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) जड़ों द्वारा दें या 40 लीटर घोल की दर पर 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल/1 प्रतिशत बोर्डो मिश्रण से मिट्टी को शराबोर करें।

दिसंबर

बीजफलों का एकत्रीकरण और भंडारण

पहचाने गए मातृ ताड़ों से बीजफलों की तुड़ाई सावधानी से की जानी चाहिए और फल के अंदर का पानी सूख न जाए, इसके लिए समुचित रूप से भंडारण करना चाहिए। जहाँ भी ज़मीन ठोस हो, फलों की तुड़ाई करके रस्सी के सहारे उसे नीचे लाना चाहिए।

नर्सरी प्रबंधन

नर्सरी के पौधों के लिए सिंचाई की व्यवस्था की जानी चाहिए। जहाँ भी आवश्यक हो खरपतवार निकाल देना चाहिए। नारियल के पत्तों से या सूखे घास से या फिर थालों में हरी खाद फसलों की खेती करके सजीव पौधों से पलवार लगाया जा सकता है। यदि नर्सरी में दीमक का प्रकोप पाया जाता है तो क्लोरपाइरिफोस (2 मि.ली. क्लोरपाइरिफोस एक लीटर पानी में घोलकर) से शराबोर करना चाहिए। स्पाइरलिंग सफेद मक्खी के प्रकोप से बचने के लिए नारियल पौधों के पत्तों के निचले भाग पर पानी का छिड़काव करना चाहिए। नर्सरी से पाँच महीने की आयु के अनंकुरित और मृत पौधों को निकालें।

नारियल नर्सरी

खाद प्रयोग

- सिंचित बागों में दिसंबर के दौरान उर्वरकों की अनुशंसित मात्रा के एक चौथाई भाग का प्रयोग करें।
- जहाँ भी व्यवहार्य हो मासिक कार्यक्रम के अनुसार नारियल बागों में ड्रिप फेर्टिगेशन जारी रखें।
- जहाँ भी बोरोन की कमी पायी जाए नारियल पेड़ों के थालों में 100 ग्राम बोरेक्स का प्रयोग करें।
- मैग्नीशियम की कमी के कारण नारियल पत्ते पीले पड़ जाए तो थालों में प्रति ताड़ 500 ग्राम मैग्नीशियम सल्फेट का प्रयोग करें।

पलवार लगाना और अंतरखेती क्रियाएं

- यदि पहले नहीं किया गया हो तो थालों में पलवार लगाएं। पलवार लगाने के लिए नारियल बागों में उपलब्ध गिरे सूखे नारियल पत्तों का उपयोग किया जा सकता है।
- नारियल बागों में पहले जो टीले बनाए गए थे उन्हें गिरा दें।

छाया प्रदान करना

- नवरोपित और अवयस्क नारियल पौधों को छाया प्रदान करें।

सिंचाई

- दिसंबर के दौरान नारियल बागों में नियमित रूप से सिंचाई शुरू की जा सकती है।
- यदि नारियल थालों में नालों के ज़रिए पानी दिया जा रहा हो तो सिंचाई नालों को साफ करें।
- यदि थाला सिंचाई अपनायी जा रही हो तो प्रति ताड़ 200 लीटर की दर पर चार दिनों में एक बार सिंचाई की व्यवस्था करें।
- नारियल के लिए सिंचाई की सबसे उपयुक्त विधि ड्रिप सिंचाई है। रेतीली मिट्टियों के लिए ड्रिप्पिंग बिंदु छह और अन्य प्रकार की मिट्टियों के लिए चार होने चाहिए। वाष्पीकरण दर के आधार पर नारियल की खेती किए जाने वाले विभिन्न इलाकों के लिए ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए दिए जाने वाले पानी की मात्रा निर्धारित की जा सकती है। केरल में ड्रिप सिंचाई विधि के ज़रिए प्रति दिन प्रति ताड़ 30-35 लीटर

पानी और तमिलनाडु एवं कर्नाटक में 35-45 लीटर पानी पर्याप्त होता है।

- नारियल पौधों को पानी देने के लिए ड्रिप या थाला सिंचाई विधि अपनायी जा सकती है। यदि ड्रिप विधि अपनायी जा रही हो तो प्रति दिन प्रति नारियल पौध 10 लीटर की दर पर पानी प्रदान करें। यदि थाला सिंचाई जैसी दूसरी विधियाँ अपनायी जा रही हों तो चार दिनों में एक बार 60 लीटर पानी देना पर्याप्त होता है।
- बिहार, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तर-पूर्वी राज्य जैसे गैर परंपरागत क्षेत्रों में निम्न तापमान के प्रभाव से बचने के लिए सिंचाई शुरू की जा सकती है। ऐसे क्षेत्रों में मिट्टी का तापमान नियमित रखने के लिए ताड़ के थालों में मोटा पलवार लगाना सुनिश्चित करें।

जल निकासी

- जल जमाव की समस्या वाले क्षेत्रों में नारियल बागों में पर्याप्त जल निकासी की सुविधा सुनिश्चित करें।

कीट एवं रोग प्रबंधन

उत्तर पूर्वी मानसून का चले जाना दिसंबर महीने की विशेषता है जबकि जलवायु धीरे धीरे शुष्क हो जाता है और जाड़े के मौसम की शुरुआत के कारण ठंड भी होने लगता है। नारियल के बागान सहित बहुवर्षीय फसलों की खेती प्रणाली में ठंड और सूखे के दौरान कीटों की मौजूदगी अधिक होती है।

नमी के साथ साथ मानसून बारिश के दौरान कीट प्रकोप कम हो सकता है, जबकि सर्दी (दिसंबर) के आगमन के साथ कीट का प्रकोप शुरू हो जाता है और रोगकारक रोगाणुओं की वृद्धि होती है और इसलिए कड़ी निगरानी और स्थायी रूप से तलाशी करने की ओर अधिक ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए ताकि समय पर कीटों और रोगों का पता लगाया जा सके और इसका प्रबंधन किया जा सके। पत्ता सड़न, तना स्रवण और मूल तना विगलन जैसे साधारण और सर्वकालिक रोगों का प्रकोप इस अवधि के दौरान भी होता है और इनके प्रकोप को झेलने तथा पेड़ को और नुकसान होने से बचाने के लिए ताड़ को पर्याप्त रूप से स्वस्थ बनाया रखना होगा।

गैंडा भृंग और लाल ताड़ घुन जैसे सर्वव्यापी कीट तथा स्लग इल्ली, रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, कोरिड बग और चूहे का प्रकोप भी इस अवधि के दौरान स्थानीय क्षेत्रों में हो सकता है।

गैंडा भृंग, *ओरिक्टस रिनोसरस*

यह एक सर्वव्यापी कीट होने के कारण इसका प्रकोप सभी मौसमों में सर्वदा पाया जाता है और अवयस्क ताड़ों को इससे भारी नुकसान होता है। मई-जून के दौरान रोपित नारियल पौधों को इस अवधि के दौरान कीटों की घुस-पैठ से सुरक्षित रखना होगा। प्रायद्वीपीय भारत में ऑरिक्टस रिनोसेरस नूडिवायरस का प्राकृतिक प्रकोप 0.5 प्रतिशत से अधिक रिकार्ड किया गया है और इसलिए *ऑरिक्टस रिनोसेरस* नूडिवायरस - घातक नारियल गैंडा भृंग-गुआम (सीआरबी-जी) का प्रकोप हमारे देश में उतनी बड़ी समस्या नहीं रही जिसका प्रकोप दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में पेड़ों की बरबादी का प्रमुख कारण बन गया था और अंतर्राष्ट्रीय समूह के लिए यह काफी चिंताजनक मामला बन गया था।

प्रबंधन

- रोगरोधी उपचार के रूप में पेड़ के सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में या तो वानस्पतिक खली (नीम खली/ चालमुगरा खली/पोंगम खली (250 ग्राम)) उतनी ही मात्रा में रेत मिश्रित करके भरें या 12 ग्राम नेफ्थालीन गोलियाँ रेत मिश्रित करके रखें।
- सुबह सुबह रोज़ाना ताड़ की छानबीन करें और प्रकोपित क्षेत्र से भृंगों को बीटल हुक से निकाल दें। यह प्रक्रिया अपनाने से कीटों की बढ़ती आबादी कम की जा सकती है।
- अवयस्क ताड़ों के कोंपल क्षेत्र को मछली पकड़ने की जाल से सुरक्षित रखें। इससे गैंड़ा भृंग को फँसाया जा सकता है और कीट का प्रकोप रोकने के लिए सबसे ऊपर के तीन पर्ण कक्षों में 3 ग्राम क्लोरएन्ट्रानिलिप्रोल/ फिप्रोनिल निहित छेदयुक्त सेशे रखें।

भाँट

- खाद गड्ढ़ों, जो कि भृंग के प्रजनन स्थान हैं, को प्रति घन मीटर 5 x 10^{11} की दर पर हरी मस्कार्डिन कवक, *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* (एक घन मीटर के एक गोबर खाद गड्ढ़े में अधपके चावल में प्रवर्धित 100 ग्राम *मेटाराइज़ियम एनिसोप्लि* का प्रयोग) से उपचार करें ताकि गैंडा भृंग की बढ़ती सूँडियों पर जंतुमारी (एपिज़ोटिक) का प्रकोप करा सके। यह उपाय समूचे इलाके के किसान एकसाथ अपनाने से कीटप्रकोप प्रभावी रूप में कम किया जा सकता है और यह कीटों की संख्या कम करने में परिस्थिति अनुकूल तरीका बन जाता है।
- प्रजनन गड्ढ़ों में भाँट *(क्लिरोडेंड्रोन इनफोर्चुनेटम)* नामक खरपतवार पौधा मिलाने से हार्मोन संबंधी विसंगतियों के कारण कीट की अवयस्क अवस्था में ही इनका विकास रुक जाता है।

लाल ताड़ घुन, *रिंकोफरस फेरुजिनस*

गैंडा भृंग का प्रकोप कम होने के फलस्वरूप घातक कीटलाल ताड़ घुन के प्रकोप की संभावनाएं भी कम हो जाती है, क्योंकि इस कीट को ताड़ पर जमा होने और अंडा देने के लिए ताड़ पर घाव मौजूद होना आवश्यक है। बौनी किस्म के और 5-15 वर्ष की आयु वाले ताड़ों पर अधिकतर इसका प्रकोप होता है। कीट प्रकोपित पेड़ों पर सभी आयु के कीट पाए जाते हैं। ताड़ का खतरनाक शत्रु होने के नाते इसके प्रबंधन हेतु शीघ्र कार्रवाई निर्धारित की जाती है।

प्रबंधन

- अंडा देने के लिए तैयार घुनों को बाग से दूर रखने के लिए ताड़ पर कोई घाव लगने न देना अनिवार्य होता है और इसलिए पत्तों को काटते समय तने से कम से कम एक मीटर लंबाई में पर्णवृंत को छोड़कर काटना चाहिए।
- कीट का प्रकोप कम करने के लिए फसल ज्यामिति और समुचित दूरी बनाए रखना अत्यंत अनिवार्य है।
- प्रकोपित ताड़ों पर प्रकोपित स्थानों में इमिडाक्लोप्रिड 0.002 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 1 मि.ली.) या इंडोक्सोकार्ब 0.04 प्रतिशत (प्रति लीटर पानी में 2.5 मि.ली.) का यथासमय प्रयोग करने से सूँडियाँ मर जाती हैं और ताड़ प्रकोप से मुक्त होकर उस पर नई कोंपल निकलने लगती है।
- प्रतिरक्षकों और परागणकर्ताओं को उत्तेजित करते हुए नारियल आधारित फसल प्रणाली के ज़रिए फसलों में विविधता (पारिस्थितिकीय जैवइंजीनियरी) रखने से ताड़ से जुड़े वाष्पशील संकेत कम होगा और कीटों की संख्या कम करने में मदद मिलेगी। एकल फसल प्रणाली की अपेक्षा बहुफसल प्रणाली अपनाने से कीट का प्रकोप कम होता है।

स्लग इल्ली, *डार्ना नैरेरिया*

आँध्र प्रदेश के पूर्व गोदावरी जिले में और कर्नाटक के तुम्कूर में स्लग इल्ली, *डार्ना नैरेरिया* का प्रकोप हो सकता है क्यों कि इस दौरान नदी के तटों में और खारे पानी वाले इलाकों में लगाए गए नारियल पेड़ों पर इस कीट की आबादी बढ़ने के लिए अनुकूल वातावरण पैदा होता है। कई सैकड़ों इल्लियाँ पेड़ पर एकत्र हो जाएंगी और ताड़ की पत्तियों की निचली सतह को अपना आहार बना लेगी जिससे चमकदार चित्तियाँ उत्पन्न होती हैं और इसके साथ साथ धूसर पर्ण चित्ती रोग का प्रकोप होने से सारी पत्तियाँ जली हुई सी प्रतीत होती है। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पत्तियाँ सूखकर गिर जाती हैं और मात्र मध्यशिरा रह जाता है। उच्च तापमान और ठंडा मौसम इसका प्रकोप बढ़ने के कारण हो सकते हैं।

प्रबंधन

- कीट प्रकोप के प्रारंभ में ही प्रकोपित पत्तों का तुरंत ही पूरी तरह से नाश करना चाहिए ताकि कीटों की संख्या और बढ़ने से रोका जा सके। ध्यान रहे कि इस कीट में ज़हरीले स्कोली मौजूद होने के कारण इनसान की त्वचा के साथ संपर्क में आने पर अत्यंत खुजली उत्पन्न होती है।

स्लग इल्ली,

- यूलोफिड लार्वा परजीवी *पेडियोबियस इम्ब्रुएस* से जैविक नियंत्रण करने के साथ साथ प्रकाश जाल की स्थापना और प्रति लीटर 5 ग्राम की दर पर *बैसिलस थुरिंजिएनसिस* का छिड़काव प्रभावी पाया गया है।

रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी, *एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस*

इस अवधि के दौरान आक्रामक कीट रूगोस स्पाइरलिंग सफेद मक्खी *(एल्यूरोडिकस रुगियोपेर्कुलेटस)* का प्रकोप नए क्षेत्रों में और पहले प्रकोप रिपोर्ट किए गए क्षेत्रों में फिर से होने की संभावना है। ताड़ के पत्तों की निचली सतह पर सफेद मक्खी की कॉलनियों की मौजूदगी और पत्तों की ऊपरी सतह पर काले रंग के कज्जली फफूँद का होना इस कीट के प्रकोप के प्रमुख लक्षण हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में, पुराने पत्ते जल्दी पीला पड़कर सूख जाते हैं। सफेद मक्खी का प्रकोप पत्तों, पर्णवृंतों और फलों पर भी होता है और केला, बर्ड ऑफ पैराडाइस, हेलिकोनिया प्रजातियाँ सहित पौधों की एक लंबी श्रेणी पर भी इसका प्रकोप रिपोर्ट किया गया है।

प्रबंधन

- अवयस्क ताड़ों में, जेट की गति में पानी छिड़कने से सफेद मक्खी को निकाला जा सकता है और कीट के आहार लेने तथा प्रजनन की क्षमता कम हो जाती है।
- कीटनाशी का प्रयोग कतई नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे कीट का पुन:प्रकोप हो सकता है और कुदरती एफिलिनिड परजीवी *एनकार्सिया गुआडेलूपा* का संपूर्ण विनाश होता है।
- पीले चिपचिपे फँदे लगाने से और *एनकार्सिया गुआडेलूपा* का प्रयोग करके जैविक नियंत्रण विधि अपनाने से कीट का प्रकोप 70 प्रतिशत तक कम और परजीविता 80 प्रतिशत तक बढ़ायी जा सकती है।
- बाग में कज्जली फफूँद भक्षी भृंग *लियोक्रिनस निलगिरियानस* के प्राकृतिक आवास का संरक्षण करने से ताड़ के पत्तों पर जमे सारे कज्जली फफूँदों को खा जाता है और पत्ते साफ हो जाने से ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता फिर से बढ़ जाती है।

समय पर कीट के प्रकोप का पता लगाने के लिए ताड़ का बारीकी से अनुवीक्षण और व्यवस्थित छानबीन करना अनिवार्य होता है ताकि कीट पर नियंत्रण पाने के लिए सही विधियाँ अपनायी जा सके और दुगुनी आय अर्जित करने के लिए फसल का नुकसान कम किया जा सके।

पत्ता सड़न रोग, *कोलेटोट्रिकम ग्लोइयोस्पोरिओयिड्स, एक्सेरोहिलम रोस्ट्रेटम*

यह जड़मुर्झा रोगग्रस्त ताड़ों पर अक्सर पाया जाने वाला रोग है जो सबसे बाहरी कोंपल और निकटस्थ पत्तों पर ऊतकक्षय के रूप में प्रकट होता है। मानसून के बाद दिसंबर महीने के दौरान मुख्यत: यह रोग पाया जाता है। रोगग्रस्त पत्तों का ऊतकक्षय होता है और यह ताड़ से बिना अलग हुए वहीं पर टिका रहता है। प्रारंभ में यह रोग छोटे छोटे घाव के रूप में प्रकट होता है जो बाद में बड़ा होकर एकसाथ मिल जाता है और सड़न अत्यधिक व्यापक होकर ताड़ की प्रकाशसंश्लेषण क्षमता पर बुरा प्रभाव डालता है। यह रोग दक्षिण केरल के जड़मुर्झा रोगग्रस्त क्षेत्रों में अधिक पाया जाता है।

प्रबंधन

- आवश्यकता आधारित छँटाई और प्रकोपित कोंपल तथा निकटस्थ सबसे बाहरी पत्तों को नष्ट करना होगा।
- प्रकोपित कोंपल वाले क्षेत्र पर 300 मि.ली. पानी में हेक्साकोनाज़ोल 2 मि.ली. का प्रयोग करें।

तना स्रवण, *थिलावियोप्सिस (सेराटोसिस्टिस) पैराडोक्सा*

यह केरल के अम्लीय मिट्टियों में अधिकांशत: सीमित रोग है और इस अवधि के दौरान इसका प्रकोप अधिक

होता है। तने पर लाल-भूरे रंग के चिपचिपे तरल पदार्थ रिसने लगता है जो सूख जाने पर काले रंग का हो जाता है। प्रारंभिक स्थिति में लंबवत् दरार के साथ रिसने वाले छोटे धब्बे के रूप में यह प्रकट होता है, जो बाद में एकसाथ मिलकर बहुत बड़ा घाव बन जाता है। इसके निचले भाग के ऊतक बेरंग हो जाते हैं और बाद में ये सड़ जाते हैं। गंभीर प्रकोप की स्थिति में पत्तों का बाहरी छल्ला पीला हो जाता है और यह सूखकर समय से पूर्व गिर जाता है जिससे ताड़ के संपूर्ण स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। डायोकैलैंड्रा और क्साइलिबोरस जैसे स्कोलिटिड भृंगों के प्रकोप से तना और भी कमज़ोर हो जाता है।

प्रबंधन

- कचरा एवं ताड़ के अन्य अपशिष्ट तने के निकट नहीं जलाएं ताकि तना/जड़ पर घाव लगने से बचाया जा सके।
- पर्याप्त सिंचाई और मृदा एवं जल संरक्षण उपाय अपनाना अनुशंसित है।
- *ट्राइकोडर्मा हर्ज़ियानम* से संपुष्ट 5 कि.ग्रा. नीम खली का प्रयोग और मृदा जाँच आधारित पोषण प्रबंधन तरीका अपनाना चाहिए।
- तने के रिसने वाले घावों पर *ट्राइकोडर्मा हर्जियानम* टैल्क के पेस्ट का प्रयोग भी तना स्रवण रोग का फैलाव रोकने के लिए प्रभावी पाया गया है।

मूल तना विगलन रोग (गैनोडेर्मा वर्ग)

यह एक विनाशकारी रोग है जो नारियल की खेती किए जाने वाले सभी इलाकों में पाया जाता है और उच्च पीएच वाली मिट्टी में और नम दबाव परिस्थिति में अत्यधिक गंभीर रूप में प्रकट होता है। रोग प्रकोप की प्रारंभिक स्थिति में रोगाणु जड़ तंत्र पर वार करता है जो प्रत्यक्ष रूप से प्रकट नहीं होता है। तमिलनाडु के तंजावुर, आँध्र प्रदेश में पूर्वी गोदावरी जिले के कुछ इलाकों और कर्नाटक के अरसिकेरे में यह गंभीर रूप में पाया जाता है। पत्तों का बाहरी छल्ला सबसे पहले पीले रंगे के और फिर धीरे धीरे भूरे रंगे के हो जाते हैं और बाद में तने से जुड़े भाग से नीचे की ओर झुक जाता है जो नीचे की तरफ लंबवत् रूप में लटककर तने के शीर्ष पर लहँगे के समान प्रकट होता है।

समय के साथ रोग का प्रकोप बढ़ जाने से तने का शीर्ष शंकु आकार का हो जाता है और धड़ क्षेत्र पर रिसाव के लक्षण प्रकट हो जाते हैं। तने के मूलभाग पर लाल भूरे रंग का घाव प्रकट होता है, जिससे गाढ़े चिपचिपे पदार्थ रिसने लगता है। ये भूरे धब्बे ज़मीनी स्तर से एक मीटर की ऊँचाई तक फैल जाते हैं और कभी कभी तने से छाल निकलते हुए भी पाया गया है। कभी-कभार प्रकोपित तने पर रोगाणु के फलन काय(बेसिडियोकार्प) का विकास होता है।

प्रबंधन

- तने के निकट कचरा और ताड़ का अपशिष्ट न जलाएं ताकि तना/जड़ को घाव लगने से बचाया जा सके।
- मृत ताड़ और गंभीर रूप से रोगप्रकोपित ताड़ों को काटकर निकालें तथा रोगग्रस्त ताड़ों के धड़ और जड़ भागों का नाश करें ताकि रोग संरोपों को हटाया जा सके।
- रोगप्रकोपित ताड़ों के चारों ओर (तने के निचले भाग से 1.2 मीटर की दूरी में) गड्ढ़े खोदकर (60 सें.मी. गहरा और 30 सें.मी. चौड़ा) आसपास के स्वस्थ ताड़ों से अलग रखें।
- प्रति वर्ष प्रति ताड़ छह महीने के अंतराल में *ट्राइकोडर्मा हर्ज़ियानम* (सीपीटीडी 28) टैल्क दवा(50 ग्राम) से संपुष्ट नीम खली(5 कि.ग्रा.) का प्रयोग करने से रोग की तीव्रता कम हो जाती है।
- 2 प्रतिशत की दर पर हेक्साकोनाज़ोल जड़ों द्वारा देना (प्रति ताड़ 100 मि.ली. घोल) और 0.2 प्रतिशत हेक्साकोनाज़ोल या 1 प्रतिशत बोर्ड मिश्रण के 40 लीटर से नारियल थालों में मिट्टी को शराबोर करना अनुशंसित है।

इस प्रकार, लगातार अनुवीक्षण और रोगरोधी उपचार अपनाए जाने से कीटों और रोगों का प्रकोप कम होता है और समुचित समय पर उचित स्वास्थ्य प्रबंधन रणनीतियाँ अपनाना भी आवश्यक होता है। ■

सुश्री शोभा करंदलाजे ने नारियल क्षेत्र में कृषि व्यापार एवं निर्यात को बढ़ावा देने हेतु आह्वान किया

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके विश्व नारियल दिवस समारोह का उद्घाटन करती हुई

सुश्री शोभा करंदलाजे, माननीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री, भारत सरकार ने लघु किसानों के लिए लाभकारी आय सुनिश्चित करने हेतु नारियल की खेती और प्रसंस्करण को एक वाणिज्यिक उद्यम के रूप में अपनाने और निर्यात बाज़ार को लक्षित करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। वे आईसीएआर - सीपीसीआरआई, कासरगोड़ के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड द्वारा 2 सितंबर 2023 को आईसीएआर-सीपीसीआरआई में आयोजित 25वें विश्व नारियल दिवस समारोह में उद्घाटन भाषण दे रही थीं। उन्होंने उद्यमियों से स्थानीय तथा निर्यात बाज़ारों के उपभोक्ताओं के लिए नारियल के मूल्य वर्धित उत्पादें पहुँचाकर अपना निर्यात दोगुना करने का आग्रह किया।

माननीय मंत्री ने भारत सरकार की विभिन्न विकासात्मक योजनाओं जैसे किसान सम्मान योजना, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, कृषि अवसंरचना निधि और उत्पादन, मूल्य वर्धन एवं निर्यात उन्मुख व्यापार में सुधार लाने हेतु विभिन्न दूसरी योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने प्रसंस्करण और उत्पाद विविधीकरण की ओर बढ़ने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला, ताकि नारियल के लिए बेहतर मूल्य सुनिश्चित करने के लिए खोपरा केंद्रित प्रसंस्करण से नीरा, विर्जिन नारियल तेल तथा नारियल चिप्स जैसे अन्य उत्पादों के प्रसंस्करण की ओर बदलाव संभव हो सके।

किसान उत्पादक संगठन लघु और सीमांत किसानों की सामूहिक शक्ति को सुदृढ़ करके नारियल क्षेत्र में क्रांति लाने में सक्षम हैं। उन्होंने कहा कि इससे कृषि मशीनीकरण को बढ़ावा देने, कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाने और निर्यात को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

उन्होंने कहा कि पूरे देश में जिले वार कस्टम हायरिंग सेंटर शुरू किए गए हैं और उन्होंने किसानों को नकली बीजों के प्रयोग के विरुद्ध सचेत किया। उन्होंने आईसीएआर - सीपीसीआरआई की गुणवत्ता सुनिश्चित क्यूआर कोड मुद्रित पौधों की पहल का स्वागत किया, जो पौधों के बारे में विवरण प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) उत्पादन लागत कम करने के उद्देश्य से ड्रोन के अनुप्रयोग सहित कृषि मशीनीकरण में कई कार्य कर सकते हैं। एफपीओ लघु और सीमांत किसानों की आवश्यकतानुसार कस्टम हायरिंग सेंटर स्थापित करने के लिए प्रोत्साहनों का लाभ उठा सकते हैं।

माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री सुश्री शोभा करंदलाजे उद्‌घाटन भाषण देती हुई

प्रकाशनों का विमोचन

वर्ष 2014 से कृषि के लिए बजट आबंटन चार गुना से अधिक बढ गया है और 25000 करोड़ रुपए तक पहुंच गया है। उसी तरह खोपरे का न्यूनतम समर्थन मूल्य दुगुना हो गया है। इसके बावजूद, यह साबित हो चुका है कि बाज़ार में अधिक मात्रा में खोपरे की आपूर्ति होने से भाव में गिरावट आ जाएगी।

श्री एन.ए.नेल्लिक्कुन्नु, विधायक, कासरगोड़ जिन्होंने बैठक की अध्यक्षता की थी, सीपीसीआरआई और नाविबो के कार्यों की सराहना की और खेती की लागत कम करने एवं गुणवत्तापूर्ण उर्वरकों का उत्पादन सुनिश्चित करने के लिए अनुसंधान पहलों के ज़रिए इस क्षेत्र के विकास हेतु एकजुट होकर काम करने के लिए सभी संस्थानों से आह्वान किया।

डा.वी.बी.पटेल, सहायक महानिदेशक (एफ एंड पीसी), आईसीएआर, नई दिल्ली ने अपने भाषण में कहा कि हितधारक मिलकर नारियल को उच्चतर स्तर पर ले जा सकते हैं। कार्बन पृथक्करण पर डेटाबेस को पर्यावरणीय प्रभाव का अनुमान लगाने के लिए कार्बन ट्रेडिंग मॉडल में परिवर्तित किया जा सकता है। श्री रेणुकुमार बी.एच., उपाध्यक्ष, नाविबो और श्री पी.आर.मुरलीधरन, प्रेसिडेंट, बीएएमसीओ ने आशीर्वचन भाषण दिया।

डा. बी. हेब्बार, निदेशक, आईसीएआर - सीपीसीआरआई ने सभा का स्वागत किया और संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न प्रौद्योगिकियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने आगे सूचित किया कि सीपीसीआरआई का अनुसंधान खेती की लागत कम करने और जलवायु परिवर्तन के लचीलेपन की ओर पुनः लक्षित किया जाता है। डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी ने नारियल विकास बोर्ड द्वारा नारियल किसानों के लिए कार्यान्वित विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर विभिन्न प्रकाशनों जैसे कि नारियल की खेती पद्धतियाँ- उत्तर पूर्वी भारत, सुपारी में पर्ण चित्ती रोग के एकीकृत प्रबंधन पर परामर्श विषयक अंग्रेजी और मलयालम प्रकाशन, कोको, नारियल और सुपारी पर रेडी रेकनर (अंग्रेजी और कन्नड में द्विभाषी), नारियल विकास बोर्ड के प्रकाशन नारियल उत्पाद और नाविबो योजनाएं समृद्धि की ओर अग्रसर (अंग्रेज़ी और हिंदी) का भी विमोचन किया गया। माननीय मंत्री जी ने पौधों के लिए क्यूआर कोड सृजित करने वाला एक एप भी चालू किया। समारोह में मंत्री जी ने दस नारियल उद्यमियों को सम्मानित किया। मंत्री जी की समुपस्थिति में सात उद्यमियों के साथ प्रौद्योगिकी अंतरण हेतु समझौता ज्ञापन भी निष्पादित किया गया। वटकरा नारियल उत्पादक कंपनी लिमिटेड, जिन्होंने इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी द्वारा वैश्विक स्तर पर संस्थापित सर्वोत्तम किसान संगठन पुरस्कार हासिल किया था, को समारोह में सम्मानित किया गया। श्रीमती दीप्ति नायर एस, निदेशक, नाविबो ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम से पहले मंत्री जी ने ऊतक संवर्धन और कृषि प्रसंस्करण प्रयोगशाला सहित सीपीसीआरआई के विविध अनुसंधान प्रयोगशालाओं का दौरा किया। मंत्री जी ने सीपीसीआरआई द्वारा अपनाए गए नारियल बागानों में ड्रॉन आधारित स्प्रेइंग, भूतल परागण उपस्कर का निदर्शन,

माननीय मंत्री जी प्रदर्शनी स्टॉल में

जैविक खेती प्रौद्योगिकी और एकीकृत कीट एवं रोग प्रबंधन पद्धतियों का अवलोकन किया।

कार्यक्रम में केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आँध्र प्रदेश, गोवा और गुजरात से 500 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। इसके सिलसिले में आयोजित प्रदर्शनी में नारियल खेती और प्रसंस्करण संबंधित विविध प्रौद्योगिकियों और नारियल के विविधीकृत उत्पादों को प्रदर्शित किया गया। प्रदर्शनी में 25 संस्थानों/उद्यमियों/किसान उत्पादक संगठनों ने भाग लिया। एक तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया जिसके पश्चात् किसान उत्पादक संगठनों द्वारा प्रस्तावित नारियल व्यवसाय योजनाओं पर एक पैनल परिचर्चा भी संपन्न हुई।

नाविबो के इकाई कार्यालयों ने देशभर में विश्व नारियल दिवस मनाया

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै

नाविबो क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय और कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, तमिलनाडु सरकार के सहयोग से कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, ईचंगकोट्टै, तंजावूर जिला में विश्व नारियल दिवस समारोह आयोजित किया। तंजावूर, पुतुक्कोट्टै, त्रिची और दिंडिगल जिलाओं से 300 से अधिक नारियल किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रकाशनों का विमोचन

श्री इ. अरवाड़ी, निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने नारियल के वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्य पर संक्षिप्त विवरण दिया। श्री आर.इलंगो, सदस्य, नारियल विकास बोर्ड, डा. ए. वेलायुधम, डीन, कृषि महाविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, ईचंगकोट्टै, श्री एन. के. नल्लमुत्तु राजा, कृषि संयुक्त निदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, तंजावूर, डा.एन.वेंकटचलपति,डीन(अनुसंधान),एनआईएफटीईएम, तंजावूर और श्री एस.ईश्वर, कृषि उप निदेशक, कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, तंजावूर ने इस अवसर पर सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम के सिलसिले में एक तकनीकी सत्र और नारियल उत्पादों की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु और प्रबीउ फार्म, मंड्या ने अत्मलिंगेश्वरा, भारतीनगरा और मलै महदेश्वरा स्वामी नारियल उत्पादक फेडरेशनों और बागवानी विभाग के सहयोग से 2 सितंबर 2023 को कुवेंपु सभांगना, भारती कॉलेज, के.एम.दोड्डि, मद्दुर में संयुक्त रूप से विश्व नारियल दिवस मनाया। श्रीमती रूपश्री के. एन., बागवानी उप निदेशक, मंड्या, डा.सिद्दप्पा आर., सहायक प्रोफसर, मसाले, रोपणी, औषधीय एवं सगंधी फसल विभाग, बागवानी महाविद्यालय, मैसूर, डा. जी. मंजुनाथ, एसोसिएट प्रोफसर, पादप रोगविज्ञान विभाग, बागवानी महाविद्यालय, मैसूर, डा.मुत्तुराज जी.पी., सहायक प्रोफसर, कीटविज्ञान विभाग, बागवानी महाविद्यालय, मैसूर और अन्य गणमान्य व्यक्ति विश्व नारियल दिवस समारोह के अवसर पर उपस्थित रहे। श्री जयनाथ आर., उप निदेशक, नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, बैंगलूरु ने स्वागत भाषण दिया।

श्री मधु जी. मधेगौडा, प्रेसिडेंट, आत्मलिंगेश्वरा सीपीएफ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और श्री बी. एम. नंजेगौडा, प्रेसिडेंट, भारतीनगरा सीपीएफ ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री लिंगेगौडा, प्रेसिडेंट, मलै महदेश्वरा स्वामी सीपीएफ भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

उद्घाटन सत्र का दृश्य

समारोह के सिलसिले में एक तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया। डा. सिद्दप्पा आर., सहायक प्रोफसर, मसाले, रोपणी, औषधीय और सगंधी फसल, बागवानी महाविद्यालय, मैसूर, डा.जी.मंजुनाथ, एसोसिएट प्रोफसर, पादप रोगविज्ञान विभाग, बागवानी महाविद्यालय और डा. मुत्तुराज जी. पी., सहायक प्रोफसर, कीटविज्ञान विभाग, बागवानी महाविद्यालय, मैसूर ने किसानों को संबोधित किया और नारियल बागों का वैज्ञानिक खेती प्रबंधन, नारियल के प्रमुख कीट एवं रोग और इनके प्रबंधन के संबंध में उनके सवालों का जवाब दिया। 500 से अधिक प्रगतिशील किसानों ने कार्यक्रम में भाग लिया। समारोह में सहभागी किसानों को नारियल के पौधे वितरित किए गए। विविध मूल्यवर्धित उत्पादों, नारियल हस्तशिल्पों एवं प्रकाशनों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने 2 सितंबर 2023 को मोमाइ तामुली ऑडिटोरियम हॉल, बागवानी और खाद्य प्रसंस्करण निदेशालय, खानापारा, गुवाहटी में विश्व नारियल दिवस मनाया। श्री सुब्रता रॉय बर्धन, सचिव, असम सरकार, कृषि विभाग कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.गोविंदस्वामी कदिरवेल, निदेशक, आईसीएआर-एटीएआरआई, कमोडोर राजीव अशोक, प्रबंध निदेशक, एनईआरएएमएसी, गुवाहटी, श्री नबीन कुमार रॉय, महानिदेशक, नाबार्ड और अन्य गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

डा. रजतकुमार पाल, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहटी ने आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। डा.गोविंदस्वामी कदिरवेल, निदेशक, आईसीएआर-

श्री सुब्रता रॉय बर्धन, सचिव, कृषि विभाग, असम सरकार उद्घाटन भाषण देते हुए

एटीएआरआई, काहिकुची, गुवाहटी, श्री नबीन कुमार रॉय, महा प्रबंधक, नाबार्ड, कमोडोर राजीव अशोक, प्रबंध निदेशक, एनईआरएएमएसी, गुवाहटी, डा. धीरेंद्र नाथ कालिता, प्रधान वैज्ञानिक और प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र, कामरूप और श्रीमती मधुस्मिता डेका, सामुदायिक विज्ञान, कृषि विज्ञान केंद्र, कामरूप ने इस अवसर पर बात की। कार्यक्रम में लगभग 135 किसान, उद्यमी, गणमान्य व्यक्ति, बागवानी निदेशालय के एवं दूसरे विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

नाविबो, क्षेत्रीय कार्यालय, पटना ने सुमर्थ केंद्र, बड़गाँव, गया में 2 सितंबर 2023 को विश्व नारियल दिवस मनाया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक रूप से परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर डा.अशोक कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक/एसएमएम, केवीके, मानपुर, गया, श्री प्रभु रजक, मुखिया, सिमवारा पंचायत, श्रीमती सुरभी, निदेशक, मेसर्स टेकारी एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, सुमर्थ केंद्र, बड़गाँव, गया, श्रीमती सियामणी देवी, सरपंच, बड़गाँव, श्री प्रभात कुमार, निदेशक, मेसर्स टेकारी एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, सुमर्थ केंद्र, बड़गाँव, गया और श्री राजीव भूषण प्रसाद, निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, पटना और अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

श्री प्रभात कुमार, निदेशक, मेसर्स टेकारी एग्रो प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड, सुमर्थ केंद्र, बड़गाँव, गया ने अपने वक्तव्य में नारियल की अहमियत और इसके उपयोग के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी। डा.अशोक कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक/एसएमएस, कृषि विज्ञान केंद्र, मानपुर, गया ने सभा का स्वागत किया। उन्होंने अपने संबोधन में किसानों को नारियल की खेती एवं एकीकृत खेती से आय सृजन,

सभा का दृश्य

विविधीकृत उत्पादों के बारे में एवं कौशल विकास योजना के अंतर्गत चलाए जा रहे नारियल हस्तशिल्प प्रशिक्षण/फ्रेंड्स ऑफ कोकनट ट्री प्रशिक्षण आदि के बारे में जानकारी दी। उन्होंने किसानों द्वारा पूछे गए सवालों का भी जवाब दिया। कार्यक्रम में लगभग 100 किसानों ने भाग लिया।

नाविबो, राज्य केंद्र, अंडमान व निकोबार द्वीपसमूह

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, पोर्ट ब्लेयर ने राज्य कृषि विभाग, अंडमान व निकोबार प्रशासन के सहयोग से 2 सितंबर 2023 को अंडमान व निकोबार प्रशासन के सहायक निदेशक (कृषि) का कार्यालय, दक्षिण अंडमान में विश्व नारियल दिवस मनाया। कार्यक्रम में किसानों, उद्यमियों और नाविबो एवं कृषि विभाग के पदाधिकारियों सहित 70 व्यक्तियों ने भाग लिया।

डा. वाई. रामकृष्ण, प्रधान वैज्ञानिक और अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, सीपीघाट, आईसीएआर-सीआईएआरआई, पोर्ट ब्लेयर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रहे। श्री रमेश कुमार, संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग, श्रीमती एस. सी. रेखा, सहायक निदेशक, कृषि विभाग और श्री हस्सन, सहायक निदेशक, उच्च मूल्य कृषि विभाग एजेंसी, कृषि विभाग भी इस अवसर पर उपस्थित थे। कार्यक्रम के सिलसिले में एक तकनीकी सत्र भी संपन्न हुआ।

परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करते हुए कार्यक्रम का उद्घाटन

नाविबो, राज्य केंद्र, ओडिशा

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ओडिशा ने केवीके, पुरी के सहयोग से 2 सितंबर 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, पुरी, ओडिशा में विश्व नारियल दिवस मनाया। डा. सूर्यकांत मिश्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, केवीके, पुरी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा. अजित कुमार साहू, सहायक प्रोफसर (बागवानी), कार्यालय प्रभारी, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना ने सभा का स्वागत किया।

सभा का दृश्य

डा. सुमिता आचार्य, वैज्ञानिक (गृह विज्ञान) ने नारियल के मूल्यवर्धन पर किसानों के साथ चर्चा की और डा. अजित कुमार साहू, सहायक प्रोफसर (बागवानी), कार्यालय प्रभारी, अखिल भारतीय समन्वित ताड़ अनुसंधान परियोजना ने वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर बात की। डा. बिष्णुपाद गिरी, वैज्ञानिक (बागवानी) और श्री अमर कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ क्षेत्र अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड ने इस अवसर पर बात की।

नाविबो, राज्य केंद्र, पश्चिम बंगाल

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, कोलकाता ने 2 सितंबर 2023 को आरके मिशन लोक शिक्षा परिषद, नरेंद्रपुर, कोलकाता में नारियल उत्पादन प्रौद्योगिकियाँ और नारियल का मूल्य वर्धन विषयक जिला स्तरीय संगोष्ठी आयोजित करते हुए विश्व नारियल दिवस समारोह मनाया। दक्षिण 24 परगनास, नादिया, पुरबा मेदिनीपुर, उत्तर

मंच का दृश्य

24 परगनास और हावड़ा जिलों के विविध प्रखंडों से लगभग 100 सहभागियों ने संगोष्ठी में भाग लिया। स्वामी वसबानंदा जी महाराज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और श्री जयंत कुमार ऐकत भा.प्र.से., बागवानी निदेशक (तकनीकी), खाद्य प्रसंस्करण उद्योग और बागवानी विभाग, पश्चिम बंगाल सरकार ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। डा.अमेय देबनाथ, उप निदेशक, नाविबो ने विविध योजनाओं और कार्यक्रमों का संक्षिप्त परिचय दिया।

नाविबो, राज्य केंद्र, विजयवाड़ा और प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, विजयवाड़ा और प्रबीउ फार्म, वेगिवाड़ा ने संयुक्त रूप से 2 सितंबर 2023 को कृषि विज्ञान केंद्र, पंदिरीमामिडी, आँध्र प्रदेश में वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए सुस्थिर नारियल क्षेत्र विषय पर विश्व नारियल दिवस 2023 मनाया।

मंच का दृश्य

श्री शुभम बंसल, भा.प्र.से., संयुक्त जिलाधीश, एएसआर जिला ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया और उन्होंने किसानों से आग्रह किया कि जलवायु और भूमि की विशेषताओं के अनुरूप विश्वविद्यालय, राज्य बागवानी विभाग और नाविबो के विशेषज्ञों के सुझावों के अनुसार नारियल की खेती करें। कार्यक्रम में लगभग 200 सहभागियों ने भाग लिया।

डा.के. राजेंद्र प्रसाद, प्रधान वैज्ञानिक (बागवानी) एवं अध्यक्ष, डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय-बागवानी अनुसंधान केंद्र, पंदिरीमामिडी, डा.एन.बी.वी. चलपति राव, प्रधान वैज्ञानिक (कीटविज्ञान) एवं अध्यक्ष, डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय, बागवानी अनुसंधान केंद्र, अंबाजिपेट, डा.पी.सी.वेंगय्या, वरिष्ठ वैज्ञानिक (खाद्य विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी), डा.वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय-बागवानी अनुसंधान केंद्र, पंदिरीमामिडी, डा. ललिता कामेश्वरी, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, डा. वाईएसआर बागवानी विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र, पंदिरीमामिडी, श्री चिट्टिबाबु, परियोजना बागवानी अधिकारी, रामपचोदावरम और श्री वल्लु गोपी राजु, तकनीकी अधिकारी, नाविबो ने तकनीकी सत्र में बात की।

श्री जोहर खान, अध्यक्ष, चिकोफ सीपीसी, श्री वर्मा, श्री रामकृष्ण सीपीसी, श्री टंडन राजु, महिमा सीपीसी और श्री शिवरामकृष्ण, चैतन्या सीपीसी ने कार्यक्रम में भाग लिया और अपने अनुभव बाँटे। किसानों को नारियल की रोपण विधि और नारियल ताड़ारोहक मशीन का उपयोग भी निर्दर्शित किया गया। सहभागी किसानों को दो-दो नारियल पौधे वितरित किए गए। श्री कुमारवेल एस., उप निदेशक प्रभारी, नाविबो, विजयवाड़ा के स्वागत एवं आमुख भाषण से कार्यक्रम शुरू हुआ।

नाविबो, राज्य केंद्र, ठाणे और प्रबीउ फार्म, पालघर

नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे और प्रबीउ फार्म, पालघर ने 5 सितंबर 2023 को गणपति समाज मंदिर हॉल, चौल में कृषि विभाग, महाराष्ट्र और कृषक कल्याणकारी संस्था, चौल, अलिबाग, रायगढ़ जिला के सहयोग से विश्व नारियल दिवस मनाया।

श्रीमती उज्ज्वला बानखेले, जिला अधीक्षक कृषि अधिकारी, कृषि विभाग, महाराष्ट्र सरकार उद्घाटन भाषण देती हुई

श्रीमती उज्ज्वला बानखेले, जिला अधीक्षक कृषि अधिकारी, कृषि विभाग, महाराष्ट्र सरकार, अलिबाग, रायगढ़ जिला ने श्री कैलाश वानखेडे, उप प्रभागीय कृषि अधिकारी, अलिबाग की उपस्थिति में कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री रवींद्र पटील, अध्यक्ष, कृषक कल्याणकारी संस्था, चौल; श्री रवींद्र कुमार, प्रभारी उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, राज्य केंद्र, ठाणे; श्री हेमंत गुरसाले, मुख्य प्रबंधक, राष्ट्रीय रासायनिक उर्वरक लि., ठाल; डा.वैभव शिंडे, एसोसिएट प्रोफेसर, डा.बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली; श्रीमती मनीषा महेंद्र दाल्वी, जिला परिषद सदस्य, रायगढ़; श्री पंकज सखारे, तालुक समन्वयक, कृषि बीमा कंपनी, मुंबई; श्री इंद्रनील चौहान, निदेशक, भारत एग्रो लि., कोल्हापुर; श्री सुभाष बैनाखे,

तालुक कृषि अधिकारी, अलिबाग; श्री शरद एस. अगलावे, वरिष्ठ क्षेत्र अधिकारी, नाविबो, प्रबीउ फार्म, पालघर इस अवसर पर उपस्थित रहे।

समारोह के साथ तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया जिसमें डा. वैभव शिंडे, एसोसिएट प्रोफेसर, डा.बालासाहेब सावंत कोंकण कृषि विद्यापीठ, दापोली, रत्नगिरी, महाराष्ट्र ने महाराष्ट्र में वैज्ञानिक नारियल खेती प्रौद्योगिकी पर भाषण दिया। श्री शरद एस अगलावे, वरिष्ठ क्षेत्र अधिकारी, नाविबो, प्रबीउ फार्म, पालघर ने नारियल विकास बोर्ड योजनाओं पर संक्षिप्त जानकारी दी। इस सिलसिले में एक पाककला प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम

प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम ने 2 सितंबर 2023 को विश्व नारियल दिवस मनाया। श्रीमती सूसन ली थोमस, अधीक्षक, जिला कृषि फार्म, नेर्यमंगलम ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्रीमती मिनी मैथ्यू, सहायक निदेशक, नाविबो ने इस अवसर पर विश्व नारियल दिवस की अहमियत और नाविबो कार्यक्रमों के बारे में बात की और

श्रीमती सूसन ली थोमस, अधीक्षक, जिला कृषि फार्म, नेर्यमंगलम उद्घाटन भाषण देती हुई

श्री अरुण पॉल, कृषि अधिकारी, कृषि भवन, चूर्णिक्करा ने नारियल के कीट एवं रोग प्रबंधन पर बात की। श्री सुनिल सिरियक, पूनाट्ट, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, कोतमंगलम सीपीसी ने एफपीओ अनुभवों को साझा किया। श्री बाबू वर्की, प्रभारी सहायक निदेशक, नाविबो, प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम ने सभा का स्वागत किया। श्रीमती जानिषा के.पी. और श्री षाजी सी. एस., क्षेत्र अधिकारी, प्रबीउ फार्म, नेर्यमंगलम ने क्रमशः नारियल नर्सरी प्रबंधन और डी X टी उत्पादन के क्षेत्र निदर्शन संबंधी संक्षिप्त जानकारी दी। श्री जेइम्स तोटुपुषा, एफपीओ प्रतिनिधि ने नीरा उत्पादन में अपना अनुभव बांटा। श्री षंसुद्दीन एस.एस. ने संकर प्रशिक्षण अनुभवों को साझा किया।

प्रबीउ फार्म, धली, तमिलनाडु

नारियल विकास बोर्ड, नारियल उत्कृष्टता केंद्र, प्रबीउ फार्म, धली ने तमिलनाडु के तिरुपूर और कोयंबत्तूर जिले के नारियल किसानों के लाभार्थ “ वर्तमान और भविष्य पीढ़ी के लिए सुस्थिर नारियल क्षेत्र” विषय पर विश्व नारियल दिवस मनाया। श्री के.षण्मुखसुंदरम, माननीय सांसद, पोल्लाच्ची निर्वाचन क्षेत्र ने उद्घाटन भाषण दिया और तिरुपूर जिलाधीश श्री टी.क्रिस्तुराज भा.प्र.से. की ओर से श्री जस्वंत कण्णन, राजस्व प्रभागीय अधिकारी, उदुमलपेट ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। डा.के.राजमाणिक्कम,

श्री के. षण्मुखसुंदरम, माननीय सांसद, पोल्लाची उद्घाटन भाषण देते हुए

सहायक प्रोफेसर (नारियल), डीओडीएल, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तूर एवं नाविबो सदस्य (अनुसंधान एवं विकास) और श्री एम.मारियप्पन, जेडीए, तिरुपूर जिला ने इस अवसर पर भाषण दिया। श्री जी.रघोत्तुमन, फार्म प्रबंधक ने सभा का स्वागत किया। इस अवसर पर नारियल खेती प्रौद्योगिकियाँ विषयक एक तकनीकी बुलेटिन का विमोचन किया गया। सरकारी हाई स्कूल, तिरुमूर्ति नगर में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता भी आयोजित की गई और श्री के. षण्मुखसुंदरम, माननीय सांसद, पोल्लाच्ची निर्वाचन क्षेत्र ने विद्यार्थियों को पुरस्कार वितरित किए। कार्यक्रम के सिलसिले में तकनीकी सत्र एवं प्रदर्शनी भी आयोजित किया गया।

प्रबीउ फार्म, मधेपुरा

प्रबीउ फार्म, मधेपुरा ने 2 सितंबर 2023 को फार्म परिसर पर विश्व नारियल दिवस मनाया। श्री बिलीचदान बारा, सहायक निदेशक, नाविबो ने समारोह की अध्यक्षता की और डा. सुरेंद्र चौरासिया, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रभारी, कृषि विज्ञान केंद्र, मधेपुरा समारोह में मुख्यातिथि रहे। उन्होंने अपने भाषण में नारियल खेती के विभिन्न पहलुओं और नारियल उद्योग एवं नारियल उत्पादन तथा

सभा का दृश्य

मूल्य वर्धन से प्राप्त आय के बारे में बात की। श्री राहुल कुमार, बागवानी विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, मधेपुरा और श्री राम निवास सिंह, वरिष्ठ क्षेत्र अधिकारी, नाविबो भी इस अवसर पर भाषण दिया। कार्यक्रम के सिलसिले में तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया और विशेषज्ञों द्वारा किसानों की समस्याओं का समाधान किया गया।

कृषि निदेशालय, गोवा ने विश्व नारियल दिवस मनाया

कृषि निदेशालय, गोवा ने नारियल विकास बोर्ड, समेति(एसएएमईटीआई) और कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (उत्तर) तथा कृषि विज्ञान केंद्र (दक्षिण-गोवा) के सहयोग से 5 सितंबर 2023 को विश्व नारियल दिवस मनाया। श्री नेविल अलफोन्सो, कृषि निदेशक ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। श्री अनंत होब्ले, उप निदेशक, समेति; श्री किशोर भावे, परियोजना निदेशक, आत्मा (एटीएमए) और श्री चंद्रहास देशाई, प्रबंध निदेशक, गोवा राज्य बागवानी निगम कार्यक्रम के सम्मननीय अतिथि रहे। श्री शरतकुमार जी., तकनीकी अधिकारी ने नारियल विकास बोर्ड का प्रतिनिधित्व किया। कार्यक्रम के सिलसिले में तकनीकी सत्र भी आयोजित किया गया।

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण संपन्न

उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्र के पदाधिकारियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान, कासरगोड़ में 'नारियल, सुपारी एवं कोको की वैज्ञानिक खेती' विषयक पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम संपन्न हुआ। डा. के. बी. हेब्बार, निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान ने 14 जुलाई, 2023 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में डा.बी.हनुमंते गौड़ा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नारियल विकास बोर्ड, कोची मुख्यातिथि रहे।

अपने उद्घाटन भाषण में डा. के. बी. हेब्बार ने बताया कि "उत्तर-पूर्वी क्षेत्र भविष्य की उम्मीद है और यह रोपण फसलों के लिए उपयुक्त क्षेत्र है और इस क्षेत्र में उत्पादकता बढ़ाने पर ज़ोर दिया जा रहा है"। लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए फसल की बेहतर समझ तथा प्रौद्योगिकीय विकल्पों की उपलब्धता अपेक्षित है। उन्होंने बदलती जलवायु का सामना करने के लिए नवाचार और प्रौद्योगिकी विकास की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

डा. बी. हनुमंते गौड़ा ने अपने भाषण में रोपण फसलों की आर्थिक मामलों पर संक्षिप्त विवरण दिया। उन्होंने

डा. के. बी. हेब्बार, निदेशक, केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान उद्घाटन भाषण देते हुए

नारियल की प्रबंधन पद्धतियों के राज्य वार विशेष पैकेज जारी करने के लिए केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान से आग्रह किया, जो उत्पादकता बेहतर बनाने में मदद करेगा।

सम्माननीय अतिथि श्री एच. कृष्णकुमार, प्रबंध निदेशक, कैम्पको ने अपने भाषण में वैश्विक बाज़ार में उच्च स्थान बनाए रखने के लिए कृषि उत्पादों में सर्वोत्तम गुणवत्ता बनाए रखने की आवश्यकता पर बात की।

प्रगतिशील किसानों, राज्य कृषि विभागों से पदाधिकारियों, उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के कृषि विज्ञान केंद्रों के पदाधिकारियों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् - केंद्रीय रोपण फसल अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

आहार 2023, फुड एंड हॉस्पिटैलिटी फेयर

नारियल विकास बोर्ड, क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नै ने भारत व्यापार संवर्धन संगठन और तमिलनाडु व्यापार संवर्धन संगठन द्वारा चेन्नै ट्रेड सेंटर, नन्दमबाक्कम, चेन्नै में 15 से 17 सितंबर 2023 तक आयोजित आहार 2023, फुड एंड हॉस्पिटैलिटी फेयर में भाग लिया। तमिलनाडु से सर्वश्री विनायका, अनामलय और ग्लोबल सीपीसी, सर्वश्री कोप्रा प्रा.लि. और सर्वश्री शक्ति कोको प्रा.लि. ने अपने उत्पाद जैसे नीरा, नारियल दूध, विर्जिन नारियल तेल, नारियल तेल, डाब पानी, नारियल शर्करा, नारियल चिप्स, फ्लेवर्ड कोको नाटा तथा खोपड़ी आधारित हस्तशिल्प आदि बोर्ड के स्टाल में प्रदर्शित किए। तमिलनाडु और अन्य राज्यों से किसानों, छात्रों, और उद्यमियों ने नाविबो स्टाल का दौरा किया तथा नारियल खेती, किस्म, नर्सरी, मूल्य वर्धन और बोर्ड की योजनाओं से संबंधित जानकारी एकत्र किए। उन्होंने नारियल आधारित उत्पादों के निर्यात ब्यौरे के बारे में भी पूछताछ की। नाविबो के पदाधिकारियों ने आगंतुकों को बोर्ड की योजनाओं और कार्यक्रमों पर संक्षिप्त विवरण दिया।

बोर्ड के स्टाल का दृश्य

वैश्विक बाज़ार के लिए सुस्थिर नारियल प्रसंस्करण रणनीतियों पर संगोष्ठी

सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, तिरुवनंतपुरम ने इंटरनेशनल कोकनट कम्यूनिटी और नारियल विकास बोर्ड के सहयोग से विश्व नारियल दिवस के सिलसिले में 12 सितंबर 2023 को सीएसआईआर-एनआईआईएसटी, तिरुवनंतपुरम में वैश्विक बाज़ार के लिए सुस्थिर नारियल प्रसंस्करण रणनीतियों पर संगोष्ठी आयोजित की। संगोष्ठी ने शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों, नीति निर्माताओं, केंद्रीय तथा राज्य सरकारी एजेंसियों के पदाधिकारियों, कृषि-व्यापार विशेषज्ञों, किसान समूहों, किसान उत्पादक संगठनों, उद्यमियों एवं निर्यातकों के समवाय के लिए मंच प्रदान किया।

आईसीसी के कार्यकारी निदेशक डा. जेल्फीना सी. अलोव ने इस अवसर पर भाषण देते हुए नारियल उद्योग को सुस्थिर बनाए रखने के लिए नारियल क्षेत्र में गुणवत्ता, स्थिरता तथा प्रतियोगीक्षमता की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। डा. अनंतरामकृष्णन, निदेशक, एनआईआईएसटी ने नारियल उत्पादन पर भूमंडलीय तापक्रम वृद्धि के प्रभाव को प्रस्तुत किया और इस के समाधान पर केंद्रित अनुसंधान एवं अध्ययन को बढ़ावा देने का आह्वान किया। डा. हनुमंते गौडा, मुख्य नारियल विकास अधिकारी, नाविबो ने भाव में उतार-चढ़ाव और प्रसंस्करण हेतु समग्र रणनीति के अभाव के कारण किसानों के सामने आनेवाली समस्याओं पर प्रकाश डाला।

आईसीसी के कार्यकारी निदेशक डा. जेल्फीना सी. अलोव भाषण देती हुई

कार्यक्रम के सिलसिले में खेती के लिए अनुसंधान एवं विकास हस्तक्षेपों, फसल प्रबंधन तथा नारियल के मूल्य वर्धन पर तकनीकी सत्र और पैनल परिचर्चाएं आयोजित किए गए। संगोष्ठी ने अनुसंधान और उद्योग को करीब लाया और उद्यमियों ने नारियल प्रसंस्करण में उद्योग द्वारा सामना किए जा रहे मुद्दों पर प्रकाश डाला जिनका एनआईआईएसटी तथा नाविबो के अधिकारियों द्वारा प्रौद्योगिकी एवं नीति के ज़रिए समाधान किया गया। संगोष्ठी का परिणाम केवल प्रौद्योगिकी और लक्ष्य उपयोक्ता के बीच का फासला कम करना ही नहीं था, बल्कि प्रौद्योगिकी, गुणवत्ता और पैकिंग की दृष्टि से नारियल उद्योग को उन्नत बनाने की रूपरेखा तैयार करना भी था।

बोर्ड में हिंदी पखवाड़ा 2023 का उद्‌घाटन कार्यक्रम संपन्न

नारियल विकास बोर्ड में हिंदी पखवाड़े का औपचारिक उद्‌घाटन 14 सितंबर 2023 को संपन्न हुआ। 14 सितंबर को अध्यक्ष महोदय की ओर से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपील जारी की गई।

बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी डा. बी. हनुमंते गौडा ने परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। अपने उद्‌घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते हमें अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करना चाहिए। उन्होंने सभी पदधारियों से अनुरोध किया कि राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने हेतु हर संभव प्रयास करें और कहा कि हिंदी पखवाड़े के सिलसिले में आयोजित सारी प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लें।

बोर्ड के सचिव श्री आर.मधु ने आशीर्वचन भाषण दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी इतनी सरल भाषा है कि सारे लोग इसे आसानी से समझ सकते हैं। केंद्र सरकारी कर्मचारी की हैसियत से हमें पूरे लगन के साथ हिंदी में काम करना चाहिए। उन्होंने कहा कि बोर्ड में राजभाषा कार्यान्वयन ज़ोरों से चल रहा है और हमें इसमें और गति लानी चाहिए।

बोर्ड के मुख्य नारियल विकास अधिकारी डा. बी. हनुमंते गौडा परंपरागत दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए

उद्‌घाटन सत्र में श्रीमती विंदु बिजोय प्रभाकरन, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने सभा का स्वागत किया और डा. सूर्या प्रत्युष, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी ने धन्यवाद अदा किया।

इन्डकार्ब एक्टिवेटड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड ने अपने कोर्पोरेट कार्यालय का उद्‌घाटन किया

श्रीमती दीप्ति नायर एस., निदेशक (विपणन), नाविबो कार्यालय का उद्‌घाटन करती हुई

इन्डकार्ब एक्टिवेटड कार्बन प्राइवेट लिमिटेड नारियल खोपड़ी आधारित सक्रियित कार्बन के विनिर्माता है और उनका नवीनतम अत्याधुनिक संयंत्र केरल के पालक्काट जिले के औद्योगिक क्षेत्र कंजिक्कोट में स्थित है। उन्होंने 27 जुलाई 2023 को अपने कार्पोरेट कार्यालय का औपचारिक लोकार्पण किया। श्रीमती दीप्ति नायर एस., निदेशक (विपणन), नारियल विकास बोर्ड ने कार्पोरेट कार्यालय का उद्‌घाटन विभिन्न सरकारी विभागों एवं वित्तीय संस्थानों के अधिकारियों की समुपस्थिति में किया।

कंपनी ने मार्च 2021 में अपना व्यावसायिक उत्पादन शुरू किया और यह भारत में आधुनिक, स्वचालित सक्रियित कार्बन संयंत्रों में से एक है। इस अवसर पर सर्वश्री इन्डकार्ब ने मूल्य वर्धित सक्रियित कार्बन उत्पादों के साथ कारोबार का विस्तार करने की अपनी भविष्य योजना भी घोषित की।

हाल ही में कंपनी को कंजिक्कोट इंडस्ट्रीस फोरम (केआईएफ) द्वारा सर्वोत्तम विनिर्माता स्टार्टअप इकाई का पुरस्कार प्रदान किया गया। यह इकाई आईएसओ प्रमाणित है और वन स्टार एक्पोर्ट हाउस है।

बाज़ार समीक्षा

जून 2023

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जून 2023 के दौरान कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में प्रति क्विंटल 13050 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 14000 रुपए पर खुला।

कोची और आलप्पुष़ा बाज़ारों में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 450 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 12600 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 200 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 13800 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 10667 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 534 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 10133 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 8200 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 8150 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 8000 रुपए पर खुला।

पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 350 रुपए, आलप्पुष़ा बाजार में प्रति क्विंटल 500 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ारों में प्रति क्विंटल 50 रुपए की शुद्ध हानि के साथ क्रमशः प्रति क्विंटल 7850 रुपए, 7650 रुपए और 7950 रुपए पर बंद हुआ। महीने के दौरान भाव में घटाव का रुख रहा।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति क्विंटल 7500 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 7100 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8350 रुपए पर खुला और महीने के दौरान मिश्रित रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 50 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 8300 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8600 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 7600 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 14000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 21000 रुपए पर खुला और प्रति टन 2000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 19000 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर ही स्थिर रहा।

कर्नाटक के मेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 25000 रुपए पर खुला और प्रति टन 3000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 22000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

महीने के दौरान नारियल तेल के अंतर्राष्ट्रीय भाव में घटाव का रुख रहा। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका, और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

जुलाई 2023

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव जुलाई 2023 के दौरान कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 12500 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 12600 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 13800 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 700 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 13200 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 13100 रुपए पर और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 14200 रुपए पर बंद हुआ और महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाता है।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 10067 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 1400 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 11467 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 7800 रुपए, आलप्पुषा बाज़ार में प्रति क्विंटल 7650 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 7900 रुपए पर खुला।

पेषण खोपरे का भाव कोची और आलप्पुषा बाजारों में प्रति क्विंटल 700 रुपए और कोषिक्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 800 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 8500 रुपए, 8350 रुपए और 8700 रुपए पर बंद हुआ और यह महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाता है।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति क्विंटल 7025 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 975 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ 8000 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 8000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान बढ़ाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 1100 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 9100 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 7700 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 1500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति क्विंटल 9200 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषिक्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 14000 रुपए पर खुला और प्रति हज़ार फल 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर बंद हुआ।

तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 19000 रुपए पर खुला और प्रति टन 3500 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 22500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान उसी भाव पर लगभग स्थिर रहा।

कर्नाटक के मेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 22000 रुपए पर खुला और प्रति टन 10000 रुपए के शुद्ध लाभ के साथ प्रति टन 32000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल तेल

विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय/देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका, और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

अगस्त 2023

नारियल तेल

नारियल तेल का भाव अगस्त 2023 के दौरान कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 13200 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 13500 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 14200 रुपए पर खुला।

कोची बाज़ार में नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 200 रुपए और आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 500 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 13000 रुपए पर बंद हुआ। कोषि़क्कोट बाज़ार में भाव बिना कोई घाटे के 14200 रुपए पर ही बंद हुआ। महीने के दौरान नारियल के भाव में घटाव का रुख दर्शित हुआ।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में महीने के दौरान नारियल तेल का भाव प्रति क्विंटल 11600 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 467 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 11133 रुपए पर बंद हुआ।

पेषण खोपरा

महीने के दौरान पेषण खोपरे का भाव कोची बाज़ार में प्रति क्विंटल 8500 रुपए, आलप्पुष़ा बाज़ार में प्रति क्विंटल 8450 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 8750 रुपए पर खुला।

पेषण खोपरे का भाव कोची और आलप्पुष़ा बाजारों में प्रति क्विंटल 150 रुपए और कोषि़क्कोट बाज़ार में प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल क्रमशः 8350 रुपए, 8300 रुपए और 8650 रुपए पर बंद हुआ और यह महीने के दौरान घटाव का रुख दर्शाता है।

तमिलनाडु के कंगयम बाज़ार में पेषण खोपरे का भाव महीने के दौरान प्रति क्विंटल 8050 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 300 रुपए की शुद्ध हानि के साथ 7750 रुपए पर बंद हुआ।

खाद्य खोपरा

महीने के दौरान कोषि़क्कोट बाज़ार में राजापुर खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9100 रुपए पर खुला और महीने के दौरान घटाव का रुख दर्शाकर प्रति क्विंटल 100 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 9000 रुपए पर बंद हुआ।

गोल खोपरा

तिप्तुर बाज़ार में गोल खोपरे का भाव प्रति क्विंटल 9000 रुपए पर खुला और प्रति क्विंटल 400 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति क्विंटल 8600 रुपए पर बंद हुआ।

सूखा नारियल

महीने के दौरान कोषि़क्कोट बाज़ार में सूखा नारियल का भाव प्रति क्विंटल 9500 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

नारियल

महीने के दौरान केरल के नेटुमंगाट बाज़ार में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 13000 रुपए पर खुला और उसी भाव पर बंद हुआ।

महीने के दौरान तमिलनाडु के पोल्लाच्ची बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 22500 रुपए पर खुला और प्रति टन 1000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 21500 रुपए पर बंद हुआ।

महीने के दौरान कर्नाटक के बेंगलूर में नारियल का भाव प्रति हज़ार फल 20000 रुपए पर खुला और महीने के दौरान लगभग उसी भाव पर स्थिर रहा।

कर्नाटक के मेंगलूर बाज़ार में नारियल का भाव प्रति टन 32000 रुपए पर खुला और प्रति टन 4000 रुपए की शुद्ध हानि के साथ प्रति टन 28000 रुपए पर बंद हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय भाव

नारियल

फिलीपीन्स, इंडोनेशिया, श्रीलंका और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में नारियल का भाव सारणी में दर्शित है।

नारियल तेल

महीने के दौरान नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव में घटाव का रुख दर्शित है। विविध अंतर्राष्ट्रीय/देशीय बाज़ारों में नारियल तेल का अंतर्राष्ट्रीय एवं देशीय भाव सारणी में दर्शित है।

खोपरा

फिलीपीन्स, श्रीलंका, इंडोनेशिया और भारत के विविध देशीय बाज़ारों में खोपरे का भाव सारणी में दर्शाया गया है।

बाज़ार भाव-देशीय

जून 2023

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोषि़ क्कोट	तिप्तूर	कोषि़ क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल[3] (1 टन)
01.06.2023	13050	13050	14000	10667	8200	8150	8000	7500	8350	8600	9500	14000	21000	20000	25000
03.06.2023	13050	13050	14000	10667	8200	8150	8000	7530	8350	8603	9500	14000	20500	20000	25000
10.06.2023	12900	13000	14100	10467	8000	7950	8100	7400	8450	8800	9500	14000	20500	20000	24000
17.06.2023	12700	12700	13800	10333	7800	7750	7900	7300	8300	8000	9500	14000	19500	20000	24000
24.06.2023	12700	12700	13800	10267	7900	7750	7950	7275	8400	8100	9500	14000	19500	20000	24000
30.06.2023	12600	12600	13800	10133	7850	7650	7950	7100	8300	7600	9500	14000	19000	20000	22000

जुलाई 2023

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोषि़ क्कोट	तिप्तूर	कोषि़ क्कोट	नेटुमंगाट	पोल्लाच्ची	बैंगलूर	मैंगलूर काला नारियल[3] (1 टन)
01.07.2023	12500	12600	13800	10067	7800	7650	7900	7025	8000	7700	9500	14000	19000	20000	22000
08.07.2023	12500	12500	13500	10133	7800	7550	7800	7050	7900	8000	9500	14000	19000	20000	20000
15.07.2023	12600	12600	13500	10400	7900	7650	7900	7275	8300	8900	9500	13000	19500	20000	24000
22.07.2023	12900	12900	13800	10933	8200	7950	8300	7650	8400	8400	9500	13000	21500	20000	30000
29.07.2023	13100	13000	14000	11275	8400	8250	8550	7900	9000	9800	9500	13000	22000	20000	32000
31.07.2023	13200	13100	14200	11467	8500	8350	8700	8000	9100	9200	9500	13000	22500	20000	32000

अगस्त 2023

तारीख	नारियल तेल				पेषण खोपरा				खाद्य खोपरा	गोल खोपरा	सूखा नारियल	आंशिक रूप से छिले नारियल			
	(रु. / क्वि.)											(रु./1000 फल)			
	कोची	आलप्पुष़ा	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोची (एफएक्यू)	आलप्पुष़ा (राशि खोपरा)	कोषि़ क्कोट	कंगयम	कोषि़ क्कोट	तिप्तूर	कोषि़ क्कोट	नेटुमंगाट[1]	पोल्लाच्ची[2]	बैंगलूर[3]	मैंगलूर काला नारियल[3] (1 टन)
01.08.2023	13200	13500	14200	11600	8500	8450	8750	8050	9100	9000	9500	13000	22500	20000	32000
05.08.2023	13200	13500	14300	11400	8500	8450	8800	7900	9300	9000	9500	13000	23000	20000	29000
12.08.2023	13100	13000	14300	11333	8450	8350	8750	7750	9200	9400	9500	13000	22500	20000	26000
19.08.2023	13000	13000	14200	11067	8350	8300	8700	7700	9200	8800	9500	13000	21500	20000	28000
26.08.2023	13000	13000	14200	11133	8350	8300	8700	7750	9000	8900	9500	13000	21500	20000	28000
31.08.2023	13000	13000	14200	11133	8350	8300	8650	7750	9000	8600	9500	13000	21500	20000	28000

[1]. *(स्रोत: ईपेपर, केरला कौमुदी)* [2]. *(स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)* [3]. *(स्रोत: स्टार मार्केट बुलेटिन)*

बाज़ार भाव-अंतर्राष्ट्रीय

जून 2023

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
03.06.2023	130	140	249	250	1013	1080	रि.प्रा.न.	2258	1300	617	595	1197	918
10.06.2023	130	141	232	250	975	1073	रि.प्रा.न.	2097	1276	619	600	1182	902
17.06.2023	128	141	215	238	985	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	2097	1260	621	594	1100	890
24.06.2023	129	140	204	238	999	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1964	1251	624	590	1039	887

जुलाई 2023

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
01.07.2023	120	140	199	231	1000	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1964	1224	627	592	1120	854
08.07.2023	121	139	189	231	1050	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1790	1232	636	582	1055	857
15.07.2023	120	147	196	237	1060	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1833	1265	643	588	987	885
22.07.2023	121	146	207	261	1056	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1753	1329	649	595	938	930
29.07.2023	122	140	208	268	1070	रि.प्रा.न.	रि.प्रा.न.	1776	1371	654	601	1002	961

अगस्त 2023

तारीख	छिले पानी युक्त नारियल (यूएस $/ मे.ट.)				नारियल तेल (यूएस $/ मे.ट.)					खोपरा (यूएस $/ मे.ट.)			
	देशीय				अंतर्राष्ट्रीय	देशीय							
	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*	फिलीपीन्स	इंडोनेशिया	श्रीलंका	भारत*
05.08.2023	126	132	200	278	1102	1174	रि.प्रा.न.	1963	1379	648	605	1052	956
12.08.2023	124	138	195	272	1105	1148	रि.प्रा.न.	1838	1371	637	616	950	937
19.08.2023	122	137	190	260	1113	1120	रि.प्रा.न.	1748	1339	631	617	959	931
26.08.2023	123	144	188	260	1090	1107	रि.प्रा.न.	1582	1347	633	627	895	937

** भारत : नारियल तेल - कंगयम बाज़ार, खोपरा - कंगयम बाज़ार, नारियल - पोल्लाच्ची बाज़ार*

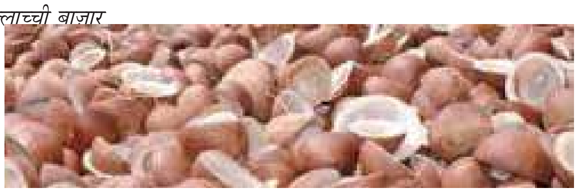

नारियल विकास बोर्ड के कार्यालय

मुख्यालय

डा. प्रभात कुमार
मुख्य कार्यपालक अधिकारी : 0484 2375216
डा. बी.हनुमंते गौडा
मुख्य नारियल विकास अधिकारी : 0484 2375999
आर. मधु
सचिव : 0484 2377737

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
पो.बो.सं. 1021, केरा भवन, कोची - 682 011,
केरल, भारत
कार्यालय ईपीएबीएक्स: 2376265, 2376553,
2377266, 2377267

ग्राम्स : KERABOARD
फैक्स : 91 484 2377902
ई-मेल : kochi.cdb@gov.in
वेबसाइट : www.coconutboard.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय

कर्नाटक
जयनाथ आर.
प्रभारी निदेशक,
क्षेत्रीय कार्यालय सह प्रौद्योगिकी केन्द्र
नारियल विकास बोर्ड, हूलिमावु,
बन्नेरघट्टा रोड, बंगलुरु - 560076.
दू.भा. : 080-26593750, 26593743
फैक्स : 080-26594768
ई-मेल : ro-bnglr@coconutboard.gov.in

असम
डा. रजतकुमार पाल
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, उत्तर पूर्वी राज्य
कार्यालय/ प्रशिक्षण/प्रौद्योगिकी केन्द्र,
हाउसफेड काम्प्लेक्स, (छठा तल),
वायरलेस बसिष्ठा रोड, लास्ट गेट,
दिसपुर, गुवाहटी -781 006
दू.भा. : (0361) 2220632 फैक्स : 0361-2229794
ई-मेल : ro-guwahati@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु
इ. अरवाड़ी
प्रभारी निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय,
नारियल विकास बोर्ड
सं 47, एफ-1,डा. रामस्वामी शालइ,
के.के. नगर,
चेन्नई-600 078
दूर भाष 044- 23662684, 23663685
ई-मेल : ro-chennai@coconutboard.gov.in,

बिहार
राजीव भूषण प्रसाद
निदेशक,
किसान प्रशिक्षण केंद्र सह क्षेत्रीय कार्यालय
नारियल विकास बोर्ड, बीएमपी तालाब के
सामने, जगदेवपथ, फुलवारी रोड़, डाक-बिहार
पशु चिकित्सा महाविद्यालय (बी.वी.सी.),
पटना-800014, दू.भा. : (0612) 2972020
फैक्स : 0612- 2972020
ई-मेल: ro-patna@coconutboard.gov.in

राज्य केन्द्र

अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह
उप निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
मुख्य डाक कार्यालय के पास,
हाउस एम बी सं. 54, गुरुद्वारा लेइन,
पोर्ट ब्लेयर-744 101, दक्षिण अन्डमान
अन्डमान व निकोबार द्वीप समूह, दू.भा. : (03192)-233918
ई-मेल : sc-andaman@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
फ्लैट नं - 203, दूसरा तल,
यूकालिप्टस बिल्डिंग,
घोडबंदर रोड, ठाणे (वेस्ट)-400 610, महाराष्ट्र
दू.भा. : 022-65100106
ई-मेल : sc-thane@coconutboard.gov.in

ओड़िशा
डा. अमेय देबनाथ
उप निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड
पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक
खुरदा जिला - 752 055, ओडिशा
दू.भा. : 8280067723
ई-मेल : sc-pitapalli@coconutboard.gov.in

आंध्र प्रदेश
सहायक निदेशक, राज्य केन्द्र, नारियल विकास बोर्ड, डो.नं. 4-123, राजुला बाज़ार
रामवरप्पडु डाक, जिला परिषद हाइ स्कूल के पास
विजयवाड़ा-521108, एन.टी.आर. जिला, आंध्र प्रदेश
टेलीफैक्स नं. 0866-2972723
ई-मेल: sc-vijayawada@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल
उप निदेशक, राज्य केन्द्र,
नारियल विकास बोर्ड, डी.ए.-94 -सेक्टर-1
साल्ट लेक, कोलकात्ता - 700 064
दू.भा. : (033) 23599674, फैक्स : 91 33-23599674
ई-मेल : sc-kolkata@coconutboard.gov.in

गुजरात
राज्य केंद्र, जूनागढ़,
बी-विंग, पहला तल, बहुमाली भवन,
राज्य हाईवे 31, दुर्वेश नगर, शशिकुंज,
जूनागढ़, गुजरात - 362001 दूरभाष: 02852990230
ई-मेल : sc-junagadh@coconutboard.gov.in

बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र, दिल्ली
सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड
बाज़ार विकास सह सूचना केन्द्र,120,
हरगोबिन्द एनक्लेव, दिल्ली- 110 092,
दू.भा.: 011-22377805, फैक्स : 011-22377806
ई-मेल : mdic-delhi@coconutboard.gov.in

क्षेत्र कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
क्षेत्र कार्यालय, नारियल विकास बोर्ड,
एग्रिकल्चरल अर्बन हॉलसेल मार्कट (वॅर्ल्ड मार्कट)
आनयरा पी.ओ., तिरुवनंतपुरम - 695 029
दूरभाष, फैक्स : 0471-2741006,
ई-मेल : fo-tvprm@coconutboard.gov.in

सी आई टी, आलुवा
उप निदेशक (प्रौद्योगिकी विकास एवं उद्यमिता)
नारियल विकास बोर्ड, प्रौद्योगिकी विकास केन्द्र,
कीनपुरम, दक्षिण वाष़क्कुलम, आलुवा पिन-683105,
दूरभाष: 0484 2679680,
ई-मेल : cit-aluva@coconutboard.gov.in

प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म

आंध्र प्रदेश: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, वेगिवाडा (गाँव) मकान संख्या 688, तडिकलापुडी (द्वारा), पश्चिम गोदावरी (जिला), आंध्र प्रदेश - 534 452, दू.भा. : 83318 69886, ई-मेल : f-vegiwada@coconutboard.gov.in

असम: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म नारियल विकास बोर्ड, अभयपुरी, बोंगेगांव, असम - 783 384
दू.भा. : 9957694242, ई-मेल : f-abhayapuri@coconutboard.gov.in

बिहार: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, सिंहेश्वर (डाक), मधेपुरा जिला, बिहार - 852 128
दू.भा. : (06476) 283015., मोबाइल : 94991920275 ई-मेल : f-madhepura@coconutboard.gov.in

पश्चिम बंगाल: सहायक निदेशक, नारियल विकास बोर्ड, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, फुलिया, एसबीआई फुलिया शाखा के पास, एनएच-34, बेलेमठ डाक, नादिया, पश्चिम बंगाल- 741 402, दू.भा. : 03473 234002, ई-मेल : f-fulia@coconutboard.gov.in

कर्नाटक: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पुरा गाँव, लोकसारा (डाक), मंड्या जिला, कर्नाटक- 571478
दू.भा.: (08232) 298015, ई-मेल :f-mandya@coconutboard.gov.in

केरल: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, नेर्यमंगलम, पिन - 686 693
दू.भा. : (0485) 2554240, ई-मेल : f-neriamangalam@coconutboard.gov.in

छत्तीसगढ़: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, कोंडागाँव - 494 226, बस्तर जिला
दू.भा. : (07786) 242443, फैक्स : (07786) 242443, ई-मेल : f-kondagaon@coconutboard.gov.in

ओड़िशा: सहायक निदेशक, प्रदर्शन-सह-बीज उत्पादन फार्म, नारियल विकास बोर्ड, पित्तापल्ली, कुमरबस्ता डाक, खुरदा जिला - 752055
दू.भा. : 8280067723, ई-मेल : f-pitapalli@coconutboard.gov.in

महाराष्ट्र: सहायक निदेशक , नारियल विकास बोर्ड, प्रबीउ फार्म, पालघर, दापोली गाँव, सातपाटी डाक, पालघर-401405, महाराष्ट्र
मोबाइल : 07767 948448, 77769 40774 ई-मेल : f-palghar@coconutboard.gov.in

तमिलनाडु: सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, धली, तिरुमूर्ति नगर डाक, उदुमलपेट, तमिलनाडु-642112
दू.भा.: 04252 265430, ई-मेल: f-dhali@coconutboard.gov.in

त्रिपुरा: सहायक निदेशक, प्रबीउ फार्म, नारियल विकास बोर्ड, हिच्चाचरा, सकबारी डाक, जोलाइबारी (मार्ग), सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा, त्रिपुरा-799141
दू.भा.: 038 23263059, ईमेल: f-hitchachara@coconutboard.gov.in

Regd/7-19817/89
भाग XXXIV, संख्याः 2

भारतीय नारियल पत्रिका

जुलाई - सितंबर 2023
मूल्य : 10 रु.

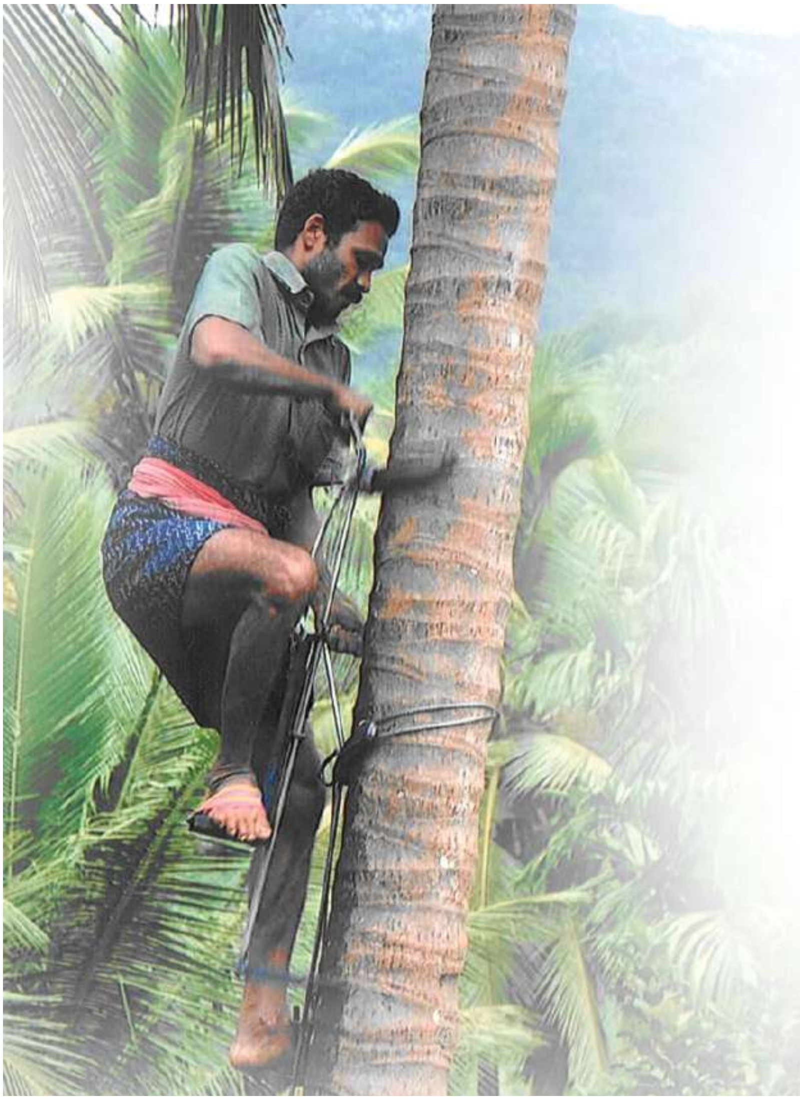

आगे की सोचें..
संरक्षित और सुरक्षित रहें

बीमित राशि
5 लाख रुपए

94 रुपए की नाममात्र
वार्षिक प्रीमियम के लिए

बीमा सुरक्षा

- चिकित्सा खर्च में राहत
- दुर्घटना के कारण बेरोज़गारी
- दिव्यांगता
- मृत्यु

के लिए

कौन शामिल हो सकते हैं ?

कोई भी व्यक्ति जो नारियल ताड़ारोहण/ तुड़ाई/ नीरा तकनीशियन के पेशे में लगा हुआ हो

आयु 18-65

आवेदन पत्र के लिए नाविबो की वेबसाइट
https://www.coconutboard.gov.in
देखें/ निकटस्थ कृषि विज्ञान केंद्र से संपर्क करें

आइए....
केरा सुरक्षा बीमा योजना
में शामिल हो जाएं

दि न्यू इंडिया एश्योरन्स कंपनी लिमिटेड के सहयोग से नारियल विकास बोर्ड की पहल

नारियल ताड़ारोहकों और तुड़ाईकर्ताओं
के लिए लाभप्रद दुर्घटना बीमा योजना

अधिक जानकारी के लिए
कृपया संपर्क करें:
0484 2377266 एक्स्टेंशनः 255
नारियल विकास बोर्ड, केरा भवन,
एसआरवी रोड, कोची-11

नारियल विकास बोर्ड
(कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार)
कोची, केरल, फोन: 0484-2377266, 67

Coconut Development Board
[MINISTRY OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE,
GOVERNMENT OF INDIA] KOCHI, KERALA, PH : 0484-2377266, 67